सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 184, नई दिल्ली, गुरुवार 11 सितम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सबसे कठिन काम है कार्य करने का निर्णय लेना, बाकी सब केवल दृढ़ता है...

03 मेट्रो की मनमानी से 2 महीने से भटक रहे हैं व्यापारी - परमजीत सिंह पम्मा

06 दुर्लभ पृथ्वी तत्व खनन, खनिज और सामग्री हब में ईंधन नवाचार

08 विश्व सिख चैंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा बाढ़ प्रभावित इलाकों में अरदास उपरांत डॉक्टरी सहायता कैंपों की शुरुआत

कौन है आरटीओ और डीटीओ और उनके बीच क्या है अंतर ?

संजय बाटला

क्या आरटीओ और डीटीओ गैर तकनीकी पद है? भर्ती नियम (आर.आर.), माननीय सुप्रीम कोर्ट आफ इंडिया, राजपत्र अधिसूचना सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय, माननीय कैट, माननीय उच्च न्यायालय दिल्ली एवम् कानून न्याय एवं निधि विभाग दिल्ली सरकार के दिशा निर्देश के अनुसार दोनों ही पद तकनीकी पद है। **आपकी जानकारी हेतु बता दें पर दिल्ली परिवहन आयुक्त द्वारा इन पदों पर गैर तकनीकी अधिकारियों की नियुक्ति की हुई है और उनकी सोच के अनुसार ऊपर लिखित सभी के द्वारा जारी दिशा निर्देश सही नहीं हैं और परिवहन विभाग के सभी पद खास तौर से डीटीओ गैर तकनीकी पद है।**

कानून और नियम के अनुसार यदि आपको परिवहन के कार्यालयों से संपर्क करने की आवश्यकता है - वाहन पंजीकरण, लाइसेंस या परमिट के लिए आपको आरटीओ और डीटीओ के बीच का अंतर को समझने से आपका समय बच सकता है और प्रशासनिक प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है।

हम आपकी जानकारी के लिए भारत में इन दो प्रकार के परिवहन कार्यालयों के बीच का अंतर उजागर कर रहे है

1. आरटीओ और डीटीओ क्या है?
2. आरटीओ कैसे काम करता है?
3. डीटीओ कैसे काम करता है?
4. आरटीओ और डीटीओ के बीच अंतर

आरटीओ और डीटीओ क्या है: एक अवलोकन भारत में, क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ) और जिला परिवहन कार्यालय (डीटीओ) सड़क परिवहन सेवाओं के प्रबंधन के लिए ज़िम्मेदार प्राधिकारी हैं। यह कार्यालय देश की परिवहन व्यवस्था के सुचारू संचालन को सुनिश्चित करने, वाहन पंजीकरण, लाइसेंसिंग, परमिट आदि की देखरेख में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह कार्यालय प्रशासन के विभिन्न स्तरों पर थोड़े अलग-अलग कार्य करते हैं।

आर.टी.ओ. क्या है? क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (या कुछ क्षेत्रों में क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण) एक सरकारी संगठन है जो सड़क परिवहन से संबंधित कानूनों का प्रबंधन और प्रवर्तन करता है। भारत में प्रत्येक क्षेत्र का अपना आरटीओ होता है।

आरटीओ कैसे काम करता है? मोटर वाहन अधिनियम 1988 के तहत मोटर वाहन विभाग द्वारा आरटीओ की स्थापना की जाती है। क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय के कुछ मुख्य कार्य इस प्रकार हैं।

1. ड्राइविंग लाइसेंस जारी करना: आरटीओ लर्निंग और स्थायी ड्राइविंग लाइसेंस जारी करता है। कार्यालय आवश्यकतानुसार इन परमिटों को जारी करने के लिए परीक्षण भी आयोजित करता है।

2. वाहन पंजीकरण: आरटीओ अपने संबंधित क्षेत्र में वाहनों के लिए पंजीकरण प्रमाण पत्र (आरसी) जारी करने के लिए जिम्मेदार है।

3. सड़क कर का संग्रह: आरटीओ अपने अधिकार क्षेत्र में वाहनों से सड़क कर और शुल्क एकत्र करते हैं।

4. वाहन स्वामित्व हस्तांतरण का प्रबंधन: आरटीओ वाहन स्वामित्व हस्तांतरण का प्रबंधन करते हैं। वह खोई हुई नंबर प्लेट या पंजीकरण प्रमाणपत्रों के मामलों को भी संभालते हैं।

डीटीओ क्या है? सड़क परिवहन प्रबंधन को कवर करने के लिए डीटीओ या जिला परिवहन कार्यालय भी स्थापित किया गया है। हालाँकि, ये कार्यालय जिला स्तर पर संचालित होते हैं। आरटीओ और डीटीओ के कार्य समान हैं, लेकिन उनके अधिकार क्षेत्र अलग-अलग हैं। कई क्षेत्रों में, इन शब्दों का परस्पर उपयोग किया जाता है।

डीटीओ के कार्य भारत में जिला परिवहन कार्यालयों के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं।

1. वाहनों का पंजीकरण: जिला परिवहन अधिकारी (डीटीओ) अपने जिले में नए निजी और व्यावसायिक वाहनों के पंजीकरण के प्रभारी होते हैं। यह कार्यालय इन वाहनों को अस्थायी या स्थायी पंजीकरण प्रमाणपत्र (आरसी) जारी करते हैं।

2. ड्राइविंग लाइसेंस: जिला परिवहन अधिकारी (डीटीओ) जिले में वाहन चलाने के लिए अस्थायी और स्थायी लाइसेंस भी जारी करते हैं। वह समाप्त हो चुके लाइसेंसों का नवीनीकरण करने या मौजूदा लाइसेंसों की जानकारी अपडेट करने के लिए भी ज़िम्मेदार होते हैं।

3. कर और शुल्कों का संग्रह: जिला परिवहन अधिकारी अपने जिले के वाहन मालिकों से सड़क कर और शुल्क वसूलते हैं। वह दूसरे जिलों या राज्यों में जाने वाले वाहनों के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) भी जारी करते हैं।

4. वाहन फिटनेस प्रमाणपत्र जारी करना: डीटीओ वाहनों की सड़क पर चलने की योग्यता प्रमाणित करने के लिए उनका निरीक्षण करते हैं। वह वाणिज्यिक वाहनों के लिए फिटनेस प्रमाणपत्र भी प्रदान करते हैं।

आरटीओ और डीटीओ के बीच अंतर आपने देखा होगा कि आरटीओ और डीटीओ के कार्य काफी हद तक समान हैं। हालाँकि, इन दोनों कार्यालयों में कुछ अंतर हैं। आरटीओ और डीटीओ दोनों ही परिवहन प्रशासन प्रणाली के अनिवार्य अंग हैं क्योंकि वह विभिन्न स्तरों पर सड़क परिवहन गतिविधियों की देखरेख करते हैं। आरटीओ का दायरा व्यापक है क्योंकि यह कई जिलों के कार्यों की देखरेख करता है। डीटीओ की गतिविधियाँ एक विशिष्ट जिले तक सीमित होती हैं। हालाँकि उनके कार्यों का आकार और दायरा अलग-अलग हो सकता है, लेकिन उनके संयुक्त प्रयास उस सुरक्षित और व्यवस्थित परिवहन तंत्र का संचालन करते हैं जिस पर हम प्रतिदिन निर्भर रहते हैं। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी (आरटीओ) और जिला परिवहन अधिकारी (डीटीओ) के पद आमतौर पर समान रैंक के होते हैं, क्योंकि दोनों परिवहन विभाग में वरिष्ठ अधिकारी होते हैं।

आरटीओ और एमवीआई के बीच क्या अंतर है? क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी (आरटीओ) एक वरिष्ठ अधिकारी होता है जो परिवहन विभाग के सभी कार्यों की देखरेख के लिए ज़िम्मेदार होता है। मोटर वाहन निरीक्षक (एमवीआई) वाहनों की सड़क पर चलने की योग्यता, सुरक्षा मानदंडों के अनुपालन और प्रदूषण मानकों के पालन के लिए ज़िम्मेदार होता है।

आर.टी.ओ. अधिकारी का क्या मतलब है? आरटीओ अधिकारी एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी होता है जो किसी विशिष्ट क्षेत्र में परिवहन और सड़क सुरक्षा कानूनों का प्रबंधन और प्रवर्तन करता है। इसकी ज़िम्मेदारियों में वाहन पंजीकरण, ड्राइविंग लाइसेंस जारी करना, यातायात नियमों का पालन कराना, सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करना और मोटर वाहन कर वसूलना शामिल है।

आर.टी.ओ. की शक्ति क्या है? आरटीओ अधिकारियों के पास व्यापक शक्तियां होती हैं, जिनमें वाहनों के लिए पंजीकरण प्रमाणपत्र स्वीकृत करना और जारी करना, ड्राइविंग लाइसेंस जारी करना, नवीनीकृत करना या रद्द करना; निरीक्षण करना, जुर्माना लगाना या यातायात कानूनों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करना शामिल है।

क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ), जिला परिवहन कार्यालय (डीटीओ), संचालन का क्षेत्र

आर.टी.ओ. क्षेत्रीय या राज्य स्तर पर कार्य करता है तथा बड़े क्षेत्रों को कवर करता है।

डी.टी.ओ. जिला स्तर पर कार्य करता है तथा छोटे, स्थानीय क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित करता है।

क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ), जिला परिवहन कार्यालय (डीटीओ), दायरा

आरटीओ कई जिलों या व्यापक क्षेत्र में परिवहन संबंधी गतिविधियों की देखरेख करता है।

डी.टी.ओ. एक ही जिले के भीतर परिवहन गतिविधियों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार है।

क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ), जिला परिवहन कार्यालय (डीटीओ), जिम्मेदारी

आरटीओ नीतियों को क्रियान्वित करता है तथा अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न डीटीओ के बीच समन्वय स्थापित करता है।

डीटीओ वाहन पंजीकरण, लाइसेंसिंग और परमिट जारी करने जैसी दैनिक सेवाएं संभालता है।

क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ), जिला परिवहन कार्यालय (डीटीओ), कार्य

आरटीओ अंतर-जिला और अंतर-राज्यीय परिवहन संबंधी गतिविधियों का प्रबंधन करता है और उच्च स्तरीय नीतियों को लागू करता है।

डीटीओ जिला-विशिष्ट गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करता है, जैसे लाइसेंस जारी करना और स्थानीय कर एकत्र करना।

क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ), जिला परिवहन कार्यालय (डीटीओ), पदानुक्रम:-

आरटीओ प्रशासनिक पदानुक्रम में उच्चतर होता है तथा अपने क्षेत्र के डीटीओ के कार्यों की देखरेख करता है।

डीटीओ, आरटीओ की देखरेख में काम करता है और उसके निर्देशों को स्थानीय स्तर पर क्रियान्वित करता है।

क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ), जिला परिवहन कार्यालय (डीटीओ), आज्ञा देना

आरटीओ वाणिज्यिक और यात्री वाहनों के लिए राज्य या अंतरराज्यीय परमिट जारी करता है।

डीटीओ वाहनों के लिए स्थानीय या जिला स्तर पर परमिट जारी करता है।

भारत महा ईवी रैली – विश्व की सबसे लंबी ईवी रैली का नई दिल्ली से भव्य शुभारंभ

आयोजक: इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल एसोसिएशन (IFEVA)

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली | 9 सितंबर 2025 – भारत महा ईवी रैली, जो कि विश्व की सबसे लंबी इलेक्ट्रिक व्हीकल (ईवी) रैली है, का भव्य ध्वजारोहण समारोह बीकानेर हाउस, इंडिया गेट के निकट, मंगलवार 9 सितंबर 2025 को सुबह 8:00 बजे से 9:00 बजे तक उत्साह और गरिमा के साथ संपन्न हुआ।

यह ऐतिहासिक रैली इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ इलेक्ट्रिक व्हीकल एसोसिएशन (IFEVA) द्वारा आयोजित की गई है।

IFEVA नेतृत्व द्वारा विशेष घोषणा

डॉ. शैलेन्द्र सरोज (अध्यक्ष, IFEVA) और डॉ. राजीव मिश्रा (अध्यक्ष, IFEVA) ने मीडिया को संबोधित करते हुए रैली के उद्देश्य, मिशन और राष्ट्रव्यापी प्रभाव की विस्तृत जानकारी दी।

यह रैली 100 दिनों में 21,000 किलोमीटर की दूरी तय करेगी, और भारत के सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को कवर करेगी। इसका मुख्य उद्देश्य है:

प्रदूषण मुक्त भारत का निर्माण

स्वच्छ और टिकाऊ परिवहन को बढ़ावा देना

ईवी उद्योग में रोजगार के अवसर

महिला सशक्तिकरण

दिव्यांगजनों को अवसर प्रदान करना

भारतीय स्टार्टअप्स को सहयोग देना

एक वर्ष में 1 करोड़ पेड़ लगाने का संकल्प

मुख्य अतिथि एवं विशेष अतिथि

श्री पीयूष गोयल जी, माननीय केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री, को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। वे अन्य शासकीय व्यस्तताओं के कारण उपस्थित नहीं हो सके। आयोजकों ने उनके समर्थन और शुभकामनाओं को ससम्मान स्वीकार किया।

विशिष्ट अतिथि जिन्होंने समारोह की शोभा बढ़ाई:

श्री सुधेन्दु ज्योति सिन्हा, निदेशक, नीति आयोग

श्री अभिजीत सिन्हा, कार्यक्रम निदेशक – नेशनल हाईवे फॉर ईवी (NHEV) एवं भारत महा ईवी रैली के सह-संयोजक

श्री सुधेन्दु ज्योति सिन्हा ने अपने संबोधन में कहा कि नीति आयोग और IFEVA के बीच सहयोग लगातार बढ़ रहा है, और दोनों संस्थाएं भारत की स्वच्छ ऊर्जा एवं ईवी क्रांति को गति देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

श्री अभिजीत सिन्हा ने कहा:

"भारत महा ईवी रैली के सह-संयोजक के रूप में, मैं इस 100 दिवसीय ऐतिहासिक यात्रा में पूर्ण सहयोग का आश्वासन देता हूं और IFEVA के साथ निरंतर कार्य करता रहूंगा।"

एकता और समर्पण का उत्सव

इस शुभारंभ समारोह में देशभर से अनेक क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाग लिया, जिनमें शामिल थे:

उद्योगपति एवं व्यापारी

वरिष्ठ नौकरशाह

स्वामीजी एवं आध्यात्मिक गुरु

कॉरपोरेट अधिकारी

वैदिक पुरोहित

लाफ्टर क्लब के सदस्य, जिन्होंने आयोजन में उल्लास और ऊर्जा का संचार किया

यह समारोह भारत की औद्योगिक, सामाजिक और आध्यात्मिक एकता का प्रतीक बना, जो हरित परिवहन के मिशन में एकजुट होकर आगे बढ़ रहे हैं।

रैली के बारे में

भारत महा ईवी रैली केवल एक यात्रा नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय आंदोलन है, जिसका उद्देश्य है:

इलेक्ट्रिक वाहनों को देशभर में बढ़ावा देना

भारत के ईवी इकोसिस्टम को उजागर करना

सभी भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियों में ईवी की वास्तविक क्षमता का प्रदर्शन करना

रैली के दौरान यह कारवां प्रमुख शहरों, ईवी चार्जिंग स्टेशनों और हरित कॉरिडोर्स से होते हुए गुजरेगा, और पूरे भारत में जागरूकता, संवाद और साझेदारी को बढ़ावा देगा।

दिल्ली परिवहन विभाग द्वारा डीजल के वाहनों के पंजीकरण का शुल्क अन्य राज्य से अधिक और वन टाइम रोड टैक्स 15 साल का क्यों?

संजय बाटला

वन टाइम रोड टैक्स अर्थात 15 साल (वाहन की आयु पंजीकरण से 15 वर्ष तक के लिए) का सड़क उपयोग टैक्स लेने का अर्थ विश्वास सरकार का वाहन मालिकों को की उनका वाहन भारत देश की सड़को पर पंजीकरण की तारीख से कम से कम 15 वर्षों तक कोई नहीं रोकेगा, फिर दिल्ली में डीजल वाहनों का टैक्स वन टाइम अर्थात 15 साल का लेने के बाद रोक क्यों और वाहन 15 वर्ष पूरे हुए बिना डी रजिस्टर क्यों, बड़ा सवाल?

क्या दिल्ली परिवहन आयुक्त के लिए मोटर वाहन नियम अधिनियम रुल कोई मायना नही रखते?

किस आधार पर दिल्ली में पंजीकृत डीजल वाहनों को जिन पर सिर्फ दिल्ली की सड़को पर चलने से पाबंदी लगी है को अन्य राज्यों की सड़को पर डी रजिस्टर कर के दिल्ली परिवहन विभाग चलने से रोक रहे हैं वो भी रोड टैक्स 15 साल का वसूल कर?

दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट के पूर्व में जारी आदेश के तहत डीजल वाहनों को दिल्ली की सड़को पर चलने की अनुमति मात्र 10 साल फिर भी दिल्ली परिवहन विभाग उनसे पंजीकरण शुल्क अन्य राज्य से अधिक वसूल रहा है और साथ ही उनसे वन टाइम रोड टैक्स जो 15 साल के सड़को पर चलने वाले वाहनों से लेना चाहिए वसूल रहा है आखिर क्यों?

दिल्ली सरकार द्वारा माननीय सुप्रीम कोर्ट में दायर याचिका के अनुसार दिल्ली सरकार दिल्ली में समय सीमा समाप्त कर चुके वाहनों को निरस्त करने के लिए वाहनों की आयु की जगह वाहनों द्वारा निकलने वाले प्रदूषण के आधार पर निरस्त करने की अपनी मांग बता चुकी है और उसी के तहत माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा लगी बंदिश को हटाने की मांग कर चुकी है। अब प्रश्न यह उठता हैं की भारत सरकार के सड़क परिवहन एवम् राजमार्ग मंत्रालय द्वारा डीजल वाहनों की भी आयु 15 साल निर्धारित है फिर दिल्ली में 10 साल क्यों?

दूसरा सवाल यह उठता हैं की दिल्ली में को अब तक डीजल वाहनों को सड़को पर चलने के लिए आज्ञा 10 साल तो उनसे वन टाइम रोड टैक्स के तहत 15 साल का रोड टैक्स क्यों लिया जा रहा है?

तीसरे सवाल जब भारत सरकार द्वारा डीजल वाहनों की आयु सीमा भी 15 साल तो 15 साल पूरे होने से पूर्व दिल्ली परिवहन विभाग किस आधार पर उन्हें डी रजिस्टर कर रहा है? यहां यह जानने योग्य बात है की कानून के अनुसार एक राज्य की सड़को पर चलने से लगी रोक पर आयु सीमा बचे वाहनों को दिल्ली परिवहन विभाग डी रजिस्टर कर अन्य राज्यों में चलने से किस आधार पर रोक सकता है?

कुल मिलाकर दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग दिल्ली की जनता जिन्होंने अपने लिए डीजल वाहन खरीद कर दिल्ली से पंजीकरण करवाए हैं उन्हें को गैर कानूनी तरीके से परेशान कर रहे हैं।

दिल्ली परिवहन विभाग को जनता के समक्ष इस बात का जवाब देना चाहिए की किस आधार पर सिर्फ दिल्ली की सड़को पर चलने से लगी पाबंदी पर अन्य राज्यों की सड़को पर डी रजिस्टर कर के वह चलने से रोक रहे हैं वो भी रोड टैक्स 15 साल का वसूल कर?

पंजाब में बाढ़ पीड़ितों को टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत के द्वारा अन्न मदद के अंतर्गत आज ट्रस्ट की मेंबर कावेरी जी ने 100 किलो चावल, 30 किलो दाल और 5 किलो नमक का योगदान दिया है।
ट्रस्ट उनके इस योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद करता है

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल - 0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

क्या गया में श्राद्ध के बाद भी करते हैं तर्पण, जानिए विद्वानों की राय

धर्म ग्रंथों के अनुसार श्राद्ध पक्ष में हर हिंदू धर्मावलंबी को अपने पितरों का श्राद्ध करना चाहिए। इससे वे प्रसन्न होते हैं और वंशजों को आशीर्वाद देते हैं। मान्यता है कि गयाजी में श्राद्ध के बाद पितर देवलोक गमन कर जाते हैं। इससे श्राद्ध और तर्पण पर कई तरह की बातें प्रचलित हो गईं हैं, जैसे कई लोगों का कहना है कि गया में श्राद्ध के बाद तर्पण की जरूरत नहीं होती तो आइये जानते हैं इस पर क्या कहते हैं अधिकांश पुरोहित...

धर्म ग्रंथों के अनुसार हर साल पितृ पक्ष में हिंदुओं को पितृ पक्ष में श्राद्ध जरूर करना चाहिए। लेकिन इस मान्यता के कारण कि गया में श्राद्ध करने के बाद पितर देवलोक प्रस्थान कर जाते हैं। कुछ विद्वान गया श्राद्ध को अंतिम श्राद्ध मानते हुए आगे श्राद्ध न करने का परामर्श देते हैं तो वहीं कुछ विद्वान ब्रह्मकपाली को अंतिम श्राद्ध मानते हैं। कुछ पुरोहितों के अनुसार गया श्राद्ध के बाद बदरीका क्षेत्र के 'ब्रह्मकपाली' में श्राद्ध करना चाहिए। उनका मानना है कि ब्रह्मकपाली अंतिम श्राद्ध है। यह ब्रह्मकपाली वही स्थान है जहां शिवजी के त्रिशूल के प्रहार से ब्रह्माजी का कटा सिर गिरा था। उनका कहना है कि गया श्राद्ध करने के बाद केवल पितरों के निमित्त 'धूप' छोड़ना बंद करना चाहिए। गया के बाद ब्रह्मकपाली में श्राद्ध करना चाहिए। इसी के साथ ब्रह्मकपाली में श्राद्ध करने के बाद तर्पण और ब्राह्मण भोजन की बाध्यता समाप्त हो जाती है। हालांकि शास्त्रों का स्पष्ट निर्देश है कि गया और ब्रह्मकपाली में श्राद्ध करने के बाद भी अपने पितरों के निमित्त तर्पण और ब्राह्मण भोजन अथवा आमान्न (सीधा) दान करना श्रेष्ठ है।

गया के बाद भी हर साल करना चाहिए श्राद्ध वाराणसी के पुरोहित पं. शिवम तिवारी के अनुसार श्राद्ध, श्रद्धा से पितरों के लिए किया गया कर्म है। गया में श्राद्ध के बाद पितरों को देवलोक में एक स्थान प्राप्त हो जाता है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उनके लिए किया जाने वाला कर्म बंद कर देना चाहिए। जैसे हम हर देवता के लिए पूजा पाठ करते रहते हैं, वैसे ही पितरों के लिए श्राद्ध पक्ष में पिंडदान, तर्पण, ब्राह्मण भोजन जरूर कराना चाहिए और अच्छे कर्म करने की कोई सीमा नहीं होती।

इसका रखें ख्याल कई ज्योतिषाचार्यों की मानें तो गया में श्राद्ध के बाद पूर्वजों से दूर होने से नुकसान उठाना पड़ता है। गया में श्राद्ध करने के बाद भी घर में वार्षिक तथा पितृपक्ष के दौरान श्राद्ध करना चाहिए। इस दौरान न खरीदारी करें और नहीं निषिद्ध व्यवहार करें।

गया और ब्रह्मकपाली श्राद्ध के बाद भी यह करें पंडितों का कहना है कि गया और ब्रह्मकपाली श्राद्ध के बाद भी पितृ पक्ष के दौरान सेवा कार्य करना चाहिए, जरूरतमन्दों की सहायता दान-धर्म की और रुझान रखना चाहिए। श्राद्ध पक्ष में प्रतिदिन गाय, कुत्ते, कगवास (पक्षी) अतिथि और भिक्षुक को भोजन कराएं।

स्वास्तिक क्या है, कैसे बनाया जाता है, हिंदू धर्म में स्वास्तिक का महत्त्व और इससे जुड़ी कुछ अन्य रोचक तथ्य

स्वास्तिक अत्यन्त प्राचीन काल से भारतीय संस्कृति में मंगल-प्रतीक माना जाता है। इसीलिए किसी भी शुभ कार्य को करने से पहले स्वास्तिक चिन्ह अंकित करके उसका पूजन किया जाता है।

स्वास्तिक शब्द सु अस क से बना है। 'सु' का अर्थ अच्छा, 'अस' का अर्थ 'सत्ता' या 'अस्तित्व' और 'क' का अर्थ 'कर्त्ता' या करने वाले से है। इस प्रकार 'स्वास्तिक' शब्द का अर्थ हुआ 'अच्छा' या 'मंगल' करने वाला।

स्वास्तिक कैसे बनाएं

स्वस्तिक में एक दूसरे को काटती हुई दो सीधी रेखाएँ होती हैं, जो आगे चलकर मुड़ जाती हैं। इसके बाद भी ये रेखाएँ अपने सिरों पर थोड़ी और आगे की तरफ मुड़ी होती हैं।

स्वास्तिक की यह आकृति दो प्रकार की हो सकती है।

प्रथम स्वास्तिक - जिसमें रेखाएँ आगे की ओर इंगित करती हुई हमारे दायीं ओर मुड़ती हैं। इसे 'स्वास्तिक' ( ) कहते हैं।

द्वितीय स्वास्तिक - आकृति में रेखाएँ पीछे की ओर संकेत करती हुई हमारे बायीं ओर मुड़ती हैं। इसे 'वामावर्त स्वस्तिक' ( ) कहते हैं। जर्मनी के हिटलर के ध्वज में यही 'वामावर्त स्वास्तिक' अंकित था, जिसने उसका अंत किया।

स्वास्तिक का महत्व और अन्य रोचक तथ्य

स्वास्तिक को चित्र के रूप में भी बनाया जाता है और लिखा भी जाता है जैसे ₹स्वास्ति न इन्द्रः₹ आदि। स्वास्तिक भारतीयों में सभी मांगलिक कार्यों मैं प्रयोग किया जाता है, जैसे - विवाह आदि घर के अन्दर कोई भी मांगलिक कार्य होने पर ₹ऊँ₹ और स्वास्तिक का दोनों का अथवा एक एक का प्रयोग किया जाता है।

हिन्दू समाज में किसी भी शुभ संस्कार में स्वास्तिक का अलग अलग तरीके से प्रयोग किया जाता है, बच्चे का पहली बार जब मुंडन संस्कार किया जाता है तो स्वास्तिक को बुआ के द्वारा बच्चे के सिर पर हल्दी रोली मक्खन को मिलाकर बनाया जाता है, स्वास्तिक को सिर के ऊपर बनाने का अर्थ माना जाता है कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थों का योग रूप सिर पर हमेशा प्रभावी रहे।

स्वास्तिक के अन्दर चारों भागों के अन्दर बिन्दु लगाने का मतलब होता है कि व्यक्ति का दिमाग केन्द्रित रहे, चारों तरफ़ भटके नही, वृहद रूप में स्वास्तिक की भुजा का फ़ैलाव सम्बन्धित दिशा से सम्पूर्ण ऊर्जा को एकत्रित करने के बाद बिन्दु की तरफ़ इकट्ठा करने से भी माना जाता है, स्वास्तिक

का केन्द्र जहाँ चारों भुजायें एक साथ काटती है, उसे सिर के बिलकुल बीच में चुना जाता है, बीच का स्थान बच्चे के सिर में परखने के लिये जहाँ हड्डी विहीन हिस्सा होता है और एक तरह से ब्रह्मरंध के रूप में उम्र की प्राथमिक अवस्था में उपस्थित होता है और वयस्क होने पर वह हड्डी से ढक जाता है।

स्वास्तिक संस्कृत भाषा का अव्यय पद है, पाणिनीय व्याकरण के अनुसार इसे व्याकरण कौमुदी में ५४ वें क्रम पर अव्यय पदों में गिनाया गया है। यह स्वास्तिक पद 'सु' उपसर्ग तथा 'अस्ति' अव्यय (क्रम ६१) के संयोग से बना है, इसलिये 'सु अस्ति=स्वास्तिक' इसमें 'इकोयणचि' सूत्र से उकार के स्थान में विकार हुआ है।

'स्वास्ति' में भी 'अस्ति' को अव्यय माना गया है और 'स्वास्ति' अव्यय पद का अर्थ 'कल्याण' 'मंगल' 'शुभ' आदि के रूप में प्रयोग किया जाता है। जब स्वास्ति में 'क' प्रत्यय का समावेश हो जाता है तो वह कारक का रूप धारण कर लेता है और उसे 'स्वास्तिक' का नाम दे दिया जाता है।

स्वास्तिक का चिन्ह भारत के अलावा विश्व मैं अन्य देशों में भी प्रयोग में लाया जाता है, जर्मन देश में इसे राजकीय चिन्ह से शोभायमान किया गया है, हिटलर का यह फ़ौज का निशान था, कहा जाता है कि वह इसे अपनी वर्दी पर दोनो तरफ़ बैज के रूप में प्रयोग करता था, लेकिन उसके अंत के समय भूल से वर्दी के बेज में उसे टेलर ने उल्टा लगा दिया था, जो उसके विनाश का कारण बना, जितना अर्थ सीधे स्वास्तिक का शुभ कार्यों मैं लगाया जाता है, उससे भी अधिक उल्टे स्वास्तिक का अनर्थ भी माना जाता है।

स्वास्तिक की भुजाओं का प्रयोग अन्दर की तरफ़ गोलाई में लाने पर वह सौम्य माना जाता है, बाहर की तरफ़ नुकीले हथियार के रूप में करने पर वह रक्षक के रूप में माना जाता है। काला स्वास्तिक शमशानी शक्तियों को बस में करने के लिये किया जाता है, लाल स्वास्तिक का प्रयोग शरीर की सुरक्षा के साथ भौतिक सुरक्षा के प्रति भी माना जाता है, भी स्वास्तिक का प्रयोग आदि काल से किया है, लेकिन वहां सौम्यता और दिशा निर्देश नही होता है।

केवल धन (+) का निशान ही मिलता है। पीले रंग का स्वास्तिक धर्म के मामलों में और संस्कार के मामलों में और संस्कार के मामलों में किया जाता है, विभिन्न रंगों का प्रयोग विभिन्न कारणों के लिये किया जाता स्वास्तिक के चारो और सर्वाधिक पॉजीटिव ऊर्जा पाई गई है दूसरे नंबर पर शिवलिँग है इसे वोविस नाम के वैज्ञानिक ने अपनी तकनीक से नापा इसलिये इसे वोविस एनर्जी कहते है । अधिक पाजिटिव एनर्जी की वजह से स्वास्तिक किसी भी तरह का वास्तुदोष तुरंत समाप्त कर देता है।

बुल्गारिया में 7000 वर्ष पहले इस्तेमाल होता था, आपको आश्चर्य होगा लेकिन यह सत्य है पश्चिमी बुल्गारिया के Vratsa नगर के संग्रहालय मे चल रही एक प्रदर्शनी मे 7000 वर्ष प्राचीन कुछ मिट्टी की कलाकृतियां रखी गईं हैं जिसपर स्वास्तिक ( ) का चिन्ह बना है।

Vratsa शहर के ही निकट Altimir नामक गाँव के एक धार्मिक यज्ञ कुण्ड की खुदाई के समय

प्रेम-पच्चीसा (भाग 24)

राजेन्द्र रंजन गायकवाड़
सेवानिवृत्त जेल अधीक्षक
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

रोहन के साहित्य सृजन और माया के एनजीओ की तारीफ़ समाचार पत्रों में पढ़कर स्थानीय गर्ल्स कॉलेज के प्रोफेसर डॉ मुकुल जी ने अपने कालेज की समाज-शास्त्र स्नातकोत्तर की बीस छात्राओं को आदर्श समाज स्वप्न साकार संस्था का अध्ययन करने भेजते हैं, सभी छात्राएं संस्था से के कार्यों / सकारात्मक गति - विधियों से बहुत प्रभावित होकर रोहन और माया, सुधा जी और मालती जी से अलग-अलग बात करती हैं। एक सप्ताह में संस्था भ्रमण की अपनी- अपनी अध्ययन रिपोर्ट प्रो मुकुल को प्रस्तुत करती हैं। सबसे अच्छी रिपोर्ट हनी अंसारी और प्रीत रजवाड़े की होती है। दोनों छात्राओं ने अपने मार्गदर्शक प्रोफ. साब से अनुरोध किया कि वे अपना लघु शोध एनजीओ पर प्रस्तुत करेंगी। डॉ. मुकुल जी, स्थानीय गर्ल्स कॉलेज के प्रतिष्ठित समाजशास्त्र विभाग के प्रमुख, हमेशा से ही अपने छात्राओं को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के पक्षधर रहे हैं। रोहन के साहित्यिक सृजन, जो सामाजिक न्याय और महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित थे, और माया के एनजीओ ₹आदर्श समाज स्वप्न साकार संस्था₹ की सफलता की कहानियों ने उन्हें प्रेरित किया। इस संस्था ने ग्रामीण महिलाओं को शिक्षा, कौशल विकास और आर्थिक स्वावलंबन प्रदान करके स्थानीय समुदाय में सकारात्मक परिवर्तन लाया था।

जैसे शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमः संस्था महिलाओं को सिलाई, कंप्यूटर प्रशिक्षण और उद्यमिता कौशल सिखाती है। छात्राओं ने देखा कि कैसे सुधा जी, संस्था की वरिष्ठ सदस्य, ग्रामीण महिलाओं को डिजिटल साक्षरता प्रदान कर रही हैं, जिससे वे ऑनलाइन बाजारों तक पहुंच बना रही हैं। यह भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए काम करने वाले एनजीओ जैसे सेल्फ एम्प्लॉयड विमेंस एसोसिएशन (SEWA) से प्रेरित लगता है, जो असंगठित क्षेत्र की महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करता है। छात्राओं ने 50 महिलाओं से साक्षात्कार लिए, जिसमें 70% ने बताया कि इन कार्यक्रमों से उनकी आय में 30-50% की वृद्धि हुई है।

1. सामुदायिक जागरूकता और स्वास्थ्य गतिविधियांः मालती जी के नेतृत्व में, संस्था स्वास्थ्य शिविर और जागरूकता अभियान चलाती है, जैसे कि महिला स्वास्थ्य और लिंग समानता पर। छात्राओं ने एक ऐसे शिविर में भाग लिया जहां पोषण और मानसिक स्वास्थ्य पर चर्चा हुई। यह CARE इंडिया जैसे एनजीओ की याद दिलाता है, जो महिलाओं के स्वास्थ्य और सशक्तिकरण पर काम करता है। अवलोकन से पता चला कि संस्था ने पिछले दो वर्षों में 200 से अधिक महिलाओं को स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कीं, जिससे समुदाय में मातृ मृत्यु दर में कमी आई।

2. साहित्यिक और सांस्कृतिक पहलः रोहन के साहित्यिक योगदान से प्रेरित, संस्था कहानी-सत्र और लेखन कार्यशालाएं आयोजित करती है। छात्राओं ने माया से बातचीत में जाना कि कैसे साहित्य महिलाओं को अपनी आवाज उठाने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह जगोरी जैसे एनजीओ की तरह है, जो लिंग-आधारित हिंसा के खिलाफ काम करता है और महिलाओं को सशक्त बनात छात्राओं ने रोहन, माया, सुधा जी और मालती जी से अलग-अलग साक्षात्कार लिए। रोहन ने बताया कि उनका साहित्य सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है, जबकि माया ने एनजीओ की चुनौतियों जैसे फंडिंग और सामाजिक प्रतिरोध पर चर्चा की। सभी छात्राएं इन गतिविधियों से इतनी प्रभावित हुईं कि उन्होंने संस्था की सकारात्मक ऊर्जा को ₹समाजशास्त्रीय परिवर्तन का जीवंत उदाहरण₹ कहा।

हनी अंसारी की रिपोर्टः हनी ने एनजीओ की गतिविधियों को समाजशास्त्रीय सिद्धांतों से जोड़ा, जैसे कि पियरे बोर्द्यू का ₹सांस्कृतिक पूंजी₹ अवधारणा। उन्होंने दिखाया कि कैसे संस्था महिलाओं की सांस्कृतिक पूंजी बढ़ाकर सामाजिक गतिशीलता प्रदान करती है। रिपोर्ट में 15 महिलाओं के केस स्टडी शामिल थे, जो गुणात्मक शोध पर आधारित थे। हनी ने भारत में लड़कियों की शिक्षा पर काम करने वाले एनजीओ जैसे मिलान फाउंडेशन का उल्लेख किया, जहां समान कार्यक्रमों से ड्रॉपआउट दर में 20% कमी आई है।

* प्रीत रजवाड़े की रिपोर्टः प्रीत ने मात्रात्मक दृष्टिकोण अपनाया, जिसमें सर्वे डेटा से पता चला कि संस्था में शामिल महिलाओं की आत्मविश्वास स्तर में 40% सुधार हुआ। उन्होंने आर्थिक सशक्तिकरण पर फोकस किया, SEWA जैसे मॉडल की तुलना की, और सुझाव दिया कि संस्था को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़कर और विस्तार किया जा सकता है।

रिपोर्ट प्रस्तुति के बाद, हनी और प्रीत ने प्रो. मुकुल सर से अनुरोध किया कि वे अपना लघु शोध एनजीओ पर प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करने का कष्ट करें। प्रोफेसर साब ने विधिवत विभागीय अनुमति प्रदान कर उन्हें एक माह का समय दिया। उनका शोध ₹एनजीओ के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरणः एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण₹ पर केंद्रित होगा। इसमें वे संस्था की सफलताओं को विस्तार से जांचेंगी, जिसमें तुलनात्मक अध्ययन शामिल होगा—जैसे कि गुड़िया- इंडिया या इंटरनेशनल फाउंडेशन फॉर क्राइम प्रिवेंशन एंड विक्टिम केयर के साथ, जो महिलाओं को कानूनी सहायता प्रदान करते हैं। शोध में क्षेत्रीय सर्वे, साक्षात्कार और डेटा विश्लेषण शामिल होगा, जो कॉलेज के सेमिनार में प्रस्तुत किया जाएगा।

यह अध्ययन न केवल छात्राओं के लिए सीखने का माध्यम बना, बल्कि संस्था को और मजबूत करने में योगदान देगा, साबित करते हुए कि शोध और व्यावहारिक कार्य का संयोजन समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।### आदर्श समाज स्वप्न साकार संस्थाः एक शोध-उन्मुख विस्तारित कथा स्थानीय गर्ल्स कॉलेज के समाजशास्त्र विभाग में प्रोफेसर डॉ. मुकुल जी एक प्रतिष्ठित शिक्षक थे, जिन्होंने अपने करियर के दौरान कई फील्ड स्टडीज आयोजित की थीं। रोहन के साहित्यिक सृजन—जिसमें महिला सशक्तिकरण पर केंद्रित कविताएं, कहानियां और नाटक शामिल थे—और माया के एनजीओ ₹आदर्श समाज स्वप्न साकार संस्था₹ की प्रशंसा सुनकर, डॉ. मुकुल ने फैसला किया कि यह उनके स्नातकोत्तर छात्राओं के लिए एक आदर्श केस स्टडी होगी।

संस्था ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वास्थ्य और स्थायी आजीविका पर केंद्रित थी, जो भारत में कई प्रमुख एनजीओ जैसे SEWA (Self-Employed Women's Association) और मुस्कान -संस्था की गतिविधियों से प्रेरित लगती थी, जहां महिलाओं को स्किल ट्रेनिंग और माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाया जाता है।

हनी और प्रीत दोनों छात्राएं विभागीय अनुमति लेकर संस्था पहुंचीं, जहां उन्हें माया ने प्यार से बैठाया और सामान्य चर्चा के बाद माया ने एनजीओ के उद्देश्य, कार्यकारिणी के पदाधिकारियों की जानकारी के साथ विगत वर्षों का आय – व्यय के साथ फ़र्रिस एण्ड सोसाइटी ऐक्ट की जानकारी दी ग्रामीण महिलाओं को साक्षरता कार्यक्रम, स्वास्थ्य जागरूकता वर्कशॉप और स्किल डेवलपमेंट ट्रेनिंग प्रदान करता था, जो भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण पर काम करने वाले एनजीओ जैसे Gram Vikas Trust और Kriti की तरह था। यहां की प्रमुख गतिविधियां शामिल थीं:

सकारात्मक गतिविधियां (Positive Activities): महिलाओं को सिलाई, कढ़ाई और हैंडीक्राफ्ट की ट्रेनिंग दी जाती थी, जिससे वे घरेलू उत्पाद बनाकर बाजार में बेच सकें। यह Azad Foundation की ₹Women on Wheels₹ जैसी पहलों से मिलता-जुलता था, जहां महिलाओं को व्यावसायिक स्किल्स सिखाकर आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की जाती है। छात्राएं ने ऑब्जर्व किया कि इन ट्रेनिंग सेशन्स में 50 से अधिक महिलाएं भाग लेती थीं, और कई ने अपनी आमदनी में 30-50% की वृद्धि दर्ज की थी।

* क्रियाकलाप (Creative Activities): रोहन के नेतृत्व में साहित्यिक वर्कशॉप चलाए जाते थे, जहां महिलाएं अपनी कहानियां लिखतीं और साझा करतीं। यह "स्नेही संस्था" जैसी एनजीओ की एजुकेशनल इनीशिएटिव्स से प्रेरित था, जो महिलाओं को साक्षरता और क्रिएटिव एक्सप्रेशन के माध्यम से सशक्त बनाती हैं। छात्राएं ने नोट किया कि इन सेशन्स से महिलाओं में आत्मविश्वास बढ़ता था, और कई ने अपनी घरेलू हिंसा की कहानियां साझा कीं, जो सामाजिक परिवर्तन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।

दोनों छात्राएं ने रोहन, माया, सुधा जी (संस्था की स्वास्थ्य विशेषज्ञ) और मालती जी (स्किल ट्रेनर) से अलग-अलग इंटरव्यू लिए। रोहन ने बताया कि उनका साहित्य सृजन महिलाओं की आवाज को मजबूत करने पर केंद्रित है, जबकि माया ने एनजीओ की स्थापना की कहानी साझा की—कैसे उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा और स्वास्थ्य पर फोकस किया, जैसा कि उधामिता i जैसी एनजीओ करती हैं। सुधा जी ने स्वास्थ्य जागरूकता पर बात की, जिसमें मातृत्व स्वास्थ्य और स्वच्छता शामिल थे, और मालती जी ने ट्रेनिंग के प्रभाव पर डेटा शेयर कियाः पिछले वर्ष 200 महिलाओं ने ट्रेनिंग ली, जिनमें से 70% ने अपना छोटा व्यवसाय शुरू किया। छात्राएं इन इंटरव्यूज से प्रभावित हुईं, क्योंकि ये क्वालिटेटिव डेटा कलेक्शन के हिस्से थे, जैसा कि एनजीओ स्टडीज में रिकमेंडेड है।

निर्धारित समय सीमा में छात्राएं ने अपनी रिपोर्ट्स प्रोफेसर मुकुल को सौंपीं। रिपोर्ट्स में फील्ड नोट्स, इंटरव्यू ट्रांसक्रिप्ट्स और एनालिसिस शामिल थे। अधिकांश रिपोर्ट्स ने संस्था की प्रभावशीलता पर फोकस किया, जैसे कि महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार। उदाहरण के लिए, एक रिपोर्ट में लिखा गयाः ₹एनजीओ की गतिविधियां सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को तेज करती हैं, जैसा कि कई भारतीय एनजीओ स्टडीज में देखा गया है, जहां ट्रेनिंग से महिलाओं की आय बढ़ती है और सामुदायिक भागीदारी मजबूत होती है।₹ घोषित हो चुका था कि सबसे उत्कृष्ट रिपोर्ट्स हनी अंसारी और प्रीत रजवाड़े की थीं। हनी की रिपोर्ट एक केस स्टडी फॉर्मेट में थी, जिसमें संस्था की 10 महिलाओं के इंटरव्यूज शामिल थे। उसने मेथडोलॉजी का वर्णन कियाः ₹पार्टिसिपेंट ऑब्जर्वेशन और सेमी-स्ट्रक्चर्ड इंटरव्यूज का उपयोग किया गया, जो सोशियोलॉजिकल फील्ड रिसर्च में स्टैंडर्ड है।

रिपोर्ट में डेटा दिखाया गया कि संस्था ने महिलाओं की साक्षरता दर को 40% बढ़ाया, और आर्थिक सशक्तिकरण से घरेलू निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ी। प्रीत की रिपोर्ट अधिक एनालिटिकल थी, जिसमें संस्था की चुनौतियां जैसे फंडिंग की कमी और ग्रामीण पहुंच—पर चर्चा की गई, जो कई एनजीओ स्टडीज में हाइलाइट की जाती हैं। उसने तुलनात्मक विश्लेषण किया, जैसे कि मुस्कान- संस्था की तरह, जहां स्वास्थ्य और शिक्षा को एकीकृत किया जाता है।

रिपोर्ट्स पढ़कर डॉ. मुकुल बहुत प्रभावित हुए। हनी और प्रीत ने अनुरोध किया कि वे संस्था पर ही मास्टर डिग्री के बाद शोध (पीएचडी) प्रस्तुत कर सकती हैं, जो 3-6 साल में की अवधि हो सकता है। यह शोध एनजीओ की दीर्घकालिक प्रभावशीलता पर फोकस करेगा, जिसमें क्वांटिटेटिव डेटा (जैसे सर्वे) और क्वालिटेटिव एनालिसिस शामिल होंगे—जैसा कि ट्रांसनेशनल एनजीओ स्टडीज में किया जाता है। डॉ. मुकुल ने सहमति दी, और कहा कि यह उनके विभाग की रिसर्च आउटपुट को मजबूत करेगा। इस प्रकार, रोहन और माया की संस्था न केवल सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनी, बल्कि युवा शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा का स्रोत भी।

आदर्श समाज संस्था का भ्रमण कर की छात्राओं ने अनुभव किया कि कितने प्रेम, सहयोग और सोहार्दयता पूर्ण तरीके से उन्हें संस्था की जानकारी / अध्ययन करने दिया। कोई किसी की बुराई नहीं करता सब मिल जुल कर समाज सेवा और महिला – आत्म- निर्भरता की दिशा में काम कर रहें हैं। कुछ माह बाद कॉलेज का रिजल्ट आया जिसमें हनी और प्रीत प्रथम श्रेणी पास हुई हैं। उसी दिन हनी अपने पिता जो सिलाई मास्टर हैं, उनके साथ रोहन और माया मेम को मिठाई लेकर संस्था सदन जाती है। हनी के पिता शेरु खान, रोहन और माया को बताते हैं कि हनी निकाह दस पहले स्थानीय समाज के लड़के से हुआ था लेकिन अब इसका तलाक हो चुका है।

श्राद्ध के मौसम साहित्यकार होने के नाते मैं निवेदन करता हूं

साहित्यकार मित्र क्या हाल है ? आज-कल तुम्हारी लेखनी बहुत तेज चल रही है।आपकी लिखने के चलते किसी की हिम्मत नहीं होती कि, वह प्रतिक्रिया कर दे।साहित्यकार जी क्या मुझे एक बात का जवाब देंगे ?क्यों नहीं जरूर देंगे।मैं साहित्यकार होने के नाते आपकी दशा और दिशा बदलने में सहयोग करूंगा ।

महोदय पहले आप अपना मतलब स्पष्ट कीजिए। मेरा मतलब तो साफ़ है।श्राद्ध पक्ष के मौसम में कौंवे इन दिनों दिखाई नहीं दे रहे हैं ऐसी स्थिति को देखते हुए देश में कौंवे की संख्या कितनी है ?अभी तक इस संख्या को संबंधित विभाग से देखने को व सुनने को नहीं मिली तो क्या मेरे आप इस सवाल को स्पष्ट करेंगे ?

जरूर श्रीमान जी, नील गगन में उड़ने वाले काले कलोटे कौंवे अपनी मस्ती में चारों ओर उड़ रहे हैं और वह समय समय पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते रहते हैं लेकिन, इनके कुछ वंशज भ्रष्ट राजनीति की बहती हुई गंदी हवा की चपेट में आने से आजकल वह भ्रष्टाचार , रिश्वत तथा किसी के हिस्से का अनाज का दाना पानी चुग कर संसद में कावं कांव करते हुए दांव-पेंच करते नजर आ रहे हैं इसलिए इन दिनों श्राद्ध के मौसम में कौंवे दिखाई नहीं दे रहे हैं साथ ही कुछ बचे-खुचे इमानदार कौंवे इनकी करतूतों के चलते अपने घर में मुंह छिपाकर बैठे हैं ।

अतः श्रीमान जी आप मेरे कहने का मतलब अच्छी तरह से समझ गए होंगे। आप इस श्राध्द के मौसम में खीर पुरी और मृत आत्मा के प्रति आपकी श्रद्धा भाव रखते हुए जो भी मिठाई एवं दान दक्षिणा देना चाहते हैं।वह सीधे-सीधे किसी ऐसे लाखों गरीब, असहाय परिवार को दे दे जो भूख लाचारी से संघर्ष कर रहा है उनकी थाली आज भी खाली नजर आ रही है। यह हकीकत का आईना है जों नैतिकता का संकट बायां कर रही है।

एक खबर के अनुसार देश की जनसंख्या का कुछ अनुपात देखा जाए तो दो वक्त का उन्हें खाना भी नसीब नहीं हो रहा है अगर ऐसे परिवार

को आपका दान बहुत काम आएगा और सही मायने में आपका दान सही जगह लग जाएगा।आपकी भक्ति और मृत आत्मा के प्रति श्रद्धा भाव है वह पूर्ण हो जाएगा।आधुनिकता इस भाग दौड़ भरी जिंदगी में आपके पास इतना समय नहीं है कि, आप कौंवे को ढूंढ लेंगे इसलिए, आप गरीब असहाय और लाचार लोगों की मदद करके मानवता का परिचय देवें।

साहित्यकार होने के नाते मैं आपसे यही निवेदन करता हूं। प्रार्थना करता हूं। अरदास करता हूं कि , आप सभी इस विषय पर गंभीर हों जाएं तो सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे और किसी गरीब, लाचार , असहाय की थाली में दो वक्त की रोटी दिखाई देंगी।

प्रकाश हेमावत
टाटा नगर रतलाम

जीनत कुरैशी: लग्ज़री डिप्लोमेसी में भारत की पहली महिला जीसीसी-इंडिया ट्रेड कमिश्नर

मुख्य संवाददाता

भारत के वैश्विक व्यापार परिदृश्य के लिए यह ऐतिहासिक क्षण है। एच.ई. जीनत कुरैशी ने इतिहास रचते हुए काँच की छत को तोड़ दिया है- वह पहली भारतीय महिला बनी हैं जिन्हें एक अंतरराष्ट्रीय चैम्बर ऑफ कॉमर्स के अंतर्गत जीसीसी-इंडिया ट्रेड कमिश्नर की उपाधि दी गई है।

उनकी यह नियुक्ति लग्ज़री डिप्लोमेसी में एक नए अध्याय की शुरुआत है, जहा वह उच्च-स्तरीय वाणिज्य, सांस्कृतिक आदान- प्रदान और द्विपक्षीय सहयोग के केंद्र मे खड़ी हैं।

भारत में शानदार स्वागत

दुबई से पहली बार भारत आने पर, दिल्ली एयरपोर्ट पर जीनत कुरैशी का भव्य स्वागत हुआ। परिजनों, मीडिया, प्रशंसकों और आधिकारिक प्रतिनिधियो ने उनका गर्मजोशी से स्वागत कर उन्हें भारत की उपलब्धि और गर्व का प्रतीक बताया। यह पल न केवल उनके करियर की उपलब्धि था, बल्कि भारत मे महिला नेतृत्व की प्रगति का उत्सव भी।

सरकार की नाकामी का नतीजा है नेपाल में जेन-ज़ी की बग़ावत

राजेश जैन

नेपाल ने 4 सितंबर को जब सोशल मीडिया पर बैन लगाया, तो शायद ही किसी ने सोचा होगा कि यह फैसला सत्ता बदलने की वजह बनेगा। लेकिन यही हुआ।

युवाओं ने स्कूल यूनिफॉर्म और बैग के साथ सड़कों पर उतरकर इसे सिर्फ़ डिजिटल हक़ का मुद्दा नहीं रहने दिया, बल्कि इसे करप्शन और पुरानी राजनीति के खिलाफ़ बगावत बना दिया। आंदोलन' के दौरान प्रदर्शनकारियों ने संसद भवन में आग लगा दी। प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और गृहमंत्री के आवासों में तोड़फोड़ और आगजनी हुई। पूर्व पीएम शेर बहादुर देउबा को घर में घुसकर पीटा गया। वित्त मंत्री विष्णु पोडौल को काठमांडू में उनके घर के पास दौड़ा-दौड़ाकर पीटा गया। पूर्व पीएम झलनाथ खनाल के घर में आग लगने से उनकी पत्नी राज्यलक्ष्मी चित्रकार की मौत हो गई और अंततः हालात इतने बिगड़े कि प्रधानमंत्री केपी ओली इस्तीफा देकर हेलिकॉप्टर से भाग निकले।

ऐसे भड़की बगावत की चिंगारी

ताज़ा घटनाक्रम की शुरुआत 4 सितंबर को हुई, जब सरकार ने सोशल मीडिया पर बैन लगाया। इसके बाद हामी नेपाल नामक एनजीओ चलाने वाले सुडान गुरुंग ने इंस्टाग्राम पर युवाओं से स्कूल यूनिफॉर्म और बैग लेकर सड़कों पर उतरने की अपील की। 8 सितंबर को संसद भवन के सामने विरोध शुरू हुआ।

लेकिन आंदोलन केवल सोशल मीडिया बैन तक सीमित नहीं रहा। हामी नेपाल की पोस्ट में साफ लिखा था – "एक लंबे अरसे से करप्शन ने हमारे सपनों, भविष्य और देश की गरिमा को खत्म कर दिया है। नेता अमीर होते जा रहे हैं और आम लोग जीने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। लेकिन अब और नहीं।"

राजनीतिक असंतोष की पृष्ठभूमि

नेपाल 1990 के दशक से लगातार राजनीतिक उथल-पुथल का गवाह रहा है। पहले राजशाही, फिर संवैधानिक राजशाही और बाद में लोकतांत्रिक व्यवस्था आई, लेकिन भ्रष्टाचार कभी खत्म नहीं हुआ। 75-80 साल के बुजुर्ग नेता लगातार सत्ता में बने रहे। टॉप पदों पर कोई युवा नेता नहीं उभरा। ऐसे में सोशल मीडिया बैन ने बारूद के ढेर में चिंगारी डालने का काम किया।

नेपाल का यूथ कल्चर और मीडिया हमेशा से सक्रिय रहा है। वहां रेडियो स्टेशन, स्टूडेंट कम्युनिटीज़ और सड़क पर उतरने की परंपरा मज़बूत है। इस बार के प्रदर्शन में माओवादी, नए नेताओं की पार्टियां और हिंदू राष्ट्रवादी समूह भी शामिल हो गए। कुछ रिपोर्ट्स के मुताबिक, नेपाली संघ और अमेरिका नेपाल हेल्पिंग सोसाइटी जैसे संगठनों ने इस आंदोलन को बढ़ाने में भूमिका निभाई। स्टूडेंट्स को आगे रखा गया, बाद में रवि लामिछाने जैसे नेता भी इसमें कूद पड़े। हालांकि, कई जानकार बाहरी ताकतों की भूमिका भी मानते है पर कुछ उसको केवल अटकल मानते हैं। असली वजह करप्शन और जनता का गुस्सा ही था। ओली सरकार ने प्रदर्शन को दबाने के लिए गोली चलवाई, जिसमें 22 लोगों की मौत और 400 से ज्यादा लोग घायल हुए। युवाओं पर गोली चलने की खबर फैलते ही आंदोलन और हिंसक हो गया।

ओली के इस्तीफे के बाद सत्ता का सवाल

नेपाल की प्रतिनिधि सभा में 275 सीटें हैं और बहुमत के लिए 138 सीटें चाहिए। 2022 चुनाव में नेपाली कांग्रेस को 88, ओली की कम्युनिस्ट पार्टी (यूएमएल) को 79 और प्रचंड की माओवादी पार्टी को 32 सीटें मिली थीं। जुलाई 2024 में सत्ता समीकरण बदलकर ओली फिर प्रधानमंत्री बने, लेकिन अब जनता का गुस्सा केवल ओली पर नहीं, बल्कि सभी पुराने नेताओं – देउबा, प्रचंड और खनाल – पर है। इसलिए सत्ता कौन संभालेगा, यह अनिश्चित है। अब नेपाल में अंतरिम सरकार बनेगी। चर्चाओं में दो नाम आगे हैं –टीवी एंकर से नेता बने रवि लामिछाने (50) 2022 में उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री रह चुके हैं। युवाओं में पॉपुलर हैं और प्रोटेस्ट को खुला समर्थन दे चुके हैं। दूसरा नाम बालेंद्र शाह (बालेन) (35) का है। वे काठमांडू के मेयर और गायक से राजनेता बने हैं। शाह युवाओं के बीच करिश्माई छवि रखते हैं। इसके अलावा राजेंद्र लिंगदेन, कमल थापा और उपेंद्र यादव जैसे नेता भी संभावनाओं में बताए जा रहे हैं।

ओडिशा इंडस्ट्रीज लिमिटेड (ओरिंड) लाठीकाटा में फरार प्रमोटर रविन झुंझुनवाला के नेतृत्व वाली कंपनी के अंदर रेलवे साइडिंग का अवैध निजी उपयोग बंद करने की मांग

परिवहन विशेष न्यूज

राउरकेला -ओरिएंट रेफ्रैक्टरीज़ के पूर्व कर्मचारियों और मजदूरों के हक पर अतिक्रमण, प्रदूषण तथा भूमि संबंधी उल्लंघनों के साथ जुड़े मुद्दों पर तत्काल कार्रवाई आवश्यक

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. राजकुमार यादव ने आज गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए ओडिशा इंडस्ट्रीज लिमिटेड (ओरिंड) के लाठीकाटा (सुंदरगढ़ जिला, ओडिशा) परिसर के अंदर स्थित रेलवे साइडिंग के अवैध निजी उपयोग के खिलाफ आवाज उठाई है। ओरिंड, जो 1944 में स्थापित ओडिशा की सबसे पुरानी रिफ्रैक्टरी कंपनियों में से एक है, ओरिएंट रेफ्रैक्टरीज़ ग्रुप की सहायक कंपनी है, जिसके प्रमुख प्रमोटर रविन झुंझुनवाला (Ravin Jhunjhunwala) 2011 के ओरिंड फ्रॉड केस में शामिल रहे। इस फ्रॉड केस में ओरिंड ग्रुप के पूर्व मैनेजिंग डायरेक्टर काशी प्रसाद झुंझुनवाला को गिरफ्तार किया गया था, तथा रविन झुंझुनवाला की भूमिका भी जांच के दायरे में रही, जिसके बाद वे फरार घोषित हो चुके हैं। यह साइडिंग मूल रूप से ओरिएंट रेफ्रैक्टरीज़ के पूर्व कर्मचारियों एवं मजदूरों के हितों से जुड़ी थी, जो कंपनी के वित्तीय संकट, दिवालिया प्रक्रिया एवं प्रमोटर के फरार होने के बाद रेलवे द्वारा संरक्षित थी। हालांकि, वर्तमान में इसका निजी तौर पर दुरुपयोग किया जा रहा है, जो न केवल पूर्व कर्मचारियों के वैधानिक अधिकारों का उल्लंघन है, बल्कि पर्यावरणीय प्रदूषण, भूमि अतिक्रमण तथा अन्य कानूनी उल्लंघनों को भी जन्म दे रहा है। हम मांग करते हैं कि इस साइडिंग के अवैध उपयोग को तत्काल बंद किया जाए तथा संबंधित भूमि को केवल भूमि संबंधी मुद्दों (लैंड यूज) के अनुरूप पुनः आवंटित किया जाए, ताकि पूर्व कर्मचारियों को उनके दावों का निपटारा हो सके।

तथ्यात्मक जानकारी एवं प्रदूषण संबंधी मुद्दे: ओरिंड

लिमिटेड लाठीकाटा में रिफ्रैक्टरी उत्पादन के लिए जानी जाती है, तथा ओरिएंट रेफ्रैक्टरीज़ (अब RHI Magnesita India Ltd के रूप में पुनर्नामित) के पूर्व कर्मचारियों ने कंपनी के संकट काल में वेतन, पेंशन एवं पुनर्वास के दावे दायर किए हैं, जिसमें रेलवे साइडिंग जैसी संपत्तियों को पूर्व कर्मचारियों के हित में उपयोग करने की मांग शामिल है। कंपनी के 2011 फ्रॉड केस के बाद सैकड़ों कर्मचारी बेरोजगार हुए, तथा उनके दावों का निपटारा अभी भी लंबित है, जिसमें श्रम अदालतों में केस चल रहे हैं। हालांकि, निजी उपयोग से कोयला, जिप्सम, आइरन फाइंस एवं अन्य खनिजों का अनियंत्रित व बेतरतीब लोडिंग-आनलोडिंग हो रहा है, जो पर्यावरणीय खतरे पैदा कर रहा है। ओडिशा में रेलवे साइडिंग्स से जुड़े प्रदूषण के मामले व्यापक हैं; उदाहरणस्वरूप, सुंदरगढ़ जिला में कोयला रेलवे साइडिंग के खिलाफ स्थानीय निवासियों ने विरोध प्रदर्शन किया है, जहां बल्क कोयला परिवहन से वायु प्रदूषण, धूल कणों का फैलाव (PM10 और PM2.5 स्तर में वृद्धि), जल स्रोतों का दूषित होना तथा श्वसन संबंधी बीमारियां (जैसे अस्थमा और ब्रोंकाइटिस) बढ़ रही हैं। इसी प्रकार, रेगाली प्रोजेक्ट में ईस्ट कोस्ट रेलवे को अवैध क्लियरेंस के लिए ओडिशा स्टेट पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड (OSPCB) को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (NGT) ने 2025 में फटकार लगाई, जहां साइडिंग से उत्पन्न प्रदूषण ने कृषि भूमि और जल स्रोतों को प्रभावित किया। जाजपुर जिले के जाखपुरा रेलवे स्टेशन पर साइडिंग/स्टैक यार्ड से वायु एवं जल प्रदूषण के मामले 2016 से दर्ज हैं, तथा NGT ने 2023 में अवैध साइडिंग पर कार्रवाई का आदेश दिया। नेर्गुंडी रेलवे साइडिंग में अवैध स्टैक यार्ड के संचालन से पर्यावरणीय दिशानिर्देशों का उल्लंघन हो रहा है, जो लाठीकाटा मामले से समान है। ओडिशा माइनिंग कॉर्पोरेशन के दस्तावेजों के अनुसार, ऐसे साइडिंग्स से मिट्टी प्रदूषण और जैव विविधता ह्रास होता है, तथा ट्रक ट्रांसपोर्ट पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है, जो सड़क दुर्घटनाओं, ईंधन उत्सर्जन और सड़क प्रदूषण को बढ़ावा देता है। ये मुद्दे न केवल स्थानीय स्वास्थ्य जोखिम (जैसे फेफड़ों की बीमारियां) बढ़ाते हैं, बल्कि ओडिशा के औद्योगिक क्षेत्रों में समग्र पर्यावरणीय असंतुलन पैदा कर रहे हैं, जहां OSPCB को मिनरल स्टैक याड्र्स और साइडिंग्स के लिए विशेष गाइडलाइन्स जारी करने पड़े हैं।

कानूनी धाराओं का उल्लंघन एवं भूमि संबंधी मुद्दे-यह अवैध उपयोग भारतीय कानूनों का स्पष्ट उल्लंघन है, विशेष रूप से भूमि उपयोग, रेलवे संचालन एवं पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में। भारतीय रेलवे अधिनियम, 1989 की धारा 94 के तहत, रेलवे प्रशासन के स्वामित्व न होने वाले साइडिंग पर माल लोडिंग या डिलीवरी केवल अधिकृत व निर्देशित तरीके से ही की जा सकती है, तथा अनाधिकृत निजी उपयोग पर दंडनीय कार्रवाई (जुर्माना या बंदी) का प्रावधान है। धारा 93 रेलवे प्रशासन की माल वाहक के रूप में सामान्य जिम्मेदारी निर्धारित करती है, जो अवैध उपयोग से प्रभावित होती है। पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, 1986 की धारा 3 (केंद्रीय सरकार को प्रदूषण नियंत्रण के लिए अधिकार) एवं धारा 5 (अवैध गतिविधियों पर प्रतिबंध) के अंतर्गत प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को साइडिंग से उत्पन्न प्रदूषण पर तत्काल कार्रवाई का अधिकार है। इसके अतिरिक्त, जल (प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974 की धारा 25 एवं वायु (प्रदूषण की रोकथाम एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1981 की धारा 21 के तहत साइडिंग संचालन के लिए पूर्व अनुमति अनिवार्य है, तथा उल्लंघन पर OSPCB जुर्माना लगा सकता है। भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन में उचित मुआवजा एवं पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम, 2013 (LARR Act) की धारा 4 (सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन) एवं धारा 24 (पिछली अधिग्रहणों की वैधता जांच) के तहत पूर्व कर्मचारियों की भूमि/सुविधा (जैसे साइडिंग) पर अतिक्रमण निषिद्ध है, तथा धारा 31 के तहत पुनर्वास पैकेज (रोजगार, आवास या मुआवजा) प्रदान करना अनिवार्य है। धारा 55 पूर्व अधिग्रहणों के लिए विशेष प्रावधान देती है, जो ओरिएंट के पूर्व कर्मचारियों के दावों से जुड़ी है। इसके अतिरिक्त, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 25F पूर्व कर्मचारियों के छंटनी एवं हितों की रक्षा करती है। हम केवल भूमि संबंधी मुद्दों (जैसे अतिक्रमण, पुनर्वास, लैंड यूज एवं पूर्व कर्मचारी दावे) को केंद्र में रखते हुए इन धाराओं का हवाला देते हैं, तथा मांग करते हैं कि ओडिशा सरकार, केंद्रीय रेल मंत्रालय, OSPCB एवं NGT तत्काल जांच कर साइडिंग को बंद करें, फरार प्रमोटर रविन झुंझुनवाला की संपत्तियों की कुर्की करें तथा पूर्व कर्मचारियों को न्याय दें। NGT के हालिया आदेशों के अनुरूप, अवैध साइडिंग पर सख्त कार्रवाई आवश्यक है।

राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी ट्रक चालकों एवं परिवहन मजदूरों के अधिकारों की रक्षा के लिए कटिबद्ध है। हम ओडिशा सरकार, केंद्रीय रेल मंत्रालय, OSPCB एवं NGT से अपील करते हैं कि इस मामले में तत्काल कार्रवाई करें, अन्यथा संगठन व्यापक आंदोलन छेड़ने को बाध्य होगा।

स्टॉल प्रस्ताव :
सिंगल साइड ओपन स्टोल : 2000
कॉर्नर साइड स्टोल : 3500
तीन साइड ओपन स्टोल : 4500
सिर्फ एक टेबल : 1000
सिर्फ दो टेबल : 1250

कार्यक्रम विवरण :
रक्षा गरबा–डांडिया और दुर्गा पूजा महोत्सव
स्थान : डीडीए ग्राउंड, रामलीला ग्राउंड के सामने, स्टेट ट्रांसपोर्ट अथॉरिटी के बगल में, PNB बैंक के पीछे, सेक्टर 10, द्वारका, नई दिल्ली 110075

तारीखें : 22 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025
* दुकान का आकार : 10 फीट x 10 फीट
* शामिल सुविधाएँ :
* 2 कुर्सियाँ * 2 टेबल
*लाइट व चार्जिंग प्वाइंट

भुगतान की शर्तें :
* अग्रिम भुगतान आवश्यक
* बुकिंग के समय 50% भुगतान
* कब्जे के समय 50% भुगतान

संपर्क : इंदु राजपूत
मोबाइल : 9210210071

रक्षा द सेवियर की ओर से प्रस्तुत
गरबा महोत्सव में विशेष अपील
हमारी रक्षा द सेवियर की ओर से
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव में आने वाले सभी लोगों से विनम्र निवेदन है–
इस नवरात्रि एक सेवा ड्राइव चलाई जा रही है

आप अपने घर से लाएँ और दान करें :
• पुराने कपड़े
• पुराने कंबल
• पुराने जूते-चप्पल
• बच्चों के लिए बैग
• किताबें
आपका छोटा-सा योगदान किसी ज़रूरतमंद के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकता है

स्थान :
रक्षा गरबा डांडिया एवं दुर्गा पूजा महोत्सव
रामलीला मैदान के सामने, आरटीओ ऑथोरिटी के पास
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

विशेष सूचना
नवरात्रि में मातारानी की खंडित मूर्तियाँ, टूटे हुए फ़ोटो, पुरानी चुनरियाँ और नवरात्रि में बोए गए जवारों का विसर्जन
• दशहरे के दूसरे दिन
• दिनांक : 3 अक्टूबर की सुबह
• स्थान : रक्षा नवरात्रि गरबा एवं दुर्गा पूजा ग्राउंड

स्थान विवरण :
रामलीला मैदान के सामने,
आरटीओ ऑथोरिटी के पास,
सेक्टर 10 डीडीए ग्राउंड, नई दिल्ली

संपर्क सूत्र :
इंदु राजपूत – 9210210071
सभी श्रद्धालुओं से निवेदन है कि इस पावन विसर्जन में सहभागी बनें।

मनुष्य का मस्तिष्क यदि विवेक, सद्बुद्धि और सत्य के प्रकाश से आलोकित हो, तो वह समाज का निर्माता बनता है।

जब यही मस्तिष्क, स्वार्थ छल और अहंकार से दूषित हो जाता है, तब वह समाज के लिए एक विध्वंसक शक्ति बन जाता है।

ऐसे दुष्ट मस्तिष्क वाले लोग जब कमजोर और विवेकहीन मनःस्थिति वाले लोगों पर नियंत्रण स्थापित करते हैं, तब एक ऐसा विषवृत्त जन्म लेता है, जो केवल सामाजिक नहीं, अपितु आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी सड़ांध फैलाने लगता है। इस दुष्चक्र में नैतिकता, सच्चाई और स्वतंत्र चिंतन दम तोड़ने लगते हैं।

ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, लेकिन उससे भी अधिक आवश्यक है जागरूकता की, जिससे वह दृष्टि पैदा हो, जो असत्य को सत्य से, अधर्म को धर्म से, और भ्रम को यथार्थ से अलग कर सके।

यह जागरूकता तभी संभव है जब आत्मबल दृढ़ हो, विवेक जाग्रत हो और शुद्ध गुरु–संगति प्राप्त हो। ऐसी संगति जो चेतना को स्वतंत्र, निर्मल और सत्यमय बनाए।

मेट्रो की मनमानी से 2 महीने से भटक रहे हैं व्यापारी - परमजीत सिंह पम्मा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। सदर बाजार में मेट्रो का कार्य चल रहा है इसी कड़ी में कुतुब रोड तेलीवाड़ा पर बिल्डिंग कमजोरी का कहकर कुछ दुकानें 25 जुलाई से 2503 से 2510 तक 40 - 45 दुकानें व गोदाम सील कर दी थी जिसको मेट्रो अधिकारियों ने यह कहा लगभग 1 साल तक यह दुकानों को सील रखा जाएगा। और व्यापारियों को उसका मुआवजा दिया जाएगा। इस पर वरिष्ठ व्यापारी नेता परमजीत सिंह पम्मा ने कहा बड़े दुख की बात है। लगभग 2 महीने होने को आ रहे हैं। मेट्रो ने अभी तक कोई भी व्यापारियों को तय नहीं किया कि वह व्यापारियों को 1 साल के लिए कितना मुआवजा देगी जिस व्यापारी आगे अपनी दुकान या गोदाम किराए पर ले सकें। क्योंकि आगे आने वाला समय त्योहारों का है। अगर व्यापारियों का माल नहीं बिक पाया तो उनका बहुत बड़ा नुकसान हो जाएगा। और जैसे-जैसे त्योहार पास में आते जा रहे हैं, दुकानों व गोदाम के किराए भी बढ़ते जा रहे हैं।

परमजीत सिंह पम्मा ने कहा जब भी मेट्रो अधिकारियों से बात करो वह इसको लेकर कुछ ना कुछ बहाना बनाकर व्यापारियों को लटका रही है। जिससे से व्यापारी आए दिन परेशानी के कारण इधर-उधर भटक रहे हैं ना वह दुकानें किराए पर ले पा रहे हैं ना ही वह कोई कार्य कर पा रहे हैं।

परमजीत सिंह पम ने कहा, जल्द ही मेट्रो ने कोई हल नहीं निकला तो व्यापारियों के साथ मिलकर वह मेट्रो के खिलाफ धरना प्रदर्शन करेंगे।

पं. गोविंद बल्लभ पंत की जयंती पर लोकसभा अध्यक्ष सहित गणमान्य जनों ने पुष्पांजलि अर्पित की

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: भारत रत्न पं. गोविंद बल्लभ पंत के 138वीं जन्म जयंती के अवसर पर संसद परिसर के बाहर स्थित पार्क में आयोजित एक समारोह में लोकसभा अध्यक्ष ओमप्रकाश बिरला, दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष विजेन्द्र गुप्ता, दिल्ली सरकार के मंत्री प्रवेश साहिब सिंह, विधानसभा उपाध्यक्ष मोहन सिंह बिष्ट, पूर्व केन्द्रीय मंत्री अजय भट्ट सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए और उनकी मूर्ति पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम का संयोजन पंडित गोविंद बल्लभ पंत समारोह समिति के संयोजक एवं पूर्व विधायक डा. एस.सी.एल. गुप्ता ने किया और उपस्थित गणमान्य जनों का अभिनंदन किया।

ओम बिरला ने कहा की पं. गोविंद बल्लभ पंत सादगी के साथ लोक सेवा को समर्पित व्यक्तित्व थे जिन्होनें अपने जीवन में विभिन्न पदों पर रहते हुए इमानदारी की राह को कभी नही छोड़ा।

किस बात हैं गिला...!

अपनों से ही किया करते हैं वो शिकवा,
हमें ना पता उनको किस बात हैं गिला।

ना जाने कब से चल रहा है सिलसिला,
जब कोई बात कहें वो जाते तिलमिला।

वजह कोई हो तो हमें आज ही बताओ,
बात करना गुनाह है? इतना न सताओ।

गर तुम्हें कोई ग़म हैं जिक्र तो फरमाओं,
यूं अपना समझों तो विस्तार से बताओ।

गुरूर का पर्दा फिर एक बार तो गिराओ,
कितना सम्मान मिलता है लुफ्त उठाओं।

क्या? रखा है इस अहम में जरा बताओ,
जिंदगी कितनी हँसीं है मजे भी उड़ाओ।

संजय एम तराणेकर

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार
चिकित्सा निदेशक का कार्यालय
लोक नायक अस्पताल,
नई दिल्ली-110002
(सामान्य शाखा)

लोक नायक अस्पताल, नई दिल्ली में प्रमाणित दो वर्षीय रेडियोलॉजिकल सहायक पाठ्यक्रम (सत्र 2025-2027) में प्रवेश के लिए आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं। उम्मीदवार दिल्ली का निवासी होना चाहिए और उसकी स्कूली शिक्षा दिल्ली से ही हुई हो। सभी चयनित उम्मीदवारों को ₹500/- प्रति माह का वजीफा दिया जाएगा। आवेदन पत्र वेबसाइट http://lnjp.delhi.gov.in पर उपलब्ध है, जिसका लिंक https://forms.gle/m7Smc9s5QBVetP6C9 है। पूर्ण रूप से भरे हुए फॉर्म 19.09.2025 को अपराह्न 3:00 बजे तक जमा करने होंगे।

चयनित उम्मीदवारों की सूची 24.09.2025 को उपरोक्त वेबसाइट पर उपलब्ध होगी।

ह./-
चिकित्सा निदेशक
DIP/Shabdarth/Classified/0245/25-26

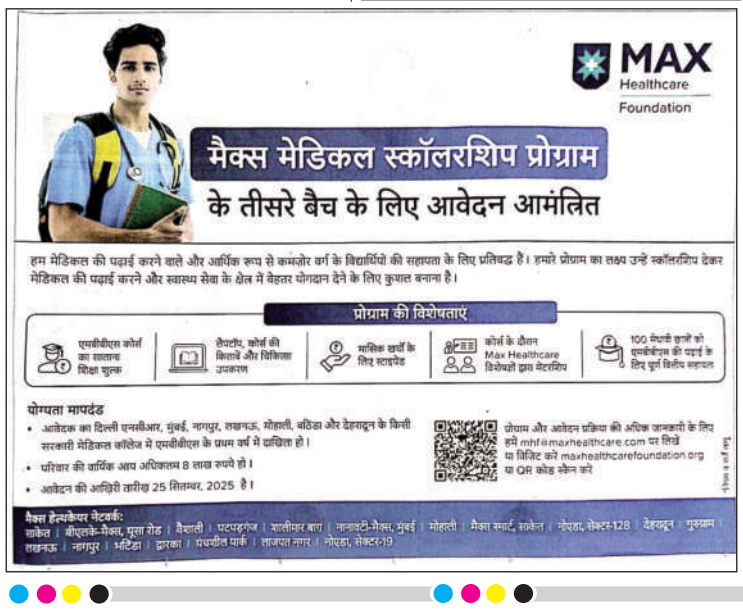

भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग
केन्द्रीय जल आयोग
ऊपरी यमुना मंडल, नई दिल्ली

सत्यमेव जयते

बाढ़ तत्काल / Flood Immediate
Government of India
Ministry of Jal Shakti
Dept. Of Water Resources, RD & GR
Central Water Commission
Upper Yamuna Division New Delhi

पत्रांक : 1/5/5/ ऊ.य.म. / 2025/ 2185-2197 दिनांक / Dated: 10/September/2025

दिनांक/ Date: 10/September/2025
जारी करने का समय/ Time of issue: 07:35 Hrs
पूर्वानुमान संख्या/ Forecast No.: 62

बाढ़ पूर्वानुमान सूचना आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित की जा रही है।/ Flood Forecast is forwarded for information and necessary action, please.

(1) जिलाधिकारी, मथुरा, उत्तर प्रदेश।
District Magistrate, Mathura, Uttar Pradesh.

(2) कार्यकारी अभियंता, उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग, मथुरा।
Executive Engineer, U.P Irrigation Department, Mathura.

(3) राहत आयुक्त कार्यालय, उत्तर प्रदेश सचिवालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश।
Relief Commissioner, U.P Secretariat, Lucknow, Uttar Pradesh.

(4) कार्यकारी अभियंता, ऊपरी ब्लॉक आगरा नहर, मथुरा।
Executive Engineer, Upper Block Agra Canal, Mathura.

(5) एडिशनल जिला मजिस्ट्रेट (वित्त और राजस्व), मथुरा।
Additional District Magistrate (Finance and Revenue), Mathura.

(6) कार्यकारी अभियंता, निचला ब्लॉक आगरा नहर, मथुरा।
Executive Engineer, Lower Block Agra Canal, Agra.

(7) बाढ़ नियंत्रण कक्ष, उत्तर प्रदेश सिंचाई विभाग, मथुरा।
Flood Control Room, U.P Irrigation Department, Mathura.

बाढ़ पूर्वानुमान स्टेशन/ Flood Forecasting Station : मथुरा प्रयाग घाट साइट / Mathura Prayag Ghat Site
खतरे का स्तर/ Danger Level : 166.00 मीटर/m
चेतावनी स्तर/ Warning Level : 165.20 मीटर/m
उच्चतम बाढ़ स्तर/ Highest Flood Level : 169.73 मीटर/m (08/09/1978)

मथुरा प्रयाग घाट साइट स्थल पर आज दिनांक 10/September/2025 को 07:00 बजे यमुना नदी का जलस्तर 167.23 मीटर दर्ज किया गया। वर्तमान संकेतों के अनुसार, जलस्तर में वृद्धि / गिरावट / स्थिरता रहेगी तथा 10/September/2025 20:00 बजे तक जलस्तर 167.05 मीटर होने की संभावना है, उसके बाद जलस्तर में वृद्धि / गिरावट / स्थिरता रहने की संभावना है।

बी -5, कालिंदी भवन
कुतुब संस्थानिक क्षेत्र
कटवारिया सराय
नई दिल्ली – 110016
दूरभाष : 011 – 26868120
ई मेल : uydybo-cwc@nic.in

B-5, Kalindi Bhawan
Qutub Institutional Area
Katwaria Sarai
New Delhi-110016
Telephone : 011-26868120
E mail- uydybo-cwc@nic.in

To Download Advertisement, Scan →

GOVERNMENT OF NCT OF DELHI
Delhi Subordinate Services Selection Board
(D.S.S.S.B)
FC-18, INSTITUTIONAL AREA, KARKARDOOMA, DELHI-110092
https://dsssbonline.nic.in

No. F.1(438)/P&P/DSSSB/2025/Advt./3305 Dated: 10/09/2025

VACANCY NOTICE / ADVERTISEMENT NO. 05/2025
COMBINED EXAMINATION, 2025 FOR THE POST OF ASSISTANT TEACHER (PRIMARY)

The opening date and closing date for receipt of online applications are as below:-

Opening Date of Application: 17/09/2025 (17th September, 2025)(From 12.00 Noon)
Closing Date of Application: 16/10/2025 (16th October, 2025) (Till 11.59 PM)

Delhi Subordinate Services Selection Board (DSSSB) invites online applications from eligible candidates for recruitment to the post of **Assistant Teacher (Primary)** against vacancies in respect of under mentioned Departments of Government of NCT of Delhi / Autonomous / Local bodies as per detail given below: -

ASSISTANT TEACHER (PRIMARY)

S.No.	Post Code	Name of post	Name of Department	Pay Level	Vacancies*						
					UR	OBC	SC	ST	EWS	Total	PwBD (incl.)
1	802/25	Assistant Teacher (Primary)	Directorate of Education	6	434	278	153	62	128	**1055**	55
2		Assistant Teacher (Primary)	New Delhi Municipal Council	6	68	28	13	7	9	**125**	6
GRAND TOTAL					**502**	**306**	**166**	**69**	**137**	**1180**	**61**

*The above vacancies are tentative and based on inputs of the indenting Departments/ Bodies.

Candidates must apply online through the website **https://dsssbonline.nic.in**. The closing date for submission of online application is **16/10/2025 (till 11:59 PM)** thereafter the link will be disabled.

DSSSB will conduct examinations for making recruitment against the vacancies notified above. The date of examinations will be intimated in due course only through the website of the Board. The applicants are advised to visit DSSSB's website i.e **https://dsssb.delhi.gov.in/dsssb-vacancies** to check the detailed advertisement and to confirm eligibility as per the Recruitment Rules of the indenting departments for the above vacancies.

IMPORTANT NOTE:- Only online applications will be accepted. Applications received by post/by hand/by mail etc. will not be accepted and will be summarily rejected. No correspondence will be entertained in this regard.

-sd-

Deputy Secretary (P&P)
DSSSB

1 | Page

टिटहरी: प्रकृति का जीवित मौसम वैज्ञानिक

कहते हैं, विज्ञान चाहे कितना भी आगे बढ़ जाए, प्रकृति के अपने संकेतों को समझने में अब भी पीछे है।

राजस्थान में इस बार 50 वर्षों में पहली बार टिटहरी ने छत पर अंडे दिए हैं! यह कोई सामान्य घटना नहीं... यह तो प्रकृति का अलार्म है!

टिटहरी के सात रहस्यमयी संदेश:

1. चार अंडे = चार महीने बारिश अगर टिटहरी ने चार अंडे दिए हैं, तो समझो चार महीने बादल जमकर बरसेंगे।

2. ऊँचाई पर अंडे = शानदार बारिश जब टिटहरी ऊँचाई वाली जमीन पर अंडे देती है, यह संकेत है कि बारिश भरपूर होगी।

3. छत और दीवार से दूरी टिटहरी कभी भी पेड़, दीवार, खंभे या रस्सी पर नहीं बैठती। यह हमेशा ज़मीन के करीब रहती है।

4. छत पर अंडे = पानी से तबाही अगर टिटहरी ने छत पर अंडे दे दिए, तो समझ लो बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है।

5. कुरुक्षेत्र का रहस्य कहते हैं, टिटहरी का शव आपको देशभर में कहीं नहीं मिलेगा... सिवाय कुरुक्षेत्र के!

6. अंडे वाला खेत कभी खाली नहीं रहता जिस खेत में टिटहरी अंडे देती है, वह खेत कभी बंजर नहीं होता, हमेशा फसल से लहलहाता है।

7. अंडे न हों = अकाल का संकेत जिस साल टिटहरी अंडे न दे, वह साल अकाल का होता है।

प्रकृति का रक्षक पक्षी टिटहरी कोई साधारण पक्षी नहीं, यह प्रकृति के रहस्यों को पढ़ने वाली सजीव किताब है। जब विज्ञान का नामोनिशान भी नहीं था, तब ये पक्षी संकेतों से मौसम का हाल बताते थे।

आज जब हम आधुनिक हो गए हैं, हमने इनके संदेशों को नज़रअंदाज़ कर दिया है... लेकिन प्रकृति का यह प्रहरी अब भी बिना बोले हमें चेतावनी दे रहा है।

सावधान हो जाइए! प्रकृति बोलती नहीं, पर संकेत जरूर देती है, और ये संकेत अटल हैं।

चंद्रकांति को मिला बेस्ट ब्यूटीशियन व मेकअप आर्टिस्ट अवार्ड

नई उड़ान जन सेवा फाउंडेशन ने आयोजित किया एडवांस्ड मेकअप सेमिनार, महिलाओं को बनाया आत्मनिर्भर

सुनील चिंचोलकर

चारामा, कांकेर। जांजगीर में नई उड़ान जन सेवा फाउंडेशन द्वारा एक सफल एडवांस्ड तकनीक मेकअप सेमिनार का आयोजन किया गया। छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों से ब्यूटीशियन और स्टूडेंट्स ने इस विशेष अवसर पर भाग लेकर अपने ज्ञान को और भी समृद्ध किया। इस सेमिनार का उद्देश्य महिलाओं को अपने पार्लर में एडवांस तकनीक अपनाकर आत्मनिर्भर बनाना और रोजगार के क्षेत्र में उन्हें मजबूती प्रदान करना था। इस अवसर पर हिमांशु ब्यूटी पार्लर की संचालिका चंद्रकांति नागे को बेस्ट ब्यूटीशियन एवं बेस्ट मेकअप आर्टिस्ट के अवार्ड से नवाज़ा गया।

मुंबई से इंटरनेशनल मेकअप आर्टिस्ट अलका गोविंद एवं प्रो मेकअप आर्टिस्ट नेहा कुकरेजा ने लाइव स्टेज प्रजेंटेशन के माध्यम से एडवांस मेकअप तकनीक की सम्पूर्ण जानकारी दी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में हेयर एंड मेकअप वर्कशॉप क्लास भी आयोजित की गई, जिसमें फाउंडेशन मेंबर और स्टूडेंट्स ने हाथों-हाथ प्रैक्टिकल प्रशिक्षण प्राप्त किया। इससे उनका न केवल तकनीकी ज्ञान बढ़ा, बल्कि क्लाइंट को बेहतरीन सर्विस देने का आत्मविश्वास भी प्राप्त हुआ।

इस कार्यक्रम को प्रमुख रूप से छत्तीसगढ़ के मशहूर एक्टर विवेक चंद्रा और रामनाथ की उपस्थिति से चार चाँद लग गए। मुख्य अतिथि के रूप में उनके आगमन से कार्यक्रम में उपस्थित दर्शकों का उत्साह और बढ़ गया। इसके अतिरिक्त देवकी काठवाड़े, सरस्वती बारथ, चंद्रकांती नागे, मानवी यादव, नीलम साहू, माया धीवर और शांति यादव ने भी इस इवेंट को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। नई उड़ान जन सेवा फाउंडेशन का उद्देश्य महिलाओं को समान शिक्षा और समान अवसर प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। फाउंडेशन की डायरेक्टर उषा शर्मा ने इस आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले फाउंडेशन मेंबर व कोऑर्डिनेटरों का विशेष आभार प्रकट किया। फाउंडेशन भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित कर महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा।

राज्य के सरकारी विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का असर शुरू

▪टीचर्स ऑफ बिहार की सकारात्मक पहल से बच्चों के सीखने की गुणवत्ता में सुधार

पटना। बिहार के सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का माहौल अब तेजी से बदल रहा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और बेहतर शैक्षणिक वातावरण के सकारात्मक परिणाम बच्चों की पढ़ाई और उनकी रुचि में साफ तौर पर झलकने लगे हैं।

टीचर्स ऑफ बिहार का अभिनव प्रयास...

राज्य के शिक्षकों की अग्रणी संस्था टीचर्स ऑफ बिहार लगातार नवाचारी शिक्षण पद्धतियों और रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में जुटी है। संस्था का यह प्रयास विद्यालयों में न केवल बच्चों की भागीदारी बढ़ा रहा है, बल्कि शिक्षकों के लिए भी प्रेरणास्रोत साबित हो रहा है।

डॉ.एस.सिद्धार्थ का संदेश.....

शिक्षा विभाग के पूर्व अपर मुख्य सचिव डॉ.एस.सिद्धार्थ ने टीचर्स ऑफ बिहार को शुभकामना संदेश भेजते हुए कहा—"टीचर्स ऑफ बिहार का प्रयास बच्चों की शिक्षा के स्तर को नई ऊँचाइयों तक ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। यह पहल बिहार के शैक्षणिक परिदृश्य को नई दिशा प्रदान करेगी।"

शिक्षकों की प्रतिक्रिया....

सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों ने इस बदलाव पर खुशी जताई है।

नवसृजित प्राथमिक विद्यालय खुटौना यादव टोला, पताही, पूर्वी चंपारण के शिक्षक -सह-प्रदेश मीडिया संयोजक, टीचर्स ऑफ बिहार मृत्युंजय कुमार ने कहा — "गतिविधि आधारित शिक्षण से बच्चों की रुचि बढ़ी है। वे सवाल पूछते हैं, चर्चा करते हैं और अपने विचार भी साझा करते हैं। यह बदलाव शिक्षण-प्रक्रिया को सार्थक बना रहा है।"

बच्चों का उत्साह.....

बच्चों ने भी नई शिक्षण पद्धति को सराहा है।

एक छात्रा ने कहा — "अब पढ़ाई मजेदार लगती है। खेल-खेल में पढ़ाई करने से कठिन विषय भी आसानी से समझ आ जाता है।"

वहीं एक अन्य छात्र ने उत्साह से बताया — "अब स्कूल आने का मन करता है। पढ़ाई अब बोझ नहीं लगती।"

भविष्य की दिशा.....

शिक्षा क्षेत्र के जानकार मानते हैं कि यदि इसी तरह के प्रयास लगातार जारी रहे, तो बिहार की सरकारी शिक्षा व्यवस्था आने वाले समय में देश के लिए एक आदर्श मॉडल साबित होगी।

टीचर्स ऑफ बिहार समूह के सभी सदस्यों को पूर्व अपर मुख्य सचिव का संदेश

डॉ० एस० सिद्धार्थ, भा.प्र.से.
अपर मुख्य सचिव
शिक्षा विभाग,
बिहार सरकार

विकास भवन, पटना - 800 015
फोन : 0612 - 2217016 (कार्यालय)
फैक्स : 0612 - 2235108

शुभकामना सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यंत संतोष और गर्व की अनुभूति हो रही है कि "टीचर्स ऑफ बिहार - द चेंज मेकर", जो कि बिहार का सबसे बड़ा प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी है, आज राज्य भर के लाखों शिक्षकों को एकजुट करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार कर रहा है।

यह मंच न केवल शिक्षकों को आपस में जोड़कर सीखने-सिखाने की निरंतर प्रक्रिया को गति दे रहा है, बल्कि उनके उत्कृष्ट कार्यों का संग्रह और प्रसार कर बिहार की शिक्षा व्यवस्था की सकारात्मक छवि को देश और समाज के सामने मजबूती से स्थापित कर रहा है।

नई शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप, इस मंच ने शिक्षकों के सतत् व्यावसायिक विकास (Continuous Professional Development) की दिशा में विशेष रूप से कार्य करते हुए सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के लिए कैपेसिटी बिल्डिंग और स्किल डेवलपमेंट का महत्वपूर्ण दायित्व निभाया है। इससे शिक्षण कार्य में नवाचार, रचनात्मकता, नई दृष्टि तथा दक्षता का समावेश हुआ है।

चाहे शिक्षकों की रचनात्मक पहल को साझा करना हो, प्रशासन से जुड़े विचार-विमर्श को आगे बढ़ाना हो अथवा किसी नवाचार को प्रोत्साहित करना हो—टीचर्स ऑफ बिहार ने हर कदम पर पूरी निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ राज्य के शैक्षिक उत्थान में योगदान दिया है।

मैं "टीचर्स ऑफ बिहार - द चेंज मेकर" परिवार के सभी सदस्यों को उनके इस सराहनीय प्रयास और समर्पण के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह मंच आगे भी बिहार की शिक्षा प्रणाली को नई ऊँचाइयों पर ले जाने में सेतु का कार्य करता रहेगा।

(डॉ० एस० सिद्धार्थ)
अपर मुख्य सचिव

सेवा में,
श्री शिव कुमार
फाउंडर, टीचर्स ऑफ बिहार

www.teachersofbihar.org

जल भराव के बीच ट्रैक्टर ट्राली से पहुंच कर कांग्रेसियों ने वितरित की राहत सामग्री

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। यमुना में आयी बाढ़ के सातवें दिन कांग्रेस के पूर्व जिला अध्यक्ष सोहन सिंह सिसोदिया के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बाढ़ पीड़ितों के लिए बने सभी राहत शिविरों में जाकर राहत सामग्री का वितरण किया।साथ ही परिक्रमा मार्ग में यमुना जल भराव के बीच ट्रैक्टर ट्राली के माध्यम से पहुंचकर एवं नाव की मदद से राहत सामग्री वितरण की गई। वरिष्ठ कांग्रेस नेता सोहन सिंह सिसोदिया ने कहा कि बाढ़ पीड़ितों की हर संभव मदद के लिए सात दिन से निरन्तर सेवा कार्य किए जा रहे हैं।साथ ही दैनिक उपयोग की वस्तुएं भी पीड़ितों तक पहुंचाई जा रही हैं।यह सेवा आगे भी जारी रहेगी। इस अवसर पर ठाकुर संग्राम सिंह, श्यामसुंदर धानुका जी, महेश

गौतम, वैभव गौतम पाखी एडवोकेट, रामबाबू शर्मा, कन्हैया शर्मा, अशोक गौतम, अंकित शर्मा ,यश प्रताप सिसोदिया, दीपांशु अग्रवाल, ब्रजराज मिश्रा, नत्थों प्रजापति आदि लोग उपस्थित थे।

बिजली विभाग मौन, समस्या का समाधान करेगा कौन।

मांट। सुरीर। क्षेत्र के गांव सुरीर बिजऊ में बिजली विभाग के लापरवाही का मामला सामने आया है। मांट ब्लॉक के परसोती गढ़ी बिजली घर से अटैच गांव सुरीर बिजऊ में मोहल्ला बघा में रेनू पत्नी नेमसिंह के गेट के पास दो बिजली के खंभे हैं जो कि जर्जर और क्षतिग्रस्त हालत में हैं। खंभे गिरने की हालत में हैं। जिससे कभी भी घटना होने की संभावना बनी हुई है। किसी को जान को खतरा भी हो सकता है। वहां दुर्घटना घटना खतरे से खाली नहीं है। उक्त मामले में शिकायतकर्ता रेनू पत्नी नेमसिंह ने बताया कि वो शिकायती पत्र कई बार जेई अरविंद कुमार एवं एसडीओ मांट को लिखित में दे चुके हैं बाबजूद इसके बिजली विभाग सोया हुआ है। शिकायतकर्ता की शिकायत को इगनोर किया जा रहा है।। मामले में शिकायतकर्ता रेनू पत्नी नेमसिंह ने जल्द से जल्द समाधान करने एवं जर्जर और क्षतिग्रस्त खंभों को बदलवाने की मांग की है।

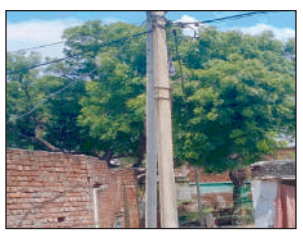

पितृ-पक्ष (07 से 21 सितम्बर 2025) में विशेष : साँझी साँचौ देव

- डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

साँझी को ब्रज की लोक देवी माना गया है। यह ब्रज संस्कृति की उपासना का प्रमुख अंग है। ब्रज के अनेक देवालयों में इसे आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक अंकित किया जाता है। इसके मध्य में भगवान श्रीकृष्ण से सम्बंधित विभिन्न लीलाओं का भी अंकन किया जाता है। यह ब्रज की लोक चित्रांकन कला है। इसमें सूखे रंगों, फूलों व गोबर आदि के प्रयोग से अष्टकोणीय रूप में ज्यामितीय आकार की विभिन्न दृश्यावलियाँ फर्श, दीवार व कागज आदि पर बनाई जाती हैं। चूंकि साँझी का आशय संध्या से है इसलिए, इसके दर्शन सांय काल ही होते हैं। पितृ पक्ष में इनके बनाये जाने का प्रमुख कारण यह है कि एक तो इन दिनों यहां विभिन्न प्रकार के फूल सहजता से प्राप्त हो जाते हैं। दूसरे इन दिनों कोई विशेष उत्सव-त्योहार व मांगलिक कार्य आदि न होने के कारण इसको बनाने वाले कलाकार फुरसत में हुआ करते हैं। अतैव यह कला ब्रज में पितृ पक्ष का विशेष उत्सव है। ब्रज के नगरीय क्षेत्रों में सूखे रंगों एवं ग्रामीण अंचलों में गोबर से इस कला का चित्रांकन बहुतायत से होता है। इसे तेल व जल के अंदर एवं तेल व जल के ऊपर भी एक विशेष तरीके से बनाया जाता है।

फूलों से साँझी बनाये जाने का इतिहास 5000 हजार वर्षों से भी अधिक पुराना है। बताया जाता है कि इसको बनाये जाने की शुरुआत राधा रानी ने की थी। वह इसे अपने परमाराध्य श्रीकृष्ण को प्रसन्न करने के लिए बाग बगीचों में विभिन्न प्रकार के फूलों द्वारा अपनी सखियों के सहयोग से बनाया करती थीं। श्रीकृष्ण जब गौधूलि बेला में गौचारण कर घर आते थे तो वे इन्हें देखकर बेहद प्रसन्न होते थे। अतः साँझी अपनी शुरुआत के दिनों से ही प्रभु को रिझाने व उनकी उपासना करने की प्रमुख विधि रही है। बाद को राधा रानी की देखा-देखी अन्य लोग भी साँझी बनाने लगे। साथ ही यह ब्रज में प्रभु की आराधना का एक सशक्त माध्यम बन गई। कहा गया है-

"मनवांछित फल पाइये, जो कीजे इहि सेव।
सुनौ कुंवरि बृषभानु की, यह साँझी सांचौ देव।।"

साँझी बनाने हेतु सर्वप्रथम अष्टकमल आकर में पीली मिट्टी की वेदी बनाई जाती है। अष्टकमल अष्टसखियों का प्रतीक है। ततपश्चात ज्यामिती आकार में डिजाइन डाली जाती है। इसमें सतिया-स्वस्तिवाचक के रूप में, सात बिन्दी-सप्तऋषियों के प्रतीक के रूप में और केला रूद्र पूजा के रूप में अंकित किये जाते हैं।इसके बाद इन्स्टेंसिल लगाकर तरह-

तरह के रंगों को डाली गई डिजायनों के अंदर छाना जाता है। सबसे अंत में साँझी के मध्य ₹होंद₹ बनाया जाता है, जिसमें रंगों के द्वारा भाँति-भाँति के दृश्य चित्रित कर उनके मध्य राधा-कृष्ण का युगल चित्र लगाया जाता है। चार पांच व्यक्ति दिन-भर कठोर परिश्रम से कार्य करने के बाद सांय तक एक साँझी तैयार कर पाते हैं।ततपश्चात उसका ठाकुर जी के विग्रह की भांति अत्यंत विधि-विधान से भोग लगाया जाता है और उसकी आरती होती है। इसमें बाद उसके दर्शन सभी के लिए खुलते हैं, जो कि रात्रि को मन्दिर के पट बन्द होने के तक खुले रहते हैं। प्रातः काल मन्दिर की मंगला आरती के समय इसके दर्शन पुनः कराए जाते हैं।इसके बाद वेदी व राधा-कृष्ण की युगल छवि को छोड़कर पूरी साँझी बिगाड़ दी जाती है। अगले दिन दिन भर के कठिन परिश्रम के बाद विभिन्न दृश्यावलियों से सुसज्जित दूसरी साँझी बनाई जाती है। पितृ विसर्जन अमावस्या को प्रत्येक दिन की साँझी में प्रयुक्त होने वाले फूलों, रंगों आदि सामग्री को यमुना में विसर्जित कर दिया जाता है। ब्रज के ग्रामों में गोबर से भी साँझी बनाई जाती है। ततपश्चात उन्हें फूलों व कौड़ियों आदि से सजाया जाता है। इस समय अधिकांशतः सूखे रंगों के द्वारा ही साँझी बनाई जाती है। ब्रज की अधिकांशतः कुँवारी कन्याएं श्रेष्ठ वर प्राप्त करने के उद्देश्य से भी साँझी बनाती हैं और व्रत भी रखती हैं।

साँझी बनाया जाना अत्यंत कष्ट साध्य व श्रम साध्य कला है। क्योंकि इसे भक्ति भावना के साथ बनाया जाता है इसलिए इसको जमीन पर बनाने वाले कलाकार इसे लकड़ी की तख्तियों पर बैठ कर एवं घण्टों झुके रह कर जमीन पर बिना पैर रखे बनाते हैं। वृन्दावन के भट्ट जी मन्दिर, राधावल्लभ मन्दिर व राधारमण मन्दिर आदि में पितृ पक्ष के दौरान अत्यंत चित्ताकर्षक व नयनाभिराम साँझी बनाई जाती है। वृन्दावन के प्राचीन ब्रह्म कुंड पर पितृ पक्ष के पूरे 15 दिन साँझी का मेला लगता है। इसमें प्रतिदिन सांझी बनाने वाले कलाकार अपनी कला का हुनर दिखाते हैं। बाद को इन्हें पुरुस्कृत भी किया जाता है। इस समय राधारमण मन्दिर के सेवायत सुमित गोस्वामी एवं प्रियावल्लभ मन्दिर के सेवायत रसिक वल्लभ नागार्च आदि की गिनती साँझी बनाने वाले प्रमुख कलाकारों में की जाती है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार राधा रानी मानिनी देवी थीं, इसलिए श्रीकृष्ण ने प्रायः अपनी सभी लीलाएं राधा रानी को मनाने के लिए की थीं। परन्तु राधा रानी ने श्रीकृष्ण को रिझाने के लिए कुछ ही लीलाएं की थीं, साँझी उन्हीं में से एक है। साँझी राधा-कृष्ण के प्रेम का प्रतीक है। इसीलिए ब्रज में साँझी को राधा रानी का प्रतिरूप मान कर संध्या के समय उनकी उसी प्रकार पूजा-अर्चना की जाती है, जिस प्रकार ब्रज के मंदिरों में ठाकुर विग्रहों की पूजा-अर्चना होती है। साँझी कला राधा-कृष्ण के प्रेम की चरमतम अवस्था की परंपरा है, जो कि ब्रज में ही संजोयी गयी है और यहीं विकसित भी हुई है। अष्टकोण में निहित होने एवं राधा रानी की कला होने के कारण इसे ₹वैष्णव यन्त्र₹ भी कहा गया है। साँझी कला ब्रज की लोक संस्कृति में निहित है। इसीलिए इसे प्रति वर्ष एक महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। साँझी पर अनेक सन्तों, रसिकों व भक्तों आदि ने सैकडों पदों की रचना की है।जिनमें रसखान, सूरदास, हित हरिवंश महाप्रभु एवं भारतेंदु हरिश्चंद्र आदि प्रमुख हैं। जिनके पदों को साँझी महोत्सव के दौरान मन्दिरों में अत्यंत धूम के साथ गाया जाता है।

(लेखक वरिष्ठ साहित्यकार व आध्यात्मिक पत्रकार हैं)

नेपाल में युवाओं का आक्रोश, सत्ता पलट और दक्षिण एशिया की राजनीति-एक अंतरराष्ट्रीय विश्लेषण

विश्व में युवा पीढ़ी ही अपनें देश की राजनीति का भविष्य तय करने वाली है

नेपाल में भ्रष्टाचार व परिवारवाद के खिलाफ़ युवाओं क़े जबरदस्त आक्रोश को दुनियाँ के हर देश क़ो संज्ञान में लेना ज़रूरी- **एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र**

नेपाल में पिछले कुछ दिनों में घटित राजनीतिक घटनाक्रम ने पूरे दक्षिण एशिया को हिला दियाहै।भ्रष्टाचार और परिवारवाद से त्रस्त जनता, खासकर युवाओं के जबरदस्त आक्रोश ने मात्र 36 घंटे में सत्ता की गद्दी हिला दी। पाँच पूर्व प्रधानमंत्रियों पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपों ने स्थिति को और अधिक उग्र बना दिया। सत्ता पलट की इस तेज़ी ने यह संकेत दिया है कि नेपाल की जनता अब किसी भी कीमत पर अपारदर्शी शासन स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है। जिस प्रकार आम लोग और युवा सड़कों पर उतरे, उसने यह साफ कर दिया कि दक्षिण एशिया में लोकतंत्र तभी जीवित रह सकता है जब वह जनता के विश्वास पर आधारित हो।नेपाल की कुल जनसंख्या का लगभग 20 प्रतिशत यानी 62 लाख लोग युवा हैं, और यही वर्ग देश की राजनीति का भविष्य तय करने वाला है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि वैश्विक स्तर पर भी यह बात स्पष्ट है कि, किसी भी देश का भविष्य उसकी युवा पीढ़ी के हाथों में होता है। नेपाल के युवाओं ने इस बार भ्रष्टाचार और पारिवारिक राजनीति के खिलाफ अपनी ताकत दिखाकर पूरे विश्व को एक सशक्त संदेश दिया है कि अब युवा पीढ़ी ₹नेपो बेबीस₹ यानी नेताओं के बच्चों और वंशवाद की राजनीति को बर्दाश्त नहीं करेगी। युवाओं की इस ऊर्जा ने नेपाल की राजनीति को हिला कर रख दिया है और यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या जनरेशन-ज़ेड (गेन ज़ेड) अब नेपाल का नया इतिहास लिखने जा रही है?

साथियों बात अगर हम नेपाल में हालात इस कदर हद तक बिगड़ बिगड़ने की करें तो, तीनों बड़ी पार्टियों, नेपाली कांग्रेस, नेपाल कम्युनिस्ट पार्टी और माओवादी सेंटर, के नेताओं के घरों मेंघुसकर लोगों ने मारपीट की, घरों को आग के हवाले कर दिया और वित्तमंत्री को सड़कों पर घसीटा गया। एक पूर्व प्रधानमंत्री के घर में आगजनी के दौरान उनकी पत्नी की मौत हुई तो उधर जनाक्रोश को और अधिक भड़का दिया। यह दृश्य केवल राजनीतिक विद्रोह का नहीं बल्कि व्यवस्था के खिलाफ पूर्ण असंतोष का प्रतीक है। युवाओं का यह क्रोध इस बात का संकेत है कि अब पारंपरिक राजनीति को बदलने का समय आ चुका है।

साथियों बात अगर हम नेपाल की स्थिति की तुलना श्रीलंका और बांग्लादेश से करने की करें तो, जहाँ हाल के वर्षों में आर्थिक संकट और राजनीतिकअस्थिरता ने जनता को सड़कों पर ला दिया था। श्रीलंका में राष्ट्रपति भवन तक जनता का कब्जा, बांग्लादेश में चुनावी धांधली के खिलाफ आंदोलन और म्यांमार में सैन्य तख्तापलट ने दक्षिण एशिया की राजनीति को लगातार अस्थिर बना रखा है। अब नेपाल भी उसी राह पर चलते हुए सत्ता पलट की कगार पर पहुंच गया है। इसका सीधा संकेत है कि भ्रष्टाचार और परिवारवाद से जूझ रहे समाजों में युवा अब चुप बिल्कुल नहीं बैठेंगे।

साथियों बात अगर हम नेपाल क़े इस पूरे घटनाक्रम में सोशल मीडिया की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होने की करें तो, नेपाल की लगभग 87 प्रतिशत आबादी मोबाइल इंटरनेट का उपयोग करती है, जबकि 62 प्रतिशत लोग सक्रिय रूप से फेसबुक का इस्तेमाल करते हैं। ट्विटर और यूट्यूब पर भी युवा लगातार अपने विचार साझा कर रहे हैं। नेताओं के बच्चों द्वारा सोशल मीडिया पर अपने आलीशान जीवन और लग्ज़री छुट्टियों की तस्वीरें पोस्ट करना आग में घी का काम साबित हुआ। जब देश की जनता महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार से जूझ रही हो और नेता तथा उनके परिवार ऐशो- आराम की तस्वीरें साझा करें, तो यह जनता के लिए असहनीय हो जाता है। यही वजह है कि सोशल मीडिया ने जनाक्रोश को संगठित आंदोलन में बदल दिया।

साथियों बात अगर हम भारत के पड़ोस में यहराजनीतिक उथल- पुथल चिंता का विषय होने की करें तो, नेपाल बांग्लादेश, श्रीलंका म्यांमार और पाकिस्तान सभी वर्तमान में या तो राजनीतिक अस्थिरता से गुजर रहे हैं या सत्ता परिवर्तन की प्रक्रिया में हैं। म्यांमार में सेना का शासन है, पाकिस्तान में सरकार और सेना के बीच टकराव है, श्रीलंका अब भी आर्थिक संकट से जूझ रहा है, और बांग्लादेश में युवाओं के विद्रोह ने लोकतंत्र को झकझोर दिया है।इन सबके बीच नेपाल का यह आंदोलन दक्षिण एशिया में एक नई लहर पैदा कर सकता

है।इतिहास की दृष्टि से देखें तो श्रीलंका, पाकिस्तान और म्यांमार कभी अखंड भारत का हिस्सा रहे थे। आज वे दक्षिण एशिया का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और सभी देशों में एक जैसी राजनीतिक चुनौतियाँ दिखाई दे रही हैं, भ्रष्टाचार बेरोजगारी, परिवारवाद, लोकतांत्रिक संस्थाओं की कमजोरी और युवा असंतोष। यही वजह है कि नेपाल की घटनाएँ केवल एक देश की समस्या नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र की राजनीति के लिए चेतावनी हैं।

साथियों बात अगर हम नेपाल के घटनाक्रम नेपाल में सत्ता पलट का भारत पर सीधा प्रभाव पड़ना स्वाभाविक होने की करें तो, भारत और नेपाल के बीच गहरे सांस्कृतिक, आर्थिक और भौगोलिक संबंध हैं। दोनों देशों की खुली सीमा, व्यापार, पानी और ऊर्जा परियोजनाएँ भारत को नेपाल के साथ मजबूती से जोड़ती हैं।यदि नेपाल में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ती है तो इसका असर भारत की सुरक्षा, सीमावर्ती क्षेत्रों की शांति और आर्थिक हितों पर अवश्य पड़ेगा। चीन और पाकिस्तान जैसे देश नेपाल में बढ़ती अस्थिरता का फायदा उठाकर भारत विरोधी गतिविधियों को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इसलिए भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह नेपाल की स्थिरता और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को समर्थन दे।

साथियों बात अगर हम युवाओं के जागरूकता की करें तो नेपाल का यह विद्रोह यह भी दर्शाता है कि दक्षिण एशिया के युवाओं में अब जागरूकता का स्तर काफी बढ़ चुका है। वे केवल भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन तक सीमित नहीं हैं, बल्कि लोकतंत्र को पारदर्शी और जवाबदेह बनाने के लिए आगे आ रहे हैं। ₹नेपो बेबीस₹ और पारिवारिक राजनीति के खिलाफ उठी यह आवाज़ अब केवल नेपाल तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि बांग्लादेश, श्रीलंका, पाकिस्तान और यहाँ तक कि भारत में भी राजनीतिक वंशवाद के खिलाफ नई बहस को जन्म देगी।आगे चलकर नेपाल के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि यह जनआंदोलन केवल सत्ता पलट तक सीमित न रह जाए, बल्कि एक स्थायी और पारदर्शी व्यवस्था में बदल सके। यदि यह आंदोलन केवल भावनाओं के आधार पर चला और संस्थागत सुधारों तक नहीं पहुँचा, तो नेपाल बार-बार उसी राजनीतिक अस्थिरता का शिकार होगा जो पिछले तीन दशकों से जारी है। लेकिन यदि युवा इस ऊर्जा को सही दिशा देते हैं, तो नेपाल न केवल खुद को बदल सकता है बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के लिए प्रेरणा बन सकता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि नेपाल में युवाओं का आक्रोश, सत्ता पलट और दक्षिण एशिया की राजनीति-एक अंतरराष्ट्रीय विश्लेषणविश्व मेँ युवा पीढ़ी ही अपनें देश की राजनीति का भविष्य तय करने वाली है

नेपाल में भ्रष्टाचार व परिवारवाद के खिलाफ़ युवाओं क़े जबरदस्त आक्रोश को दुनियाँ के हर देश क़ो संज्ञान में लेना ज़रूरी हैं।

श्रद्धापूर्वक किया गया कार्य ही श्राद्ध है

रमेश सर्राफ धमोरा

श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धापूर्वक किया गया कार्य जिससे पितरों को शांति मिलती है। श्राद्ध की उत्पत्ति पूर्वजों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता से हुई है जिसकी शुरुआत वैदिक काल से मानी जाती है। महाभारत के अनुसार सबसे पहले महर्षि निमि ने अत्रि मुनि के उपदेश से श्राद्ध किया और यह परंपरा धीरे-धीरे प्रचलित हुई। पितृ दोष होने पर व्यक्ति को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है इसलिए पितृपक्ष में पितरों का स्मरण और पूजन करना आवश्यक है। हिंदू धर्म में पितृ पक्ष का विशेष महत्व है। पितृ पक्ष को श्राद्ध पक्ष के नाम से भी जाना जाता है। पितृ पक्ष में पितरों का श्राद्ध और तर्पण किया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार पितृ पक्ष के दौरान पितर संबंधित कार्य करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। इस पक्ष में विधि- विधान से पितर संबंधित कार्य करने से पितरों का आर्शावाद प्राप्त होता है।

श्राद्ध सूक्ष्म शरीरों के लिए वही काम करते हैं जो कि जन्म के पूर्व और जन्म के समय के संस्कार स्थूल शरीर के लिए करते हैं। इसलिए शास्त्र पूर्व जन्म के आधार पर ही कर्मकाण्ड में श्राद्धादि कर्म का विधान निर्मित करते हैं। सभी संस्कारों विवाह को छोडकर श्राद्ध ही ऐसा धार्मिक कृत्य है जिसे लोग पर्याप्त धार्मिक उत्साह से करते हैं। विवाह में बहुत से लोग कुछ विधियों को छोड़ भी देते हैं। परन्तु श्राद्ध कर्म में नियमों की अनदेखी नहीं की जाती है। क्योंकि श्राद्ध का मुख्य उद्देश्य परलोक की यात्रा की सुविधा करना है। भाद्रपद मास की पूर्णिमा से पितृ पक्ष शुरू होकर करीब 16 दिनों तक चलने वाले श्राद्ध में अश्विन मास की अमावस्या तक पितृ पृथ्वी पर वास करेंगे। इन 16 दिनों तक पितरों को प्रसन्न करने के लिए उन्हे यज्ञ, जल से तर्पण दिया जाएगा। इस दौरान पितरों की आत्मा की शांति के लिए जगह-जगह पिंडदान, नारायण बलि, जल तर्पण आदि कर्मकांड़ों से उन्हें प्रसन्न करने की कोशिश की जाती है।

आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक ब्रह्माण्ड की ऊर्जा तथा उस ऊर्जा के साथ पितृप्राण पृथ्वी पर व्याप्त रहता है। धार्मिक ग्रंथों में मृत्यु के बाद आत्मा की स्थिति का बड़ा सुन्दर और वैज्ञानिक विवेचन भी मिलता है। पुराणों के अनुसार पितृपक्ष में जो तर्पण किया जाता है उससे वह पितृप्राण स्वयं आप्यापित होता है। पुत्र या उसके नाम से उसका परिवार जौ तथा चावल का पिण्ड देता है। उसमें से अंश लेकर वह अम्भप्राण का ऋण चुका देता है। ठीक आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से वह चक्र उध्वमुख होने लगता है। 15 दिन अपना-अपना भाग लेकर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से पितर उसी ब्रह्मांडीय उर्जा के साथ वापस चले जाते हैं। इसलिए इसको पितृपक्ष कहते हैं और इसी पक्ष में श्राद्ध करने से पित्तरों को प्राप्त होता है।

श्राद्ध पितरों के प्रति श्रद्धा और कृतज्ञता अभिव्यक्त करने तथा उन्हें याद करने के निमित्त किया जाता है। इसके पीछे मान्यता है कि जिन पूर्वजों के कारण हम आज अस्तित्व में हैं। जिनसे गुण हमें विरासत में मिलें हैं। उनका हम पर न चुकाये जा सकने वाला ऋण हैं। पितरों की आत्मा की शांति के लिए पितृ पक्ष में जो तर्पण किया जाता है। उसके पीछे धार्मिक मान्यता है कि इससे पितरों को स्वर्ग प्राप्त होता है और उनकी आत्मा को शांति मिलती है। मंदिरों और नदियों के किनारे पितरों को तर्पण देने की सदियों से चली आ रही धार्मिक परम्परा आज भी अनवरत रूप से जारी है। श्राद्ध का अर्थ है श्रद्धा (सच्चा विश्वास और प्रेम) से किया जाने वाला कर्मकांड जो मृत पूर्वजों (पितरों) की आत्मा की शांति और तृप्ति के लिए किया जाता है। यह उनके प्रति कृतज्ञता, सम्मान और स्मरण भाव को व्यक्त करने का एक तरीका है, और इसके माध्यम से उन्हें संतुष्ट कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया जाता है।

श्राद्ध का वैज्ञानिक पहलू भी है। वेदों में, दर्शन शास्त्रों में, उपनिषदों एवं पुराणों आदि में हमारे ऋषियों-मनीषियों ने इस विषय पर विस्तृत विचार किया है। श्रीमद्भागवत गीता में भी स्पष्ट रूप से बताया गया है कि जन्म लेने वाले की मृत्यु और मृत्यु को प्राप्त होने वाले का जन्म निश्चित है। यह प्रकृति का नियम है। शरीर नष्ट होता है मगर आत्मा कभी भी नष्ट नहीं होती है। वह पुनः जन्म लेती है और बार-बार जन्म लेती है। इस पुनः जन्म के आधार पर ही कर्मकाण्ड में श्राद्धदि कर्म का विधान निर्मित किया गया है।

इसलिए हिंदू धर्म शास्त्रों में श्राद्ध करने का विशेष विधान बताया गया है। श्रद्धया इदं श्राद्धम, अर्थात जो श्रद्धा से किया जाये वही श्राद्ध है। श्राद्ध प्रथा वैदिक काल के बाद शुरू हुई और इसके मूल में इसी श्लोक की भावना है। उचित समय पर शास्त्र सम्मत विधि द्वारा पितरों के लिए श्रद्धा भाव से मन्त्रों के साथ जो दान-दक्षिणा आदि दिया जाय वही श्राद्ध कहलाता है। भाद्रपद मास की पूर्णिमा के दिन सूर्य के कन्या राशि में प्रवेश करने पर इस दिन इसे कनायत भी कहते हैं और इसी दिन से पितृ पक्ष शुरू होता है।

पुराणों में इसके आयोजन को लेकर कई कथाएं हैं। जिसमें कर्ण के पुनर्जन्म की कथा काफी प्रचलित है। हिन्दू धर्म में सर्वमान्य श्री रामचरित में भी श्री राम के द्वारा राजा दशरथ और जटायु को गोदावरी नदी पर जलांजलि देने का उल्लेख है। भरत के द्वारा दशरथ हेतु दशगात्र विधान का उल्लेख भरत कीन्हि दशगात्र विधाना तुलसी रामायण में हुआ है । भारतीय धर्मग्रंथों के अनुसार मनुष्य पर तीन प्रकार के ऋण प्रमुख माने गए हैं- पितृ ऋण, देव ऋण तथा ऋषि ऋण। इनमें पितृ ऋण सर्वोपरि है। पितृ ऋण में पिता के अतिरिक्त माता तथा वे सब बुजुर्ग भी सम्मिलित हैं, जिन्होंने हमें अपना जीवन धारण करने तथा उसका विकास करने में सहयोग दिया। पितृपक्ष में हिन्दू लोग मन कर्म एवं वाणी से संयम का जीवन जीते हैं। पितरों को स्मरण करके जल चढ़ाते हैं। निर्धनों एवं ब्राह्मणों को दान देते हैं।

विष्णु पुराण के अनुसार दरिद्र व्यक्ति केवल मोटा अन्न, जंगली साग, फल और न्यूनतम दक्षिणा यदि वह भी ना हो तो सात या आठ तिल अंजलि में जल के साथ लेकर ब्राह्मण को देना चाहिए या किसी गाय को दिन भर घास खिला देनी चाहिए। अन्यथा हाथ उठाकर दिक्पालों और सूर्य से याचना करनी चाहिए कि हे प्रभु मैंने हाथ वायु में फैला दिये हैं, मेरे पितर मेरी भक्ति से संतुष्ट हों। देश में श्राद्ध के लिए हरिद्वार, गंगासागर, जगन्नाथपुरी, कुरुक्षेत्र, चित्रकूट, पुष्कर, बद्रीनाथ सहित कई स्थानों को महत्वपूर्ण माना गया है। लेकिन गया का स्थान उसमें सर्वोपरि कहा गया है।

गया में फल्गु नदी के किनारे श्राद्ध कर्म करना सबसे ज्यादा पुण्य प्रदान करने वाला माना जाता है। जो व्यक्ति गया में श्राद्ध करने जाता है उसको पूरे पितृ पक्ष वहीं रह कर श्राद्ध क्रिया पूरी करनी पड़ती है। गया में पिंडदान करने से सात पीढियों का उद्धार हो जाता है। गया जी में पूरे साल पिंडदान किया जाता है। शास्त्रों में पितरों के लिए पितृपक्ष के दौरान पिंडदान करने का अलग महत्व बताया गया है। मान्यता है कि गया जी में श्राद्ध कर्मकांड सृष्टि के रचना काल से शुरू है। वायुपुराण, अग्निपुराण तथा रूढ पुराण में गया तीर्थ का वर्णन है। भगवान ब्रह्मा ने पृथ्वी पर आकर फल्गु नदी में प्रेतशिला पर पिंडदान किया था। त्रेता युग में भी भगवान श्रीराम भी अपने पिता राजा दशरथ के मरणोपरांत फल्गु नदी के तट पर श्राद्ध, तर्पण, पिंडदान, कर्मकांड को कर पितृऋण से मुक्त हुए थे। श्राद्ध महिमा में कहा गया है- 'आयुः पूजां धनं विद्यां स्वर्ग मोक्ष सुखानि च। प्रयच्छति तथा राज्यं पितरः श्राद्ध तर्पिता।।' - अर्थात जो लोग अपने पितरों का श्राद्ध श्रद्धापूर्वक करते हैं, उनके पितर संतुष्ट होकर उन्हें आयु, संतान, धन, स्वर्ग, राज्य मोक्ष व अन्य सौभाग्य प्रदान करते हैं।

नेपाल का ऑनलाइन लॉकडाउन: आज़ादी पर सवाल

नेपाल सरकार ने 26 बड़े सोशल मीडिया और संदेश भेजने वाले मंच—जिनमें फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और एक्स (पहले ट्विटर) शामिल हैं—को देश में बंद करने का आदेश दिया है। सरकार का तर्क है कि कंपनियों ने स्थानीय कार्यालय नहीं खोला और शिकायत निवारण व्यवस्था नहीं बनाई, जिससे अफवाहें और साइबर अपराध बढ़ रहे हैं। आलोचक इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला मानते हैं। इस कदम से आम नागरिक, परिवार, व्यापारी और सामग्री निर्माता प्रभावित होंगे। विशेषज्ञ सुझाव देते हैं कि पूर्ण प्रतिबंध की बजाय कंपनियों को नियमों का पालन कराने और जनता की आवाज़ सुरक्षित रखने वाला संतुलित समाधान बेहतर होगा।

--- डॉ प्रियंका सौरभ

नेपाल जैसे छोटे लोकतांत्रिक देश ने हाल ही में ऐसा बड़ा निर्णय लिया है जिसने पूरी दुनिया को चौंका दिया। सरकार ने 26 सोशल मीडिया और संदेश मंचों पर अचानक रोक लगाने का आदेश दिया। इसमें फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब और एक्स जैसे सबसे लोकप्रिय मंच शामिल हैं। यह फैसला जितना अचानक लिया गया, उतना ही गहरी बहस भी शुरू कर दी कि क्या यह कदम नागरिक अधिकारों पर हमला है या देश की डिजिटल सुरक्षा के लिए ज़रूरी था।

सरकार का कहना है कि सोशल मीडिया कंपनियों को पहले ही चेतावनी दी गई थी कि वे नेपाल में अपना स्थानीय कार्यालय खोलें, प्रतिनिधि नियुक्त करें और शिकायत निवारण की व्यवस्था सुनिश्चित करें। लेकिन कंपनियों ने इसका पालन नहीं किया। सरकार के अनुसार, इस कारण अफवाहें, भ्रामक खबरें और साइबर अपराध तेजी से बढ़ रहे थे। इसे रोकने के लिए ही यह बड़ा कदम उठाया गया।

लेकिन इस फैसले का विरोध भी तेजी से हो रहा है। पत्रकार संगठन, मानवाधिकार समूह और आम नागरिक इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला मान रहे हैं। उनका तर्क है कि सोशल मीडिया केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि यह अब नागरिकों की आवाज़ और लोकतंत्र का आधार बन चुका है। जब इतने बड़े स्तर पर मंच बंद कर दिए जाएंगे, तो जनता की संवाद और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर गहरा असर पड़ेगा।

नेपाल में लाखों परिवार ऐसे हैं जिनके सदस्य विदेशों में काम कर रहे हैं। उनके लिए व्हाट्सएप और फेसबुक ही परिवार से जुड़े रहने का सबसे आसान माध्यम हैं। इस प्रतिबंध से उनकी रोज़मर्रा की ज़िंदगी

कठिन हो जाएगी। यही नहीं, छोटे व्यापारी और ऑनलाइन कारोबार करने वाले लोग भी सोशल मीडिया के माध्यम से ग्राहकों तक पहुँचते थे। इंस्टाग्राम, यूट्यूब और फेसबुक पर विज्ञापन देकर वे अपने उत्पाद बेचते थे। अब यह सब प्रभावित होगा। हज़ारों सामग्री निर्माता और यूट्यूबर, जो सोशल मीडिया से अपनी रोज़ी-रोटी चला रहे थे, अचानक बेरोज़गार होने की कगार पर पहुँच गए हैं। युवाओं में निराशा और असंतोष बढ़ रहा है। यह केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि डिजिटल रोजगार पर भी बड़ा झटका है।

राजनीतिक दृष्टि से भी यह निर्णय नेपाल सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। विपक्ष इसे तानाशाही कदम मान रहा है। उनका कहना है कि सरकार आलोचना और सवालों से डर रही है, इसलिए उसने सोशल मीडिया पर रोक लगा दी। लोकतंत्र की असली ताकत जनता की आवाज़ में है। जब उस आवाज़ को दबाया जाता है, तो लोकतंत्र कमज़ोर पड़ जाता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नेपाल की छवि प्रभावित होगी। निवेशक और डिजिटल कंपनियाँ यह सोचेंगी कि नेपाल का डिजिटल माहौल स्थिर और सुरक्षित नहीं है। इससे निवेश और साझेदारी पर असर पड़ेगा। पर्यटक भी नाखुश हो सकते हैं, क्योंकि आज यात्रा, संचार और जानकारी का बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया पर आधारित है।

सरकार का तर्क बिल्कुल गलत नहीं है। सोशल मीडिया पर अफवाहें, फर्जी खबरें और साइबर अपराध तेजी से फैल रहे हैं। इससे सामाजिक तनाव और हिंसा भी भड़क सकती है। सरकार को यह हक़ है कि वह नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करे और कंपनियों को जिम्मेदार बनाए। लेकिन समस्या का हल सीधे मंचों को बंद करना नहीं होना चाहिए।

दुनिया के कई देशों ने सोशल मीडिया कंपनियों पर नियम लागू किए हैं। भारत ने 2021 में नए सूचना प्रौद्योगिकी नियम बनाए, जिनमें कंपनियों को शिकायत अधिकारी नियुक्त करना और सामग्री पर तुरंत कार्रवाई करना अनिवार्य किया गया। यूरोपियन संघ ने भी डिजिटल सेवा कानून लागू किया। लेकिन कहीं भी इस तरह का पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाया गया। नेपाल का कदम इसलिए कठोर और जल्दबाज़ी भरा लगता है।

समाधान यही है कि सरकार कंपनियों से बातचीत करे, उन पर जुर्माना लगाए और नियमों का पालन करने के लिए दबाव बनाए। जनता की आवाज़ को पूरी तरह रोकना सही तरीका नहीं है। यह न केवल लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ है बल्कि जनता और सरकार के बीच अविश्वास भी बढ़ाएगा।

भविष्य में नेपाल को संतुलन की राह चुननी होगी। उसे समझना होगा कि सोशल मीडिया अब केवल तकनीकी साधन नहीं है, बल्कि लोगों की ज़िंदगी का अहम हिस्सा बन चुका है। इसे बंद करना लोगों की स्वतंत्रता और संवाद दोनों पर चोट है। बेहतर होगा कि सरकार कंपनियों को सख्त नियमों के दायरे में रखे, लेकिन नागरिकों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुरक्षित भी रहे।

लोकतंत्र की असली ताकत जनता का भरोसा है। यह भरोसा तभी बनता है जब सरकार जनता से संवाद करेगी, न कि उसकी आवाज़ को दबाएगी। नेपाल को चाहिए कि वह अपने इस फैसले पर पुनर्विचार करे और ऐसा रास्ता अपनाए जिससे कानून का पालन भी हो और नागरिकों की स्वतंत्रता भी सुरक्षित रहे। यही सही लोकतांत्रिक समाधान है।

नेपाल की यह घटना पूरे विश्व के लिए भी सीख है। यह दिखाती है कि डिजिटल दुनिया में नियमों और स्वतंत्रता के बीच संतुलन बनाना कितना महत्वपूर्ण है। एक ओर सुरक्षा, अफवाहों और अपराधों पर नियंत्रण की ज़रूरत है, तो दूसरी ओर जनता की अभिव्यक्ति और संवाद की स्वतंत्रता का सम्मान भी उतना ही आवश्यक है। यदि यही संतुलन मिल जाता है, तो लोकतंत्र मज़बूत रहेगा और डिजिटल दुनिया का लाभ सभी को मिलेगा।

नेपाल के निर्णय ने यह स्पष्ट किया है कि सरकारें डिजिटल दुनिया में सही कदम उठाने के लिए ज़िम्मेदार हैं, लेकिन इस ज़िम्मेदारी का मतलब जनता की आवाज़ पर अंकुश लगाना नहीं होना चाहिए। हर लोकतंत्र में नागरिकों की स्वतंत्रता सर्वोपरि है। इसलिए नेपाल को चाहिए कि वह कानून की कठोरता और लोगों की स्वतंत्रता के बीच सही संतुलन बनाए और सोशल मीडिया को केवल प्रतिबंध का शिकार न बनने दे।

अंततः यह निर्णय एक चेतावनी भी है कि सोशल मीडिया का महत्व अब केवल मनोरंजन या सूचना तक सीमित नहीं है। यह लोकतंत्र, रोजगार, सामाजिक संवाद और वैश्विक पहचान का अहम हिस्सा बन चुका है। इसे सही ढंग से नियंत्रित करना, नियम लागू करना और नागरिकों की आवाज़ सुरक्षित रखना ही भविष्य की दिशा है।

नेपाल को चाहिए कि वह इस निर्णय का पुनर्विचार करे और ऐसा समाधान निकाले जो कानून का पालन सुनिश्चित करे, अफवाहों और साइबर अपराध पर रोक लगाए, और साथ ही जनता की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को भी सुरक्षित रखे। यही लोकतंत्र की सच्ची ताकत है।

ओडिशा सूचना आयोग की सुनवाई में घोर लापरवाही, उच्च न्यायालय ने कई नोटिस जारी किए

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वर : ओडिशा सूचना आयोग पर घोर लापरवाही, मामलों को मनमाने ढंग से खारिज करने, कानून की अनदेखी, कानूनी प्रावधानों की गलत व्याख्या और यहाँ तक कि उचित आदेश दर्ज न कर पाने के आरोप लगाए गए हैं। ओडिशा उच्च न्यायालय ने इस मामले का संज्ञान लिया है और कई याचिकाओं में आयोग को नोटिस जारी किए हैं।

2021 में, प्रदीप प्रधान ने भुवनेश्वर तहसीलदार कार्यालय द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत सूचना देने से इनकार किए जाने के बाद आयोग के समक्ष दूसरी अपील दायर की थी। तीन साल बाद, मुख्य सूचना आयुक्त ने 26.06.2025 को मामले की सुनवाई की। आयोग ने केवल जन सूचना अधिकारी को सूचना उपलब्ध कराने का निर्देश दिया और मामले को बंद कर दिया, बिना यह जांचे कि सूचना तीन साल तक क्यों रोकी गई या अनुपालन के लिए कोई समय-सीमा तय किए। जब प्रधान को दो महीने बाद भी सूचना नहीं मिली, तो उन्होंने आयोग के आदेश को उच्च न्यायालय में चुनौती दी। शिकायत याचिका (सी) संख्या 22278/2025 की सुनवाई करते हुए, न्यायालय ने सूचना आयोग और भुवनेश्वर तहसीलदार, दोनों को नोटिस जारी किए।

इसी प्रकार, 2021 में, पूर्ण नायक ने पुरी कलेक्टर कार्यालय से सूचना मांगी थी। जब सूचना नहीं मिली, तो उन्होंने आयोग का रुख किया। हालाँकि, मामले की सुनवाई किए बिना, मुख्य सूचना आयुक्त ने नायक को नोटिस जारी किए बिना ही, 09.05.2025 को शिकायत संख्या 64/2021 को मनमाने ढंग से खारिज कर दिया। व्यथित होकर, नायक ने उच्च न्यायालय का रुख किया। शिकायत याचिका (सी) संख्या 15672/2025 की सुनवाई करते हुए, न्यायालय ने आयोग को नोटिस जारी किया और सुनवाई की अगली तारीख 13.10.2025 तय की।

एक अन्य मामले में, बबीना जेना ने पुरी जिले में प्राथमिक सहकारी समितियों के माध्यम से महिलाओं को दिए गए ऋणों के बारे में विवरण मांगा। जब जन सूचना अधिकारी ने दावा किया कि सहकारी समितियाँ आरटीआई अधिनियम के अंतर्गत नहीं आतीं, तो जेना ने आयोग के समक्ष दूसरी अपील दायर कर जन सूचना अधिकारी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की। हालाँकि, सूचना आयुक्त जगन्नाथ रथ ने यह गलत निष्कर्ष निकालते हुए मामला बंद कर दिया कि सहकारी समितियाँ आरटीआई के अंतर्गत नहीं आतीं, और जेना के इस तर्क को नज़रअंदाज़ कर दिया कि सूचना पुरी स्थित सहकारी समितियों के सहायक रजिस्ट्रार (एआरसीएस) से मांगी गई थी। जेना ने उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया, जिसने 03.09.2025 को डब्ल्यू.पी.(सी) संख्या 22828/2025 में आयोग और एआरसीएस, पुरी दोनों को नोटिस जारी किए।

ये मामले उच्च न्यायालय में अधिवक्ता अखंड द्वारा चलाए जा रहे हैं। आयोग द्वारा आरटीआई अधिनियम के बार-बार उल्लंघन के कारण, अधिक से अधिक नागरिक अपने सूचना के अधिकार के लिए न्यायिक हस्तक्षेप की मांग करने के लिए मजबूर हो रहे हैं।

खाद की कालाबाजारी के खिलाफ सरकार का सख्त रुख

मनोरंजन सासमल , वरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर– झारसुगुड़ा के किरमिरा में यूरिया खाद की कालाबाजारी की शिकायत के बाद विभागीय टीम ने तुरंत कार्रवाई की है। रात में छापेमारी कर इस अवैध कारोबार का भंडाफोड़ किया गया और खाद जब्त कर प्राथमिकी भी दर्ज की गई है। स्थानीय किसानों की शिकायत के बाद झारसुगुड़ा जिला मुख्य कृषि अधिकारी, प्रखंड कृषि अधिकारी और उर्वरक निरीक्षक संबंधित पैक्स पहुँचे। पता चला कि किरमिरा पैक्स का समिति सचिव इसमें शामिल है। पता चला है कि वह 26 बोरी यूरिया खाद अवैध रूप से बेच रहा है। तहसीलदार की मौजूदगी में संपादक के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई गई है।

गौरतलब है कि राज्य भर में प्रवर्तन कार्रवाई जारी है। सरकार द्वारा कालाबाजारी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जा रही है। कृषि विभाग किसानों को उचित मूल्य पर खाद उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

बीजू जनता दल भंग हो जायेगा, नई बीजद का गठन होगा : अमर सतपथी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : बीजू जनता दल के पूर्व नेता अमर शतपथी ने बीजू जनता दल को लेकर बड़ा बयान दिया है। अब पार्टी जनता और कार्यकर्ताओं से दूर होती जा रही है। अमर शतपथी ने कहा कि बीजद के लोग ही नई पार्टी बनाएंगे। इसी तरह, उन्होंने आगे कहा कि बीजद में अभी जो हो रहा है, अगर पार्टी विशिष्ट नीतियों और विचारधारा के अनुसार नहीं चलती है, तो और भी ज़्यादा नेता और कार्यकर्ता पार्टी से दूर होते जाएँगे।इसी तरह, बीजद में कौन होगा, इस सवाल पर अमर सतपती ने कहा, अब कौन बताएगा कि वह गुपचुप तरीके से बढ़ रहे हैं या मथुरा आ चुके हैं? कल पूर्व सांसद अमतागत सतपती ने भी इस ओर इशारा किया था। आज वरिष्ठ नेता अमर सतपती ने तथागत की बातों का समर्थन किया। हालाँकि, अमर के इस बयान के बाद बीजद की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।

ट्रंप का नरम रुख, मोदी का दृढ़ जवाब: रिश्तों का नया अध्याय

कुछ महीनों पहले तक भारत-अमेरिका संबंधों में तनाव की सर्द हवाएं बह रही थीं। डोनाल्ड ट्रंप के 50% टैरिफ की धमकी और रूस से तेल खरीदने की आलोचना ने दोनों देशों के बीच दरार पैदा की थी। लेकिन अब माहौल बदल रहा है। ट्रंप के हालिया बयानों में दोस्ती और सहयोग का स्वर गूंज रहा है, और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इस सकारात्मक बदलाव का स्वागत करते हुए द्विपक्षीय रिश्तों को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प जताया है। यह बदलाव न केवल कूटनीतिक दृष्टि से अहम है, बल्कि वैश्विक मंच पर दोनों देशों के रणनीतिक हितों को अभूतपूर्व मजबूती प्रदान करता है।

6 सितंबर को व्हाइट हाउस में पत्रकारों से बातचीत में ट्रंप ने भारत-अमेरिका संबंधों को ₹अनन्य और विशेष₹ करार दिया। उन्होंने कहा, ₹मैं हमेशा मोदी का दोस्त रहूंगा। वह एक असाधारण नेता हैं।₹ यह बयान उस समय आया जब कुछ दिन पहले ट्रंप ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) समिट की एक तस्वीर साझा करते हुए कहा था, ₹लगता है हमने भारत और रूस को चीन के हाथों खो दिया है।₹ इस टिप्पणी ने दोनों देशों के रिश्तों पर सवाल खड़े किए थे, लेकिन ट्रंप का ताजा बयान उस आलोचना को पीछे छोड़ता नजर आता है। 10 सितंबर को ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया मंच पर लिखा, ₹मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि भारत-अमेरिका के बीच व्यापारिक बाधाओं को हटाने के लिए वार्ताएं पुनः शुरू होंगी। मैं अपने प्रिय मित्र, प्रधानमंत्री मोदी से संवाद के लिए उत्साहित हूं।₹ यह बयान न केवल उनके नरम रुख को दर्शाता है, बल्कि रिश्तों को मजबूत करने की उनकी दृढ़ इच्छा को भी रेखांकित करता है।

प्रधानमंत्री मोदी ने इस सकारात्मक संदेश का त्वरित और उत्साहपूर्ण जवाब दिया। उन्होंने एक्स पर लिखा, ₹भारत और अमेरिका अटूट मित्रता और स्वाभाविक साझेदारी से बंधे हैं। मुझे विश्वास है कि हमारी व्यापार वार्ताएं दोनों देशों के रिश्तों की अपार संभावनाओं को साकार करेंगी।₹ मोदी का यह जवाब न केवल ट्रंप की भावनाओं की सराहना करता है, बल्कि भारत की उस कूटनीतिक नीति को भी रेखांकित करता है जो आपसी सम्मान, संयम और पारस्परिक लाभ पर टिकी है। भारत ने ट्रंप की आलोचनाओं का हमेशा धैर्य और तर्कपूर्ण जवाब दिया, जिसने इस कूटनीतिक सौहार्द को संभव बनाया।

भारत और अमेरिका के बीच संबंधों का इतिहास उतार-चढ़ाव से भरा रहा है, फिर भी दोनों देशों ने आपसी हितों को मजबूत करने की दिशा में हमेशा प्रयास किए हैं। फरवरी 2025 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अमेरिका यात्रा ने इस रिश्ते को नया आयाम दिया, जब दोनों देशों ने रक्षा, व्यापार, प्रौद्योगिकी और ऊर्जा क्षेत्रों में सहयोग को और गहरा करने का संकल्प लिया। व्हाइट हाउस में हुई चर्चा के दौरान ₹21वीं सदी के लिए यूएस-इंडिया

कॉम्पैक्ट₹ की शुरुआत हुई, जो सैन्य साझेदारी और व्यापारिक सहयोग को अभूतपूर्व स्तर तक ले जाने का एक साहसिक कदम था। हालांकि, अगस्त 2025 में ट्रंप द्वारा भारत पर 50% टैरिफ और व्यापार वार्ताओं को रोकने के फैसले ने तनाव पैदा किया। अब ट्रंप का बदला हुआ सौहार्दपूर्ण रुख इस रिश्ते को नई गति देने का संकेत है।

ट्रंप के इस नरम रवैये के पीछे कई ठोस कारण हैं। पहला, भारत की वैश्विक भू-राजनीतिक स्थिति। भारत न केवल एक उभरती आर्थिक महाशक्ति है, बल्कि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में अमेरिका का अपरिहार्य रणनीतिक साझेदार भी है। दूसरा, अमेरिका की आंतरिक राजनीति और वैश्विक व्यापार नीतियों का दबाव। भारत पर टैरिफ और रूस से तेल खरीदने की आलोचना ने तनाव बढ़ाया था, लेकिन अब ट्रंप को यह स्पष्ट हो रहा है कि भारत जैसे मजबूत साझेदार को नजरअंदाज करना अमेरिकी हितों के लिए नुकसानदेह हो सकता है। तीसरा, भारत की स्वतंत्र और संतुलित विदेश नीति, जो न तो पूरी तरह पश्चिम की ओर झुकती है और न ही पूर्व की, ने ट्रंप को लचीला रुख अपनाने के लिए प्रेरित किया है।

भारत ने इस पूरे घटनाक्रम में अपनी कूटनीतिक परिपक्वता और रणनीतिक दूरदर्शिता का परिचय दिया। ट्रंप की आलोचनाओं के जवाब में भारत ने न तो उग्र प्रतिक्रिया दी और न ही दबाव में झुका। प्रधानमंत्री मोदी ने दृढ़ता से स्पष्ट किया कि भारत अपने राष्ट्रीय हितों—खासकर किसानों और ऊर्जा जरूरतों—से कोई समझौता नहीं करेगा। भारत की यह नीति, जो संयम और आत्मविश्वास का अनूठा संगम है, ने ट्रंप को अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया।

आगामी हफ्तों में भारत और अमेरिका के बीच व्यापार वार्ताएं पुनः शुरू होने की संभावना है। अगले सप्ताह भारतीय प्रतिनिधिमंडल अमेरिका का दौरा करेगा ताकि व्यापारिक बाधाओं को दूर किया जा सके। वहीं, 17-18 सितंबर को अमेरिकी प्रतिनिधिमंडल भारत आएगा, जो छह पी8आई एंटी-सबमरीन वॉरफेयर एयरक्राफ्ट और 113 जीई-404 विमान इंजनों की खरीद पर चर्चा करेगा। ये कदम दोनों देशों के बीच रक्षा और व्यापार सहयोग को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे।

विशेषज्ञों का मानना है कि ट्रंप का यह सकारात्मक रुख भारत-अमेरिका संबंधों में एक नए युग की शुरुआत का प्रतीक है। भारत की संतुलित और दृढ़ कूटनीति ने रिश्तों को पटरी पर लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यदि दोनों देश व्यापारिक बाधाओं को दूर करने और रणनीतिक साझेदारी को मजबूत करने में सफल होते हैं, तो यह न केवल द्विपक्षीय संबंधों के लिए, बल्कि वैश्विक स्थिरता और समृद्धि के लिए भी एक ऐतिहासिक कदम होगा। दो महान लोकतंत्रों, भारत और अमेरिका का एकजुट होकर काम करना वैश्विक चुनौतियों से निपटने में अभूतपूर्व प्रभाव डाल सकता है। ट्रंप का नरम रुख और मोदी का उत्साहपूर्ण जवाब इस दिशा में एक प्रेरक और आशाजनक शुरुआत है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

दुर्लभ पृथ्वी तत्व खनन, खनिज और सामग्री हब में ईंधन नवाचार

विजय गर्ग

पृथ्वी के दुर्लभ तत्व, जिन्हें अक्सर आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स के ₹विटामिन₹ कहा जाता है, आज के डिजिटल, ऑप्टो-इलेक्ट्रॉनिक्स और हरित-ऊर्जा उद्योगों को रेखांकित करते हैं। 1794 में फिनिश केमिस्ट जोहान गाडोलिन द्वारा खोजा गया, उनका ₹दुर्लभ₹ पदनाम कमी के बजाय असमान भौगोलिक वितरण और निष्कर्षण चुनौतियों को दर्शाता है। IUPAC आवधिक तालिका के एफ-ब्लॉक के भीतर REE को वर्गीकृत करता है, जिसमें 15 लैंथेनाइड्स (परमाणु संख्या 57-71) शामिल हैं, साथ ही स्कैंडियम और यट्रियम भी है।

भारत वैश्विक खनन परिदृश्य में, विशेष रूप से दुर्लभ पृथ्वी तत्वों (आरईई) में, उन्नत प्रौद्योगिकियों के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक खनिजों में एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में खुद को स्थिति में रखते हुए लगातार एक विकट स्थिति बना रहा है।

राजस्थान के सिरोही और भीलवाड़ा जिलों में हाल ही में अन्वेषण, नियोडिमियम को लक्षित करते हुए - एक महत्वपूर्ण आरईई - इलेक्ट्रॉनिक्स, रक्षा, एयरोस्पेस और स्वच्छ ऊर्जा वाले अनुप्रयोगों के लिए इन खनिजों का उपयोग करने की भारत की क्षमता को प्रदर्शित करता है। यह प्रगति दूरदर्शी अनुसंधान और विकास, स्टार्ट-अप, सार्वजनिक बुनियादी ढांचे जैसे उत्कृष्टता केंद्र, विषयगत खनन पार्क और नवाचार योजनाओं के संयोजन से एक समग्र दृष्टिकोण से उपजी है। साथ में, ये पहल सरकारी एजेंसियों, उद्योग, शिक्षा और उद्यमियों के बीच सहयोग को बढ़ावा देती हैं, जिससे भारत को वैश्विक 3M हब - खनन, खनिज और सामग्री के रूप में उभरने का मार्ग प्रशस्त होता है।

पृथ्वी के दुर्लभ तत्व, जिन्हें अक्सर आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स के ₹विटामिन₹ कहा जाता है, आज के डिजिटल, ऑप्टो-इलेक्ट्रॉनिक्स और हरित-ऊर्जा उद्योगों को रेखांकित करते हैं।

1794 में फिनिश केमिस्ट जोहान गाडोलिन द्वारा खोजा गया, उनका ₹दुर्लभ₹ पदनाम कमी के बजाय असमान भौगोलिक वितरण और निष्कर्षण चुनौतियों को दर्शाता है। IUPAC आवधिक तालिका के एफ-ब्लॉक के भीतर REE को वर्गीकृत करता है, जिसमें 15 लैंथेनाइड्स (परमाणु संख्या 57-71) शामिल हैं, साथ ही स्कैंडियम और यट्रियम भी है।

उन्हें आगे लाइट रेयर अर्थ एलिमेंट्स और हैवी रेयर अर्थ एलिमेंट्स में वर्गीकृत किया गया है, जो उनके इलेक्ट्रॉनिक कॉन्फ़िगरेशन और भौतिक गुणों द्वारा प्रतिष्ठित हैं। भारत के वैज्ञानिक संस्थान सक्रिय रूप से इन संसाधनों का मानचित्रण और मूल्यांकन कर रहे हैं।

उदाहरण के लिए, हैदराबाद में सीएसआईआर-नेशनल जियोफिजिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट (एनजीआरआई) ने आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले में महत्वपूर्ण एलआरई जमा की पहचान की है। LREEs - लैंथेनम, सेरियम, प्रसियोडिमियम, नियोडिमियम, यट्रियम, हैफनियम, टैंटलम, नियोबियम, जिरकोनियम और स्कैंडियम सहित - कम ऊर्जा की खपत, थर्मल स्थिरता, स्थायित्व, चमकदार तीव्रता और रंग निर्धारण जैसे गुणों के कारण आधुनिक उद्योगों में अपरिहार्य हैं। ये विशेषताएं उन्हें इलेक्ट्रॉनिक्स, मोटर वाहन, औद्योगिक मशीनरी, एयरोस्पेस और रक्षा अनुप्रयोगों के लिए आवश्यक बनाती हैं।

उनके रणनीतिक मूल्य को पहचानते हुए, भारत सरकार ने कई आगे की पहल लागू की है।

राष्ट्रीय खनिज मिशन नवाचार को प्रोत्साहित करता है, निष्कर्षण और प्रसंस्करण की सुविधा देता है, खनिज पार्कों को बढ़ावा देता है, और रीसाइक्लिंग का समर्थन करता है, विशेष रूप से ई-कचरा। यह पेटेंट विकास, क्षमता निर्माण और युवा रोजगार को भी चलाता है। इसे पूरा करते हुए, खनिज आउटरीच फोरम सरकारी एजेंसियों, उद्योग हितधारकों, स्टार्ट-अप और शिक्षा के बीच अंतराल को बढ़ावा देता है, एक ₹मेक इन माइनिंग इंडिया₹ पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देता है।

जिला खनिज नींव खनन प्रभावित क्षेत्रों में स्थायी और जिम्मेदार विकास सुनिश्चित करती है।

अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र दुर्लभ पृथ्वी तत्वों में भारत की महत्वाकांक्षाओं के केंद्र में हैं। स्वच्छ ऊर्जा, मोटर वाहन, एयरोस्पेस और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों सहित महत्वपूर्ण खनिज उभरते क्षेत्रों को रेखांकित करते हैं।

आईआईटी बॉम्बे, आईआईटी हैदराबाद, आईआईटी-आईएसएम धनबाद, आईआईटी रुड़की, सीएसआईआर-आईएमएमटी भुवनेश्वर, सीएसआईआर-एनएमएल जमशेदपुर और एनएफटीडीसी हैदराबाद जैसे संस्थानों में राष्ट्रीय महत्वपूर्ण खनिज मिशन के तहत स्थापित उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) सरकार, उद्योग, एमएसएमई और निवेशकों में सहयोग को बढ़ावा देने के लिए हब एंड स्पोक मॉडल में काम करते हैं। ये पहल भारत के आत्मानबीर भारत और विक्सित @ 2047 के व्यापक लक्ष्यों का समर्थन करती हैं।

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रॉक मैकेनिक्स, नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर इंटरडिसिप्लिनरी साइंस एंड टेक्नोलॉजी (तिरुवनंतपुरम), नेशनल मेटलर्जिकल लेबोरेटरी (जमशेदपुर), नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी (नई दिल्ली), इंस्टीट्यूट ऑफ मिनरल्स एंड मैटेरियल टेक्नोलॉजी (भुवनेश्वर) और सेंट्रल इंस्टीट्यूट सहित अन्य राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान खनन और ईंधन अनुसंधान (धनबाद), महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से, नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर इंटरडिसिप्लिनरी साइंस एंड टेक्नोलॉजी और इंडियन काउंसिल फॉर मेडिकल रिसर्च के बीच सहयोग ने बायोडिग्रेडेबल मैग्नीशियम-आधारित प्रत्यारोपण के लिए दुर्लभ पृथ्वी फॉस्फेट कोटिंग्स विकसित की हैं, जो औद्योगिक अनुप्रयोगों से परे आरईई की क्षमता का प्रदर्शन करती हैं।

अनुसंधान और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में तेजी लाने के लिए, खान मंत्रालय ने खनन उन्नति के लिए सत्यभामा पोर्टल - विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लिए आत्मानबीर भारत का शुभारंभ किया। नागपुर में जवाहरलाल नेहरू एल्युमिनियम रिसर्च डेवलपमेंट एंड डिज़ाइन सेंटर (JNARDDC) जैसे संस्थानों के साथ सहयोगात्मक प्रयास, टिकाऊ बायोलीचिंग तकनीकों को बढ़ावा देते हुए एल्यूमिना डिस्प्ले से यूरोपियम की वसूली और अयस्कों से नियोबियम और टैंटालम सहित आरईई निष्कर्षण तकनीकों को आगे बढ़ा रहे हैं।

उद्यमिता भारत के खनन पारिस्थितिकी तंत्र का अभिन्न अंग है। भारतीय दुर्लभ पृथ्वी लिमिटेड, परमाणु ऊर्जा विभाग के तहत, BARC द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों का व्यवसायीकरण करने, स्टार्ट-अप और इनोवेटर्स का समर्थन करने के लिए भोपाल में दुर्लभ पृथ्वी धातु और टाइटेनियम थीम पार्क विकसित कर रहा है। बायोलीचिंग, बायोसोरप्शन और पाइरोमेटलर्जिकल प्रक्रियाओं के माध्यम से ई-वेस्ट रीसाइक्लिंग आपूर्ति श्रृंखला और पर्यावरणीय चुनौतियों दोनों को संबोधित करता है।

इस क्षेत्र की वृद्धि रासायनिक इंजीनियरिंग, सामग्री विज्ञान और धातुकर्म इंजीनियरिंग में कुशल पेशेवरों की मांग को बढ़ावा दे रही है। खनन अनुसंधान में एआई, स्वचालन, सेंसर, छवि प्रसंस्करण और मशीन लर्निंग जैसी उभरती प्रौद्योगिकियां तेजी से लागू होती हैं।

विश्वविद्यालय और तकनीकी संस्थान छात्रों को सिमुलेशन और डिजाइन के लिए MATLAB, Simulink, Rockscience, और AnyLogic जैसे उपकरणों से लैस कर रहे हैं। कौशल पहल व्यापक हैं: IREL तमिलनाडु प्रशिक्षुता प्रदान करता है, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ रॉक मैकेनिक्स अंतरराष्ट्रीय भागीदारों को प्रशिक्षित करता है, और राष्ट्रीय कौशल विकास निगम ने एक खनन क्षेत्र कौशल परिषद की स्थापना की है। उद्योग 4.0 और 5.0 प्रौद्योगिकियां - जिसमें एआई, डिजिटल जुड़वाँ, एआर / वीआर, और मेटावर्स शामिल हैं - प्रशिक्षण, परिचालन दक्षता और नवाचार को बढ़ाते हैं। एनपीटीईएल जैसे प्लेटफॉर्म खनिज संसाधनों, खनन मशीनरी, स्वचालन, डेटा एनालिटिक्स और ई-कचरा प्रबंधन में पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं, जबकि अटल टिंकरिंग लैब्स IoT, 3D प्रिंटिंग और रोबोटिक्स-संचालित नवाचार को प्रोत्साहित करते हैं।

आगे देखते हुए, भारत REE अनुसंधान, विकास और प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण पर केंद्रित एक आत्मनिर्भर खनन पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहा है।

मोहाली में भारतीय सेमीकंडक्टर मिशन के भारत निर्मित चिप्स का शुभारंभ उच्च तकनीक आत्मनिर्भरता के लिए तत्परता का प्रदर्शन करता है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग कौशल पहल को मजबूत करेंगे, वैश्विक क्षमता केंद्र स्थापित करेंगे और भविष्य के उद्योग की मांगों के लिए एक प्रतिभा पूल तैयार करेंगे।

खनन, दुर्लभ पृथ्वी तत्वों और तकनीकी नवाचार पर भारत का रणनीतिक ध्यान एक साहसिक दृष्टि को दर्शाता है: विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी, भविष्य के लिए तैयार खनन केंद्र के रूप में उभरने के लिए।

अन्वेषण, अनुसंधान, उद्यमिता, स्थिरता और कौशल विकास के माध्यम से, भारत 2047 तक खनिजों और सामग्रियों में एक वैश्विक नेता बनने के इच्छुक अपनी तकनीकी और औद्योगिक महत्वाकांक्षाओं को चलाने के लिए एक मजबूत नींव रख रहा है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

रक्त कोलेस्ट्रॉल बनाम मस्तिष्क कोलेस्ट्रॉल: स्मृति और स्वास्थ्य पर क्या अंतर और इसका प्रभाव है

विजय गर्ग

रक्त कोलेस्ट्रॉल और मस्तिष्क कोलेस्ट्रॉल दो अलग-अलग प्रणालियां हैं, प्रत्येक समग्र स्वास्थ्य में अपनी भूमिका के साथ, और स्मृति और स्वास्थ्य पर उनके प्रभाव अलग-अलग हैं। जबकि वे दोनों एक ही अणु के रूप हैं, रक्त-मस्तिष्क बाधा की उपस्थिति के कारण उन्हें अलग से विनियमित किया जाता है। रक्त कोलेस्ट्रॉल

यह क्या है: कोलेस्ट्रॉल आपके रक्तप्रवाह में पाया जाता है, लिपोप्रोटीन द्वारा ले जाया जाता है। दो मुख्य प्रकार कम घनत्व वाले लिपोप्रोटीन (एलडीएल) कोलेस्ट्रॉल (₹खराब₹ कोलेस्ट्रॉल) और उच्च घनत्व वाले लिपोप्रोटीन (एचडीएल) कोलेस्ट्रॉल (₹अच्छा₹ कोलेस्ट्रॉल) हैं।

स्रोत: यह यकृत द्वारा निर्मित होता है और आपके द्वारा खाए जाने वाले खाद्य पदार्थों से प्राप्त होता है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव: एलडीएल कोलेस्ट्रॉल के उच्च स्तर से आपकी धमनियों में पट्टिका का निर्माण हो सकता है, एथेरोस्क्लेरोसिस नामक स्थिति। यह रक्त वाहिकाओं को संकीर्ण या अवरुद्ध कर सकता है, मस्तिष्क और हृदय सहित अंगों में रक्त के प्रवाह को प्रतिबंधित कर सकता है। यह दिल का दौरा और स्ट्रोक जैसे हृदय रोगों के लिए एक प्रमुख जोखिम कारक है।

मेमोरी और मस्तिष्क स्वास्थ्य पर प्रभाव:

संज्ञानात्मक गिरावट: उच्च रक्त कोलेस्ट्रॉल, विशेष रूप से मिडलाइफ में उच्च एलडीएल, बाद में जीवन में संज्ञानात्मक गिरावट और मनोभ्रंश के बढ़ते जोखिम से जुड़ा हुआ है।

संवहनी मनोभ्रंश: भरा धमनियों के कारण मस्तिष्क में कम रक्त प्रवाह संवहनी मनोभ्रंश, मस्तिष्क रक्त वाहिकाओं को नुकसान के कारण मनोभ्रंश का एक प्रकार के लिए नेतृत्व कर सकते हैं।

एमिलॉयड प्लेक्स: रक्त में उच्च कोलेस्ट्रॉल मस्तिष्क में एमिलॉयड प्रोटीन के निर्माण में भी योगदान कर सकता है, जो अल्जाइमर रोग की पहचान है। मस्तिष्क कोलेस्ट्रॉल

यह क्या है: कोलेस्ट्रॉल जो मस्तिष्क के भीतर बनाया और निहित है। यह रक्त कोलेस्ट्रॉल के स्तर से सीधे प्रभावित नहीं होता है क्योंकि मस्तिष्क रक्त-मस्तिष्क अवरोध द्वारा संरक्षित होता है, एक प्रकार का फिल्टर जो कई पदार्थों को रक्त प्रवाह से मस्तिष्क में प्रवेश करने से रोकता है।

स्रोत: मस्तिष्क अपने स्वयं के कोलेस्ट्रॉल का उत्पादन करता है।

स्वास्थ्य पर प्रभाव: मस्तिष्क में शरीर के कुल कोलेस्ट्रॉल का लगभग 20-25% होता है, और यह उचित मस्तिष्क समारोह के लिए आवश्यक है।

मेमोरी और मस्तिष्क स्वास्थ्य पर प्रभाव:

मस्तिष्क संरचना और कार्य: कोलेस्ट्रॉल मस्तिष्क कोशिका झिल्ली और माइलिन म्यान का एक महत्वपूर्ण घटक है जो तंत्रिका तंतुओं को इन्सुलेट करता है। यह सिनैप्स बनाने और बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है, जो तंत्रिका कोशिकाओं के बीच संबंध हैं जो सीखने, स्मृति और संचार के लिए आवश्यक हैं।

न्यूरोडीजेनेरेटिव रोग: मस्तिष्क कोलेस्ट्रॉल के स्तर में असंतुलन को अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसे न्यूरोडीजेनेरेटिव रोगों से जोड़ा गया है। बहुत कम कोलेस्ट्रॉल मस्तिष्क कोशिकाओं के बीच कनेक्शन को कमजोर कर सकता है, संभवतः स्मृति समस्याओं और कोशिका क्षति के लिए अग्रणी।

APOE जीन: APOE4 जीन, देर से शुरू अल्जाइमर रोग के लिए सबसे मजबूत आनुवंशिक जोखिम कारक, कैसे मस्तिष्क प्रक्रियाओं और कोलेस्ट्रॉल का उपयोग करता है में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उम्र का कारक

मिडलाइफ में, उच्च कोलेस्ट्रॉल संज्ञानात्मक गिरावट और मनोभ्रंश के लिए एक मजबूत जोखिम कारक है। लेकिन बाद के वर्षों में, कुछ अध्ययनों से संकेत मिलता है कि उच्च कोलेस्ट्रॉल वास्तव में मस्तिष्क लचीलापन का समर्थन कर सकता है। एक स्पष्टीकरण यह है कि उम्र बढ़ने वाला मस्तिष्क कोलेस्ट्रॉल का अलग-अलग उपयोग कर सकता है, शायद इसके तंत्रिका कनेक्शन को बनाए रखने के लिए इसकी अधिक आवश्यकता होती है। यही कारण है कि स्मृति और स्वास्थ्य में कोलेस्ट्रॉल की भूमिका को समय के लेंस के माध्यम से सबसे अच्छी तरह से समझा जाता है; 45 वर्षीय व्यक्ति को जो नुकसान पहुंचाता है वह 75 वर्षीय व्यक्ति की मदद कर सकता है।

स्टैटिन्स और मेमोरी डिबेट

वर्षों तक, लोगों को डर था कि स्टैटिन जैसी कोलेस्ट्रॉल कम करने वाली दवाएं स्मृति को नुकसान पहुंचा सकती हैं। शुरुआती रिपोर्टों ने चिंता पैदा कर दी, लेकिन हाल के बड़े पैमाने पर अध्ययनों ने उन चिंताओं को शांत कर दिया है। साक्ष्य अब दिखाता है कि स्टैटिन डिमेंशिया या दीर्घकालिक मस्तिष्क परिवर्तन का कारण नहीं बनता है। वास्तव में, उच्च कोलेस्ट्रॉल को नियंत्रित करके, वे अप्रत्यक्ष रूप से स्ट्रोक और संवहनी मनोभ्रंश के जोखिम को कम कर सकते हैं। यह हमें याद दिलाता है कि संदर्भ मायने रखता है: रक्त कोलेस्ट्रॉल के लिए उपचार अक्सर मस्तिष्क की रक्षा करता है, भले ही कनेक्शन तुरंत स्पष्ट न हो।

संक्षेप में, जबकि दोनों प्रकार के कोलेस्ट्रॉल स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण हैं, वे अलग-अलग क्षेत्रों में काम करते हैं। उच्च रक्त कोलेस्ट्रॉल मुख्य रूप से संवहनी प्रणाली को नुकसान पहुंचाकर अप्रत्यक्ष रूप से मस्तिष्क को नुकसान पहुंचाता है, जबकि मस्तिष्क कोलेस्ट्रॉल सीधे मस्तिष्क कोशिकाओं और उनके संचार के मौलिक कार्यों में शामिल होता है। दोनों प्रणालियों में स्वस्थ स्तर बनाए रखना दीर्घकालिक स्वास्थ्य और संज्ञानात्मक कार्य के लिए महत्वपूर्ण है।

प्रकृति के प्रहरी: जिनके बलिदान से साँसें ज़िंदा हैं [वन शहीदों का ऋण: जो हर सांस के साथ चुकाना है]

वृक्ष केवल लकड़ी का ढांचा नहीं, बल्कि हमारी साँसों का आधार हैं। उनकी जड़ों में धरती का धैर्य, पत्तियों में ऋतुओं का गीत और छाँव में पीढ़ियों का आलिंगन समाया है। जब इन पर आरी चली, तो कुछ नायकों ने अपनी जान हथेली पर रखकर प्रकृति की रक्षा की। उनके लिए वृक्ष सिर्फ़ पेड़ नहीं, जीवन का पर्याय थे। यही वह आस्था थी, जिसने 1730 के खेजड़ली कांड को अमर बनाया और 11 सितंबर को राष्ट्रीय वन शहीद दिवस का प्रतीक बनाया। यह दिन उन अनाम बलिदानियों को श्रद्धांजलि है, जिन्होंने भारत के जंगलों, वन्यजीवों और पर्यावरण के लिए अपने प्राण न्यौछावर किए।

खेजड़ली कांड सिर्फ़ इतिहास की घटना नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की अमर प्रेरणा है। 1730 में राजस्थान के जोधपुर में महाराजा अभय सिंह के आदेश पर खेजड़ी पेड़ों को काटने का हुक्म हुआ। इन पेड़ों को बचाने के लिए अमृता देवी बिश्नोई ने अपने समुदाय के साथ प्रतिरोध किया। एक-एक कर 363 बिश्नोई ग्रामवासियों ने पेड़ों को अपनी ढाल बनाया और अपने प्राणों की आहुति दी। यह बलिदान विश्व का पहला दर्ज पर्यावरण आंदोलन माना जाता है, जिसने प्रकृति और मानव के अटूट रिश्ते को रेखांकित किया। आज राष्ट्रीय वन शहीद दिवस उसी बलिदान की स्मृति में मनाया जाता है, जो 2013 में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा स्थापित किया गया।

राष्ट्रीय वन शहीद दिवस केवल खेजड़ली के बलिदान की स्मृति तक सीमित नहीं है; यह उन अनगिनत वन रक्षकों, वनपालों और कर्मचारियों की अनकही वीरगाथा है, जो जंगलों की रक्षा में अपनी जान जोखिम में डालते हैं। भारत में हर साल दर्जनों वन रक्षक अवैध कटाई, शिकार और तस्करी रोकते हुए शहीद हो जाते हैं। पर्यावरण मंत्रालय के आंकड़े बताते हैं कि बीते दो दशकों में सैकड़ों वन कर्मियों ने ड्यूटी के दौरान अपनी जान गंवाई। यह दिवस हमें याद दिलाता है कि जंगल महज पेड़ों का समूह नहीं, बल्कि एक जीवंत पारिस्थितिकी तंत्र है, जो जीवन का आधार है। भारत के जंगल 7.13 लाख वर्ग किलोमीटर में फैले हैं, जो देश के 21.71% भौगोलिक क्षेत्र को कवर करते हैं (भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2021)। ये जंगल ऑक्सीजन देते हैं, जलवायु को नियंत्रित करते हैं, मिट्टी का कटाव रोकते हैं और असंख्य प्रजातियों को आश्रय प्रदान करते हैं। फिर भी, अवैध कटाई और शहरीकरण के कारण भारत हर साल हजारों हेक्टेयर जंगल खो रहा है। 2019-2021 के बीच 1,582 वर्ग किलोमीटर वन क्षेत्र का नुकसान हुआ (आईएसएफआर, 2021)। इस क्षति का सबसे गहरा प्रभाव उन आदिवासी समुदायों पर पड़ता है, जिनका जीवन और संस्कृति जंगलों से अटूट रूप से जुड़ी है। आदिवासी समुदायों की बात करें तो, बिश्नोई समुदाय की तरह गोंड, संथाल, मुंडा और अन्य जनजातियाँ जंगलों को न केवल अपनी आजीविका का आधार मानती हैं, बल्कि उन्हें अपनी संस्कृति और आध्यात्मिकता का पवित्र केंद्र भी मानती हैं। ये समुदाय जंगलों को मंदिर की तरह पूजते हैं, उनके साथ एक अटूट रिश्ता साझा करते हैं। फिर भी, विकास के नाम पर—चाहे वह खनन हो, बांध निर्माण हो या सड़क विस्तार—उनकी पुश्तैनी जमीनें और जंगल बेरहमी से छीने जा रहे हैं। राष्ट्रीय वन शहीद दिवस हमें इन समुदायों की अनसुनी पुकार को सुनने और उनकी लड़ाई में साथ देने का सशक्त आह्वान करता है।

यह दिवस हमारी शिक्षा व्यवस्था पर भी गहरे सवाल उठाता है। पर्यावरण शिक्षा को स्कूलों में अक्सर एक औपचारिकता तक सीमित कर दिया जाता है। क्या हमारे बच्चे यह जानते हैं कि एक पेड़ प्रतिवर्ष 20-30 किलोग्राम कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करता है? क्या उन्हें पता है कि भारत के जंगल 6,000 से अधिक पौधों और 90,000 से अधिक जीवों की प्रजातियों का आश्रय हैं? राष्ट्रीय वन शहीद दिवस को स्कूलों में केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक प्रेरणा के रूप में मनाया जाना चाहिए। बच्चों को अमृता देवी के बलिदान की कहानी सुनाने के साथ-साथ यह सिखाना होगा कि पर्यावरण की रक्षा उनकी विरासत और जिम्मेदारी है।

राष्ट्रीय वन शहीद दिवस को सच्ची श्रद्धांजलि तब मिलेगी, जब हम अपने जीवन में ठोस बदलाव लाएँ। प्लास्टिक का उपयोग घटाना, ऊर्जा की बर्बादी रोकना और पेड़ लगाने जैसे छोटे कदम बड़े परिवर्तन की नींव रख सकते हैं। सरकार भी इस दिशा में कदम उठा रही है—"हरित भारत मिशन" के तहत 2014 से लाखों पेड़ लगाए गए हैं, और 2030 तक 33% भू-भाग को वनाच्छादित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा गया है। मगर यह सपना तभी साकार होगा, जब व्यक्ति, समाज और सरकार कंधे से कंधा मिलाकर जुटें।

11 सितंबर को जब हम वन शहीदों को याद करते हैं, तो यह भी आत्ममंथन करें कि उनकी लड़ाई आज भी अधूरी है। जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई और प्रदूषण आज भी उतने ही भयावह खतरे हैं। विश्व बैंक की एक रिपोर्ट बताती है कि भारत में वायु प्रदूषण हर साल 1.2 मिलियन लोगों की असमय मृत्यु का कारण बन रहा है। ऐसे में, राष्ट्रीय वन शहीद दिवस केवल एक स्मरण नहीं, बल्कि एक प्रबल संकल्प है—प्रकृति को बचाने का, और उन बलिदानों को सार्थक करने का।

यह दिवस हमें दो रास्ते दिखाता है: एक, जहाँ हम अपनी सुविधाओं के लिए जंगलों को नष्ट करते जाएँ; दूसरा, जहाँ हम अमृता देवी और उनके साथियों की तरह पेड़ों को गले लगाएँ, उनकी रक्षा करें। पहला रास्ता हमें विनाश की ओर ले जाता है, दूसरा जीवन और आशा की ओर। हम वह रास्ता चुनें जो न केवल हमारे लिए, बल्कि हमारी भावी पीढ़ियों के लिए भी स्वच्छ हवा और हरे-भरे जंगलों की गारंटी दे। राष्ट्रीय वन शहीद दिवस यही प्रेरणा देता है—प्रकृति के लिए जिएँ, प्रकृति के लिए लड़ें, क्योंकि प्रकृति ही हमारा सच्चा आश्रय है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

डिजिटल युग में सबसे बड़ी चुनौती बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना है

विजय गर्ग

पढ़ने की आदत एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसकी जड़ें बचपन में ही मज़बूत होनी चाहिए। पढ़ने के कई उद्देश्य हैं, जैसे समझना, समझाना, जानना, सीखना, कल्पना शक्ति का निर्माण, ज्ञान का विस्तार करना और ज्ञान प्राप्त करने के बाद उसका दुरुपयोग न करना। प्राथमिक स्तर पर बच्चों में पढ़ने की आदत बढ़ाने में माता-पिता, शिक्षकों और पुस्तकालयों की भूमिका अहम है। आज हम खुद को डिजिटल युग से घिरा हुआ महसूस करते हैं। आज कंप्यूटर और इंटरनेट के बिना जीवन की कल्पना करना असंभव सा लगता है। जब हम अपने आस-पास बहुत से बच्चों को पुस्तकालय से दूर देखते हैं, तो यह कई कमियों की ओर इशारा करता है। डिजिटल युग में बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करना एक बड़ी चुनौती है।

पढ़ने का कौशल बचपन से ही शुरू होता है।

'आदत' शब्द का अर्थ है किसी चीज़ का अभ्यास, जो निरंतर दोहराव से अर्जित होता है। शिक्षा (पढ़ने) की यात्रा स्कूल से शुरू होती है और पठन कौशल की यात्रा घर से शुरू होकर स्कूल की मदद से आगे बढ़ती है। यह कौशल आमतौर पर विभिन्न स्तरों पर विकसित होता है, जैसे घर पर माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी और दोस्तों के माध्यम से, और स्कूल में शिक्षकों और पुस्तकालयों के माध्यम से। बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने में शिक्षक, पुस्तकालय और माता-पिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पठन कौशल बचपन से ही शुरू हो जाते हैं और जीवन भर चुनौतियों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शब्दावली सुधार

रोज़ाना और उचित पढ़ने से शब्दावली में सुधार होता है, विषय के बारे में समझ, ज्ञान और सुझावों में विचारों को व्यक्त करने की क्षमता बढ़ती है, आत्मविश्वास बढ़ता है। पढ़ना शिक्षा का एक बुनियादी साधन है, जो ज्ञान के दायरे का विस्तार करता है। दुर्भाग्य से, पढ़ने की आदत ने अपना महत्व खो दिया है क्योंकि हम सभी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, खासकर टेलीविजन, इंटरनेट, मोबाइल गेम्स की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यही कारण है कि स्कूली छात्रों में पढ़ने की आदत में कमी आ रही है और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स को इसका एक बड़ा कारण माना जा रहा है।

स्कूली शिक्षा में एक महत्वपूर्ण इकाई

विद्यालयी शिक्षा में पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण इकाई है, जो विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को विभिन्न प्रकार की जानकारी एवं सेवाएँ प्रदान कर शैक्षणिक गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षा के गुणात्मक स्तर को बढ़ाने के लिए एक अच्छे पुस्तकालय की आवश्यकता होती है। विषय-वस्तु को समझाने में इसका अद्वितीय योगदान होता है। विद्यालय के पुस्तकालय में दो प्रकार के पाठक होते हैं, शिक्षक और विद्यार्थी। दोनों के अलग-अलग आकर्षण होते हैं, किन्तु दोनों का उद्देश्य एक ही है, शिक्षा। इस डिजिटल युग में प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों में पठन-पाठन के प्रति रुचि बढ़ाने की शिक्षकों, पुस्तकालय कर्मचारियों, अभिभावकों की जिम्मेदारी निरंतर बढ़ती जा रही है। पुस्तकालय के कर्मचारी पुस्तकों की देखभाल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो शिक्षकों के पठन-पाठन में योगदान दे सकते हैं।

शिक्षक की भूमिका

बच्चों के हर स्तर के विकास में शिक्षकों की विशेष भूमिका होती है। वे विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से बच्चों में पढ़ने की रुचि जागृत करते हैं और उन्हें विषय से संबंधित रुचि के साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षक और पुस्तकालय कर्मचारी पुस्तक और पाठक के बीच सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे विभिन्न गतिविधियों (विभिन्न प्रतियोगिताओं, पुस्तक समीक्षाओं आदि) के माध्यम से बच्चों में पढ़ने की आदत का विस्तार भी करते हैं। पुस्तकालय को अपने लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षकों के सहयोग की आवश्यकता होती है। इसलिए, शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे छात्रों को निम्नलिखित जानकारी प्रदान करें:

कक्षा में पढ़ाए जाने वाले विषयों के साथ-साथ पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य पुस्तकों में उपलब्ध विषयों के बारे में भी जानकारी प्रदान करें।

छात्रों को पुस्तकालय में आने और नई पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना।

इस प्रकार शिक्षक पुस्तकालय के सच्चे सहयोगी बन सकते हैं और विद्यार्थियों को नई दिशा दे सकते हैं।

माता-पिता की भूमिका

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में पढ़ने की आदत डालने में माता-पिता की प्रमुख भूमिका होती है और वे अधिकांश पढ़ने की आदतों के लिए प्रेरणा और आदत का प्राथमिक स्रोत होते हैं। जब माता-पिता उनके साथ पढ़ते हैं, तो बच्चों को उनके माता-पिता से प्रशंसा मिलती है। भारत और विदेशों में हुए अधिकांश अध्ययनों से संकेत मिलता है कि बच्चों में पढ़ने की आदतें पर्यावरण, सामग्री और वातावरण,

बच्चे की पढ़ने में व्यक्तिगत रुचि और उनके माता-पिता के शिक्षक होने पर निर्भर करती हैं। प्राथमिक विद्यालय के बच्चे अपना अधिकांश समय अपने माता-पिता के साथ बिताते हैं। यहाँ माता-पिता के लिए अपने बच्चों में पढ़ने की आदत विकसित करने के कुछ सुझाव दिए गए हैं।

आदर्श बनना: माता-पिता बच्चों के आदर्श होते हैं। माता-पिता को रोज़ाना उनके सामने पढ़ना चाहिए। यह उतना ही ज़रूरी काम है जितना स्कूल जाना, होमवर्क करना, दोस्तों के साथ खेलना आदि। आज के ज़माने में आप अपने बच्चे को पढ़ने का आदेश तभी दे सकते हैं जब आप खुद ऐसा करते हों।

पुस्तकालय सदस्यता: अभिभावकों का यह कर्तव्य है कि वे अपने पड़ोस के पुस्तकालय के सदस्य बनें। उन्हें अपने बच्चों को महीने में कम से कम एक या दो बार वहाँ ले जाना चाहिए, ताकि बच्चे समझ सकें कि पुस्तकालय ज्ञान का भंडार है। स्कूल में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में पुस्तकालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

पुस्तक मेलों का भ्रमण: बच्चों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें पुस्तक प्रदर्शनियों/पुस्तक मेलों/विश्व पुस्तक मेलों में ले जाने की योजना बनाई जानी चाहिए। पुस्तक प्रदर्शनियों में बच्चों को अपनी पसंद की हज़ारों पुस्तकों से रूबरू होने का अवसर मिलता है। वे अपनी रुचि के अनुसार नई पुस्तकों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। घर में पुस्तकालय: जिस तरह हम घर में पूजाघर के लिए जगह रखते हैं, उसी तरह घर में एक छोटी सी लाइब्रेरी के लिए भी जगह तय होनी चाहिए। किताबों का संग्रह बच्चों को अपने दोस्तों के बीच किताबों का आदान-प्रदान करने में मदद करता है।

इस तरह, हम अपने बच्चों में स्कूली शिक्षा के दौरान ही किताबें पढ़ने की आदत डाल सकते हैं। आज के युवाओं, खासकर प्राथमिक स्तर के बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत डालना बेहद ज़रूरी है। जब ये बच्चे किताबों से संवाद करना सीखेंगे, तो नैतिक मूल्य अपने आप उनके जीवन में आ जाएँगे।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

नेपाल: एक बार फिर लोक की सर्वोच्चता सिद्ध आखिरकार जाना पड़ा भ्रष्ट एवं काहिल सरकार को

डॉ घनश्याम बादल

आखिरकार वही हुआ जिसकी आशंका थी। जेन जी के कार्यकर्ताओं के आगे लाठी, गोली, प्रतिबंध और सरकार की ताकत सब ध्वस्त हो गई और अंतत सरकार को जाना पड़ा ।

नेपाल सरकार का पतन तो तब ही शुरू हो गया था जब तीन मंत्रियों ने इस्तीफे दे दिए थे. फिर आरएसपी के 21 सांसदों ने भी अपने इस्तीफे राष्ट्रपति को भेजे लेकिन सुदन गुरुंग के एवं जी ओ 'हामी नेपाल' के कार्यकर्ता संतुष्ट नहीं हुए । आखिरकार सोशल मीडिया से बैन हटा लिया गया लेकिन तब भी बात नहीं बनी। फिर के पी शर्मा ओली ने इस्तीफा दिया और उनके साथ ही वहां के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल ने भी कुर्सी छोड़ दी. अब नेपाल में अव्यवस्था आगजनी लूटपाट और हिंसा का राज चल रहा है.

भारत का सबसे निकट पड़ोसी और दुनिया के गिने - चुने हिंदू राष्ट्रों में से एक नेपाल संकट में है । वहां की के पी शर्मा ओली सरकार के खिलाफ युवा जेन जी के कार्यकर्ता सड़कों पर हैं । काठमांडू और वीरगंज में ही नहीं अपितु देश के दूसरे शहरों में भी हालात लगातार बिगड़ रहे हैं और अब तक मिले अपडेट के अनुसार 20 लोग मारे गए हैं।

अभी कुछ दिनों पहले ही ओली सरकार ने नेपाल में सोशल मीडिया मंचों को चलाने वाली कंपनियों को अपना रजिस्ट्रेशन एक हफ्ते के अंदर करने के लिए कहा था । साथ ही साथ यह भी निर्देश दिया था कि वह नेपाल के कानून का पूरी तरह पालन करें लेकिन टिकटोक जैसी एक दो कंपनियों को छोड़कर किसी ने भी उनके इस निर्देश का पालन नहीं किया जिसके चलते हुए उन्होंने फेसबुक, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम ,यूट्यूब और एक्स जैसे सोशल मीडिया मंचों पर रोक लगा दी थी ।

पहले से ही बेरोजगारी भ्रष्टाचार एवं महंगाई की वज़ह से गुस्से में तना बैठा युवा इससे और भी उखड़ गया और आज सुबह से ही वह नेपाल की सड़कों पर उतर गया।

जेनरेशन जी के इन कार्यकर्ताओं का गुस्सा केवल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर रोक लगाने मात्र तक सीमित नहीं है बल्कि वह देश में लगातार बढ़ रही बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, भूमि सुधार कानून एवं सत्ता में बैठे हुए व्यक्तियों द्वारा अपने व्यक्तिगत तथा पारिवारिक लाभों के लिए सत्ता का अनुचित इस्तेमाल करना भी उनके एजेंडे में शामिल है । उनका मुख्य आरोप है कि नेपाल की वर्तमान सरकार युवाओं को रोजगार देने की दिशा में गंभीर नहीं है।

यदि नेपाल के रोजगार के आंकड़े उठाकर देखें तो 1995- 96 में वहां पर रोजगार प्राप्त करने लायक जनसंख्या का 67% रोजगार पाया हुआ था जबकि 30 वर्षों में यह प्रतिशत घटकर केवल 30% पर आ गया है ऐसे में रोजी-रोटी के संकट का सामना कर रही युवा पीढ़ी का आक्रोशित होना स्वाभाविक है । साथ ही साथ इस संगठन और दूसरे युवाओं का यह भी आरोप है कि नेपाल में क्षेत्र विशेष में ही विकास के कार्य किए जाते हैं जबकि करनाली, डॉल्पा और हुमल जैसे क्षेत्र आज भी उपेक्षित हैं।

नेपाल लंबे समय से अस्थिर सरकारों के दौर से गुजर रहा है. 2008 में राजशाही परिवार की हत्या के बाद से ही वहां राजनीतिक स्थिरता नहीं आ पाई है और 17 साल के अंतराल में वहां 15 सरकारें एवं प्रधानमंत्री बदले हैं ।

वर्तमान सरकार भी गठबंधन की सरकार थी . उसमें नेपाली कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ नेपाल (यू एम एल) मुख्य दल थे। जिम आपसी वैचारिक द्वंद लगातार चल रहा था। चुनाव में बेमेल गठबंधन करके 15 जुलाई 2024 को ही के पी शर्मा चौथी बार सत्ता में लौटे थे ।

एक और सरकार की अंदरूनी कलह तो दूसरी ओर विपक्ष के नेता पुष्प कमल दहल प्रचंड भी लगातार वहां की सरकार को चुनौती देते रहे थे। इन सब के चलते नेपाल में सुशासन जैसी व्यवस्था लागू नहीं हो पाई जिसके चलते हुए वहां का युवा सरकार के खिलाफ खड़े होने पर मजबूर हुआ ।

सरकारों की काहिली और राजनीतिक स्वार्थ पूर्ति के चलते हुए दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में समय-समय पर इस तरह के विद्रोह पहले भी होते आए हैं । चीन का थियेन आन मन चौक कांड अभी तक भी लोग नहीं भूले होंगे । इसी तरह अरब देशों में 2010 से 2012 के बीच अरब स्प्रिंग के नाम से ऐसा ही आंदोलन शुरू हुआ था और इस आंदोलन के चलते हुए वहां की ट्यूनीशिया की सरकार को हटना पड़ा था और मिस्र में भी हुस्नी मुबारक को सत्ता गंवानी पड़ी थी जबकि संघर्ष के चलते हुए लीबिया और सीरिया आज तक भी गृहयुद्ध झेल रहे हैं । 2013 में तुर्की में गीजी पार्क आंदोलन खड़ा हुआ लेकिन उसे कठोरता पूर्वक दबा दिया गया जबकि 2019 - 2020 में हांगकांग विरोध आंदोलन को भी चीन ने बर्बरता पूर्वक कुचल दिया । 2018-19 में सूडान में भी युवा आक्रोशित हुए और वहां की अल बशीर सरकार का पतन हुआ जबकि बेलारूस में 2020 में चुनावी धुंधली के खिलाफ विपक्ष सड़कों पर उतरा लेकिन वहां उसका दमन कर दिया गया। इसी तरह भारत में भी किसान आंदोलन के आगे सरकार को झुककर कृषि कानून वापस लेने पड़े थे। बांग्लादेश और श्रीलंका की तरह एशिया में नेपाल तीसरा देश हो गया है जहां युवाओं के हिंसक आंदोलन के बाद सरकार को दक तख्तापलट का सामना करना पड़ा है

सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि सरकारों के ख़िलाफ़ लोग खड़े क्यों होते हैं ? सामान्यतः आम आदमी आंदोलन या विद्रोह से बचता है लेकिन जब पानी सर के ऊपर आ जाता है तो फिर वह सड़कों पर उतर जाता है और देश के हालात बद से बदतर होते चले जाते हैं और नेपाल में यह सामने ही है।

समय का तकाज़ा है कि सरकारें सत्ता में आने के बाद भी जन भावनाओं का ख़्याल रखें। विकास में ईमानदारी रखें और रोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराएं जिससे आम आदमी संतुष्ट हो । साथ ही साथ भ्रष्टाचार एवं रिश्वतखोरी तथा दल, वर्ग, जाति, मज़हब या धर्म की राजनीति से यथा संभव बचा जाए अन्यथा स्थिति में दुनिया भर में ऐसे आंदोलन होते रहेंगे ।

भले ही नेपाल में अंतरिम सरकार के गठन की बात शुरू हो गई है लेकिन अभी नहीं कह सकते कि नेपाल के हालात आने वाले दिनों में कैसे होंगे ।

यहां बात केवल नेपाल के अंदरूनी हालातों की नहीं है अपितु इनका असर भारत पर भी पड़ता है इसलिए भारत की सरकार को भी सतर्क होकर हालात पर न केवल निगाह रखनी चाहिए अपितु नेपाल में भारतीयों के हितों एवं सुरक्षा की भी बात करनी होगी और हर संभव प्रयास करना होगा ताकि नेपाल में लोकतंत्र बचा रहे और भारत से रूठा हुआ नेपाल फिर से उसकी ओर लौट कर समृद्धि की राह पर चल सके।

डॉ घनश्याम बादल

रांची इस्लामनगर तबारक लाज से आतंकी अजहर दानिश पकड़ाया

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल, झारखंड एटीएस और रांची पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में एक बड़े आतंकी नेटवर्क का भंडाफोड़ हुआ है। तीनों टीमों ने मिलकर इस कार्रवाई में आईएसआईएस से जुड़े संदिग्ध आतंकी अजहर दानिश और आफताब को गिरफ्तार किया है। अजहर को रांची से जबकि आफताब को दिल्ली से गिरफ्तार किया गया है।

अजहर दानिश पर पहले से दिल्ली में मामला दर्ज था और उसी आधार पर स्पेशल सेल उसे तलाश कर रही थी। अजहर की गिरफ्तारी के बाद अब पूरे नेटवर्क को ध्वस्त करने का प्रयास शुरू हो गया है। इस मामले की जानकारी देते हुए पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार संदिग्ध आतंकी अजहर दानिश से पूछताछ की जा रही है। उसकी गतिविधियों, उसके जानने वालों और नेटवर्क को लेकर गहराई से जांच की जा रही है। तीनों टीमों ने खुफिया जानकारी के आधार पर ऑपरेशन को अंजाम दिया और उसे संदिग्ध आतंकी दानिश को पकड़ने में सफलता हासिल की है। इसके साथ ही एक टीम ने दिल्ली में छापा मारा और संदिग्ध आतंकी आफताब को गिरफ्तार कर लिया।

इस मामले पर बात करते हुए पुलिस अधिकारियों ने बताया कि यह कार्रवाई आतंकवादी मॉड्यूल की जड़ों तक पहुंचने के लिए की गई है। इसके साथ ही इसे बड़े आतंकी खतरे को रोकने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस मामले पर बात करते हुए एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि हमारी सुरक्षा एजेंसियां पूरे नेटवर्क का खुलासा करने के लिए लगातार काम कर रही हैं।

मामले इस्लामनगर के तबारक लॉज का है। यहां दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने झारखंड पुलिस के साथ मिलकर छापा मारा। छापे में संदिग्ध आतंकी अजहर को गिरफ्तार किया गया। इसके साथ ही पुलिस की टीम ने झारखंड के पलामू में भी छापा मारा था। पलामू एसपी रीष्मा रमेशन ने इस बात की पुष्टि की है।

मिली जानकारी के अनुसार, जनवरी 2024 में अजहर दानिश पत्थलकुदवा मस्जिद के पास रह रहा था। इसके बाद वो तबारक लॉज में शिफ्ट हो गया। पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि छापेमारी के दौरान हथियार और कई इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स जब्त किए गए हैं।

नेपाल के विद्रोह पर विश्व के देशों का गंभीर चिंतन

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान जबरी

जब किसी भी देश की देहलीज खोखली हो जाएं। जनता बेसब्र गरीबी से जूझ रही हो । ऐसे में बेरोजगारी से परेशान युवा पीढ़ी को रोजगार नहीं दे सके। तभी जनता को क़ानून अपने हाथ में लेना ही पड़ता है। ऐसे जनतंत्र के संघीय ढांचे में जो राजा-महाराजा का कानून पहले चलता था वहां अब नहीं चलेगा फिर लोकशाही में जनता की पुकार को क्यों नहीं सुना गया । जब कि संघीय सरकार वहां थी पर वहां सरकार खुद मस्त हो रही थी और जनता पस्त नज़र आ रही थी । ऐसे में तानाशाही राजशाही दोनों अगर आति का रुप ले लेये तो जनता को अपनी आवाज उठाने के लिए हाथों में जलती हुई मशाल उठानी ही पढ़ती है। नेपाल में हुएं विद्रोह के बाद हालत बद से बद्तर हो गये है। तभी तो ऐसे नजरें बहुत हिंसात्मक हो जाते हैं जब नेपाल में इस प्रकार की आगजनी हिंसा तोड़-फोड़ इसलिए हुई कि यहां लोकशाही से लेकर नौकरशाही सभी तंत्र भ्रष्टाचार में लिप्त हो चुका था। लोकतांत्रिक व्यवस्था में भी अगर जनता गरीबी के कारण बड़ा कदम नेपाल की जनता ने उठाया है । देश को गुमराह करने वालों को नेपाली जनता ने सबक़ सिखाया । नेपाल में लोकशाही क्यो नही आ रही है। इस विषय पर भी चिंतन की आवश्यकता है। ऐसे तो संयुक्त राष्ट्र ने भी इस जलते हुए नेपाल को देखते हुए चिंता व्यक्त की है। आखिर कर नेताओं व मंत्रीयो को दौड़ा दौड़ा कर पीटा गया, वहां का संसद भवन को आगके हवाले कर दिया गया। क्योंकि जो सुनता नहीं उन्हें इसी प्रकार की धमाके की जरूरत होती है । आज आर्मी सेना ने कानून व्यवस्था को नेपाल में अपने हाथ में लेते हुए कर्फ्यू लगा दिया है। पर जिस देश में वहां के प्रधानमंत्री का घर आग के हवाले कर दिया हो वहां के ग्रहमंत्री को दौड़ा दौड़ा के पीटा हो तो आप सोच सकते हो स्थिति कितनी भयावह है ? नेपाल में नेताओं को जनता की आवाज नहीं सुनने का खमियाजा भुगतना पड़ा। विश्व के देशों को जागरूक रहना होगा खासकर लोकतांत्रिक व्यवस्था वाले देशों को क्यों कि यहां पब्लिक है सब जानती है अंदर क्या है बहार क्या है। जेन जी 2 की आवाज बुलंद है , युवाओं को एकजुट कर के इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। पहले भी कई बार नेपाल जो गरीब देश रहा और हिंसा तोड़-फोड़ का इस प्रकार का दंश झेल चुका है। नेपाल सुलगते सवालों के प्रति चिंतित क्यों नहीं हो रहा । बेरोजगारी गरीबी ने जनता को बाहुबल दे दिया तभी तो शासन प्रशासन को अपने हाथ में लेने के लिए हिंसा लूटपाट का साथ देते हुए जनता आक्रोश में आ गई है। अब वहां सेना ने संघीय ढांचा जो धराशाई हो गया है उसे संभालने का काम शुरू कर दिया है पर शन्ति कब लोटेंगी ? अब वहां युवा पीढ़ी लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपने हाथों में थाम ले । नेपाल में रोजगार के लिए काम करने वाली सरकार चहिए। जो ग़रीबी को मिटाने के कार्य करें जनता की परेशानी को समझें। सिर्फ अपना पेट भरने वाले नेता या जनप्रतिनिधि नेपाल में नहीं चहिए। आज इस जलाते हुए नेपाल की पुकार है कि जनता की अपेक्षा जब जब हुई तब कानून व्यवस्था को जनता अपने हाथ में ले लेंगी। इस हिंसा पर गंभीर चिंतन ज़रुरी है। आस्थिर देशों में हिंसा ने सोचने के लिए मजबूर कर दिया है। हिन्दू राष्ट्र वाली राजशाही से दूर अब कम्युनिस्ट विकारों के भ्रष्ट साम्राज्य के ढांचे को जिस प्रकार ढहाया गया है। वहां हिंसा तो ठीक नहीं मानी जायेगी पर जब कान वाले नहीं सुनते हैं तो ऐसे धमाकों की आवश्यकता तो जरुरी है , ऐसे समय में क्या विश्व के देश इसे समझेंगे।

हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़नसिया इन्दौर

जिला खनन कार्यालय के नाम पर धोखाधड़ी का प्रयास , मामला दर्ज

अपील: संदिग्ध गतिविधी की सूचना खनन पदाधिकारी, सरायकेला को दें .

सरायकेला ,सरायकेला-खरसावां जिले में जिला खनन कार्यालय से संबंधित किसी जालसाज व्यक्ति द्वारा स्वयं को जिला खनन कार्यालय का अधिकारी बताकर लाइसेंस आवेदनकर्ताओं से संपर्क कर अनुचित लाभ (रिश्वत) की मांग की गई है ।

इस संबंध में जिला खनन पदाधिकारी के निर्देशानुसार खान निरीक्षक समीर कुमार ओझा द्वारा सरायकेला थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई गई है। शिकायत में यह उल्लेख है कि मोबाइल नंबर 9274075083 से संपर्क करने वाला व्यक्ति स्वयं को "आनंद कुमार" बताकर जिला खनन विभाग से जुड़ा होने का दावा करता है। उक्त मोबाइल नंबर पुलिस को उपलब्ध करा दिया गया है।

प्राथमिक जांच में यह तथ्य सामने आया है कि आरोपी ने अपने मोबाइल नंबर को "डीएमओ माइंस" के नाम से ट्रूकॉलर पर अंकित कर रखा है, जिसके कारण वह लोगों को स्वयं को विभागीय अधिकारी बताकर भ्रमित करता था।

पुलिस प्रशासन द्वारा उक्त प्रकरण की गंभीरता को देखते हुए मामले की जांच प्रारंभ कर दी गई है तथा आरोपी की पहचान और गिरफ्तारी सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक विधिक कार्रवाई की जा रही है।

जिला खनन पदाधिकारी ने आमजन से अपील की है कि विभागीय कार्यों से संबंधित किसी भी संदिग्ध व्यक्ति या गतिविधि की सूचना तुरंत जिला खनन कार्यालय अथवा स्थानीय पुलिस प्रशासन को प्रदान करें।

पश्चिमी सिंहभूम डीसी के खिलाफ मुंडा ,माणकी संग हजारों आदिवासी उतरे सड़कों पर

अड़तालिस घंटे में उपायुक्त को हटायें अन्यथा चक्का जाम , राष्ट्रपति तक को भेजा ज्ञापन

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

चाईबासा सदर , पारंपरिक शासन व्यवस्था कायम रखने को लेकर पश्चिम सिंहभूम के उपायुक्त चंदन कुमार के विरोध में मानकी, मुंडा, डाकुवा संघ कोल्हान पोड़ाहाट का आक्रोश देखने को मिला । क़रीब आठ- दस हजार की संख्या में मुंडा माणकी संग सारंडा जंगल एवं इस पास के आदिवासी इसमें शामिल होकर एक विशाल रैली के आकार में विरोध नारे के साथ चाईबासा मुख्यालय शहर मे निकाली गयी । जिसमें विलकिंसन रूल स्वशासन व्यवस्था को तहस नहस करने वाले उपायुक्त चंदन कुमार को चौबीस घंटे के अन्दर हटाने अन्यथा चक्का जाम करने का फरमान भी सुनाया गया है ।

इसमें विरोध के स्वर को मुखर करने वालों में तमाम मानकी, मुंडा, डाकुवा संघ कोल्हान पोड़ाहाट के पदाधिकारी, जिले के तमाम सामाजिक संगठन एवं सैकड़ो ग्रामों के रैयतगण शामिल हुए थे । रैली खूंटकट्टी मैदान से शुरू होकर तांबो चौक, टुंगरी, पोस्ट ऑफिस चौक, सदर थाना, शहीद पार्क एवं बड़ी बाजार होते हुए आयुक्त कार्यालय के पास पहुंच कर समाप्त हुई । रैली के बाद एक प्रतिनिधी मंडल कोल्हान कमिश्नरी में प्रभारी आयुक्त को उन्हें एवं महामहिम राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपा।

प्रतिनिधिमंडल में संघ के अध्यक्ष गणेश पाठ पिंगुवा, महासचिव चंदन होनहागा, पूर्व विधायक मंगल सिंह बोबोंगा, अमृत माझी, मंगल सरदार, गब्बर हेंब्रम, चंद्र मोहन बिरुवा, रियांस समड, सुरेश चन्द्र सोय, सुषमा देवगम, बलभद्र सवैया, रायमुल बानरा, अंतू हेंब्रम, मनोज सोय, इपिल समड, शांति सिद्धू, सन्नी सिंकु, कोलंबस हंसदा, राजकमल पाठ पिंगुवा, पातोर जोंकों, तुराम चाकी, रोशन पूर्ति, ग्लैडसन डुंगडुंग, सुरेश महतो, विकास केराई, नारायण सिंह पूर्ति, बसंत तांती, विजय तिग्गा, विशाल गुड़िया, प्रदीप कुमार महतो, जिला परिषद सदस्य माधव चंद्र कुंकल, शत्रुघ्न कुंकल, संजय बिरुली, केदार नाथ कालुंडिया, मुंडा गोविंद पूर्ति, सुमंत ज्योति सिंकु सहित विभिन्न राजनीतिक नेतृत्व कर्ता, सामाजिक संगठनों के नेतृत्व कर्ता मौजूद थे।

उपायुक्त को महामहिम राष्ट्रपति के नाम दिये गये ज्ञापन में कहा गया है कोल्हान पोड़ाहाट सिंहभूम के विद्रोहों के कारण जिला को सामान्य विधियों के क्रियान्वयन से बाहर रखने की ब्रिटिश नीति का विकास हुआ । जिसके अनुसार वर्ष 1833 के रेगुलेशन XIII ने गैर-विनियमित यानी नॉन रेगुलेशन डिस्ट्रिक्ट के रूप में कोल्हान सिंहभूम को 1854 के अधिनियम XX के तहत घोषित किया गया । जिसके कारण विलकिंसन के 31 नियमों को

कोल्हान-पोड़ाहाट, सिंहभूम में प्रभावी बनाया गया ।और पारंपरिक स्वशासन प्रथा यथावत रखा गया ।

भारत सरकार अधिनियम 1935 के तहत उपरोक्त उल्लेखित संदर्भ को गवर्नर के अधीन संरक्षित किया गया। जो स्वतंत्रता के बाद अ.ज.जा.बहुलता वाली क्षेत्रों को भारत का संविधान ने पांचवीं और छठी अनुसूचियों के रूप में दो अलग अलग प्रशासनिक व्यवस्थाओं का प्रावधान किया गया।

जिसके आलोक में झारखण्ड राज्य का गठन होने के बाद राष्ट्रपति के आदेश द्वारा 11 अप्रैल 2007 में कोल्हान को पुनः मान्याता मिली ।

आगे उन्होंने कहा है कि उपायुक्त प.सिंहभूम चंदन कुमार जिला में पदस्थापित होने के चार पांच माह में ही व्यापक विकासशील विस्थापन, दोषपूर्ण राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया सुनिश्चित करने हेतु अत्यधिक प्रशासनिक संस्कृति के तहत कोल्हान पोड़ाहाट सिंहभूम के अ.ज.जा., दलित, ओबीसी, गरीब सामान्य वर्गों को वृहत पैमाने पर चाईबासा, जगन्नाथपुर में बायपास सड़क निर्माण, रेलवे ओवरब्रिज, ईचा खड़कई (कुजू डैम) जैसे बांध और विकास गलियारा के नाम पर सीएनटी एक्ट 1908, विलकिंसन रूल्स, पेसा 1996, वन अधिकार अधिनियम 2006, भूमि अधिग्रहण पुनर्वास और पुनर्स्थापन में उचित प्रतिकर पारदर्शिता अधिनियम 2013, झारखण्ड संशोधन 2017 का खुले तौर पर उल्लंघन कर उल्लेखित वर्गों की जनसंख्या, परंपरा, मूल संस्कृति, धार्मिक आस्था तथा विभिन्न जाति समाज की सह अस्तित्व सामाजिक सांस्कृतिक धार्मिक सद्भाव, सौहार्द, शांति सुशासन पर करारा रूप से न सिर्फ कुठाराघात किया है, बल्कि कोल्हान पोड़ाहाट सिंहभूम के स्वशासन प्रथा के तहत सरकार और प्रशासन के सबोर्डिनेट काम करने वाले मानकी मुंडा, डाकुवा को असंवैधानिक रूप से बर्खास्त करने का फरमान जारी कर कोल्हान पोड़ाहाट, सिंहभूम की शांति, सुशासन को उन्होंने पूरी तरह से भंग किया है। इन कारणों से कोल्हान, सिंहभूम के उल्लेखित वर्गों की आजीविका पर भी व्यापक रूप से हानि देखी जा रही है। साथ ही बड़े पैमाने पर उल्लेखित वर्गों को अनैच्छिक रूप से विस्थापन का दंश झेलने की प्रबल संभावना से सशंकित है।

आगे उन्होंने लिखा है कि उपायुक्त पश्चिम सिंहभूम श्री चंदन कुमार के द्वारा एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय में विभिन्न विषयवार अतिथि शिक्षकों की नियुक्ति और जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट की राशि द्वारा स्वास्थ्य विभाग के विभिन्न पदों पर नियुक्ति हेतु गठित कमिटी भी षडयंत्रकारी और दोषपूर्ण प्रतीत होता है। साथ ही उल्लेखित नियुक्ति प्रक्रिया में जिला के ओबीसी वर्ग के योग्य अभ्यर्थियों को शून्य कर उनके साथ भेदभाव ही किया है। विभिन्न पदों पर नियुक्ति हेतु विज्ञापन पर मनचाहे संशोधन और जिला के योग्य अभ्यर्थियों को परीक्षा में शामिल होने से वंचित किए जाने पर अभ्यर्थियों द्वारा उपायुक्त कार्यालय के सामने ही न्याय की मांग करते हुए शांति पूर्ण धरना प्रदर्शन करने वाले अभ्यर्थियों और जन प्रतिनिधियों के साथ भी उनका बर्ताव प्रताड़नापूर्ण रहा है। जो उपायुक्त चंदन कुमार की लालफीताशाही संस्कृति को प्रदर्शित करता है।

झारखण्ड लोक कल्याणकारी राज्य है और कोल्हान पोड़ाहाट, सिंहभूम अनुसूचित जिला है। इसलिए इस जिला में पदस्थापित उपायुक्त से मानकी मुंडा, डाकुवा संघ कोल्हान पोड़ाहाट सिंहभूम आपराधिक न्याय के प्रशासन, नागरिक न्याय की प्रशासन, गांव की संगठन, किसी दिकू को जमीन हस्तांतरण पर रोक और राजस्व यानी मालगुजारी वसूलने सहित अन्य सभी विकास कार्यों में सबोर्डिनेट की महती भूमिका की प्रावधान के पक्षधर हैं। साथ ही 1857 के गदर के बाद कोल्हान में सृजित कोल्हान अधीक्षक के पद पर किसी योग्य अधिकारी के स्थायी पदस्थापना की भी मांग की गई।

इस असंतोष रैली में जिला के सभी पीड़ के मानकी और सभी मौजा के मुंडा, लगभग आठ दस हजार रैयत धारी गण और विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक नेतृत्वकारी मौजूद थे।

हिंदी हमारी पहचान (14 सितंबर हिंदी दिवस विशेष)

हिंदी हमारी आन, बान और शान है,
हर दिल में बसती इसकी पहचान है।
एकता के सूत्र में सबको पिरोती,
न किसी भाषा से यह द्वेष बोती।
भावों की नदियाँ इसमें निरंतर बहतीं,
मन की हर बात यहाँ सहज कहती।
सशक्त माध्यम अभिव्यक्ति का प्यारा,
हर शब्द बनता है रिश्तों का सहारा।
वैज्ञानिक शब्दावली से समृद्ध,
ज्ञान का प्रकाश करे यह अनूठा।
साहित्य से लेकर संस्कृति तक,
हर पहलू में इसका है उजाला।
विश्व की सिरमौर भाषा बनती जाए,
हिंदी की महिमा जग में फैलती जाए।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।

प्रकृति ने हमें चेताया है , उसे सुनें और अपनी दिशा बदलें

राजेश जैन

उत्तर भारत इन दिनों एक गहरी त्रासदी से गुजर रहा है। यहां हो रही भीषण बारिश के कारण आम जनजीवन अस्त-व्यस्त है। मौसम विभाग के अनुसार 22 अगस्त से 4 सितंबर के बीच क्षेत्र में सामान्य से तीन गुना अधिक बारिश दर्ज हुई है। यह पिछले 14 वर्षों में सबसे अधिक और 1988 के बाद सबसे बरसात वाला मानसून है। भारी बारिश, बाढ़, भूस्खलन और बादल फटने की घटनाओं ने कई राज्यों को बुरी तरह प्रभावित किया है। उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, पंजाब और दिल्ली बाढ़ और भूस्खलन से जूझ रहे हैं। अब तक सौ से ज्यादा लोगों की जान जा चुकी है। अकेले पंजाब में इस दशक की सबसे भीषण बाढ़ ने 50 से अधिक लोगों की जान ले ली है और लाखों लोग बेघर हो गए हैं। गांव डूब गए, सड़कें और पुल बह गए, खेत बर्बाद हो गए और शहरों का जीवन ठप हो गया है।

त्रासदी का गहरा असर

जब बाढ़ का पानी उतर जाएगा तो कैमरे और प्रशासन वहां से लौट आएंगे लेकिन प्रभावित लोगों की पीड़ा बरसों तक बनी रहेगी। गिरे हुए मकान, डूबे खेत, कर्ज में दबे किसान और पढ़ाई से वंचित बच्चे हमें लगातार याद दिलाएंगे कि यह महज मौसम की सामान्य घटना नहीं बल्कि एक चेतावनी है। जलवायु परिवर्तन अब भविष्य की चिंता नहीं बल्कि वर्तमान की कठोर सच्चाई है। सवाल यह है कि क्या हम इसे गंभीरता से लेकर रोकथाम की राह पकड़ेंगे या हर साल राहत और मुआवजे की रस्म अदायगी दोहराते रहेंगे।

क्यों बदल रहा है मानसून का पैटर्न

दरअसल, मानसून अब पहले जैसा नहीं रहा। कहीं बेहद कम बारिश होती है तो कहीं अचानक बादल फट जाते हैं और कुछ घंटों में महीनों का पानी बरस जाता है। हिमालय के ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, जिससे नदियों में जलप्रवाह अचानक बढ़ जाता है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे चुके हैं कि हिमालयी क्षेत्र जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा शिकार बनेगा और वर्तमान घटनाएं आने वाले भयावह समय की झलक मात्र हैं।

मानवीय त्रासदी और प्रशासनिक विफलता

इस आपदा का असर केवल भूगोल तक सीमित नहीं है बल्कि लाखों लोगों के जीवन पर पड़ा है। अपनों को खो चुके परिवारों के लिए यह आंकड़े नहीं बल्कि अधूरी कहानियां हैं। लाखों लोग राहत शिविरों में रहने को मजबूर हैं। पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों के किसानों की खड़ी फसलें डूब गईं। स्कूल बंद हैं, अस्पतालों में दवाओं की कमी है और महामारी का खतरा मंडरा रहा है।

लेकिन यह त्रासदी जितनी भीषण है, उससे भी बड़ा सवाल है कि हमारी नीति और तैयारी बार-बार क्यों विफल हो जाती है। हर साल

बाढ़ आती है और हर साल वही दृश्य दोहराए जाते हैं। दिल्ली में यमुना बार-बार खतरे के निशान से ऊपर चली जाती है क्योंकि नालों और जलनिकासी तंत्र पर अतिक्रमण हो चुका है। हिमालयी राज्यों में अंधाधुंध सड़कें, होटल और बांध बनने से पहाड़ और असुरक्षित हो गए हैं। सरकारें राहत और मुआवजे पर तो जोर देती हैं लेकिन दीर्घकालिक रोकथाम और जल प्रबंधन पर कम ध्यान देती हैं।

सही है कि यह समस्या केवल भारत की नहीं है। जलवायु संकट वैश्विक है लेकिन भारत जैसे देशों पर इसका असर कहीं ज्यादा है। हम वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में तीसरे स्थान पर हैं। उद्योग और शहरी उपभोग मॉडल प्रदूषण और उत्सर्जन को बढ़ा रहे हैं लेकिन सबसे अधिक पीड़ा गरीब और कमजोर वर्ग झेल रहा है। पहाड़ी इलाकों के छोटे किसान, मजदूर और आदिवासी इसकी सबसे बड़ी कीमत चुका रहे हैं।

समाधान की राह

समाधान असंभव नहीं है पर इसके लिए दृष्टिकोण बदलना होगा। हिमालयी राज्यों में संवेदनशील इलाकों की पहचान कर निर्माण पर रोक लगानी होगी। नदियों के किनारे फ्लड ज़ोन मैपिंग जरूरी है ताकि वहां नई आबादी बसाने से बचा जा सके। शहरी क्षेत्रों में ड्रेनेज और वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम को अनिवार्य करना होगा। मौसम पूर्वानुमान को और सटीक बनाने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग जरूरी है। आपदा प्रबंधन में स्थानीय समुदायों की भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी ताकि राहत और बचाव केवल सरकारी मशीनरी पर निर्भर न रहे। साथ ही विकसित देशों को भी अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। जलवायु परिवर्तन का सबसे बड़ा कारण वही हैं। अब समय है कि वे कार्बन उत्सर्जन में कटौती करें और विकासशील देशों को जलवायु फंडिंग उपलब्ध कराएं। भारत को भी नवीकरणीय ऊर्जा की ओर और तेजी से बढ़ना होगा और विकास मॉडल को प्रकृति के अनुकूल बनाना होगा।

जिला अमृतसर में विभिन्न पेंशन योजनाओं के अंतर्गत दी जाने वाली वित्तीय सहायता राशि की अगस्त माह की अदायगी भी बाढ़ की स्थिति को देखते हुए प्राथमिकता के आधार पर कर दी गई है। उल्लेखनीय है कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में करीब 18 हज़ार बुजुर्ग पेंशनधारक हैं।

अमृतसर (साहिल बेरी)

डिप्टी कमिश्नर अमृतसर श्रीमती साक्षी साहनी ने विभाग को इन बुजुर्गों से व्यक्तिगत रूप से संपर्क कर उनका हाल-चाल पूछने और उनकी अन्य ज़रूरतों की पूर्ति करने के निर्देश भी दिए हैं। सरकार द्वारा जिले में चल रही विभिन्न पेंशन योजनाओं के तहत कुल 2,97,208 लाभार्थियों को पिछले पाँच महीनों में लगभग 2 अरब 19 करोड़ 86 लाख 54 हज़ार रुपये की अदायगी की गई है।

डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी ने जानकारी देते हुए बताया कि अगस्त माह तक पेंशनधारकों को पेंशन की अदायगी की जा चुकी है और केवल अगस्त महीने में ही कुल 2,97,208 लाभार्थियों को 44 करोड़ 58 लाख 22 हज़ार रुपये की राशि प्रदान की गई है।

उन्होंने बताया कि पिछले पाँच महीनों में जिले में –

बुढ़ापा पेंशन लाभार्थियों को 1 अरब 49 करोड़ 64 लाख 52 हज़ार 500 रुपये,

विधवा एवं निराश्रित महिला लाभार्थियों को 40 करोड़ 96 लाख 35 हज़ार रुपये,

आश्रित बच्चों की पेंशन के लाभार्थियों को 13 करोड़ 82 लाख 50 हज़ार 500 रुपये,

और दिव्यांग पेंशन लाभार्थियों को 15 करोड़ 43 लाख 16 हज़ार रुपये की वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाई गई है।

डिप्टी कमिश्नर ने बताया कि अजनाला क्षेत्र के करीब 18 हज़ार पेंशन लाभार्थी हैं और हमारी टीमें लगातार उनसे फ़ोन के माध्यम से संपर्क कर रही हैं और उनकी माँग अनुसार राहत सामग्री भी पहुँचाई जा रही है। यह पेंशन राशि सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में जमा होती है, जिससे जहाँ उनकी परेशानियाँ कम हुई हैं वहीं उनके समय की बचत भी हो रही है।

जिला सामाजिक सुरक्षा अधिकारी श्रीमती मीनादेवी ने जानकारी देते हुए बताया कि –

पुरुष जिनकी आयु 65 वर्ष या इससे अधिक हो तथा महिलाएँ जिनकी आयु 58 वर्ष या इससे अधिक हो,

जिनकी सालाना आय सभी स्रोतों से 60 हज़ार रुपये से अधिक न हो,

और ग्रामीण क्षेत्र में 2.5 एकड़ से कम ज़मीन या शहरी क्षेत्र में 200 वर्ग मीटर से कम मकान की मालिकाना हक़ वाले योग्य लाभार्थियों को बुढ़ापा पेंशन का लाभ दिया जाता है।

इसी प्रकार 58 वर्ष से कम उम्र की विधवा एवं निराश्रित महिलाएँ, जिनकी सालाना आय 60 हज़ार रुपये से अधिक न हो, तथा 21 वर्ष से कम उम्र के ऐसे बच्चे, जो माता-पिता की मृत्यु या उनकी दिव्यांगता के कारण देखभाल से वंचित हो गए हों और जिनकी सालाना आय 60 हज़ार रुपये से कम हो, उन्हें भी वित्तीय सहायता दी जाती है।

इसके साथ ही 50 प्रतिशत या उससे अधिक दिव्यांग व्यक्ति भी इस पेंशन के पात्र हैं। प्रत्येक योग्य लाभार्थी को सरकार द्वारा 1500 रुपये प्रति माह पेंशन प्रदान की जाती है।

"शब्द" की "कीमत" तब पता चलती है जब वो ज़ुब्रान से निकल जाता है और "रिश्ते" की कीमत तब पता चलती है जब वो ज़िंदगी से निकल जाता है। "हज़ारों उलझनें "राहों" में और "कोशिशें बेहिसाब" इसी का नाम है "ज़िंदगी" चलते रहिए साहब "खुशी "से" सब्र" मिलता है और सब्र से खुशी मिलती है परन्तु फर्क बहुत बड़ा है "खुशी" थोड़े समय के लिए सब्र देती है और "सब्र" हमेशा के लिए खुशी देता है। मजबूत होने का मतलब यह नहीं कि सब कुछ सहना आ जाए मजबूत होने का असली अर्थ है जो गलत लगे वो कहना आ जाए। "सुनना" सीख लो तो "सहना" सीख जाओगे और "सहना" सीख लिया तो "रहना" सीख जाओगे। वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या जिस पथ में बिखरे शूल न हों नाविक की धैर्य परीक्षा क्या यदि धाराएं प्रतिकूल न हों!

बाबा सुखा सिंह सरहाली वालों के जत्थे ने पहला पाड़ भरा

रावी दरिया में पड़े पाड़ भरने का काम लगातार जारी डिप्टी कमिश्नर द्वारा चल रहे कामों का जायजा

अजनाला, (साहिल बेरी)

रावी दरिया का धुसी बांध, जिसके टूटने के कारण अजनाला इलाके में बाढ़ आई है, के पाड़ भरने का काम युद्ध स्तर पर शुरू किया गया है। डिप्टी कमिश्नर श्रीमती साक्षी साहनी, जो लगातार राहत कार्यों की देखरेख कर रही हैं, ने इन पाड़ भरने के कामों का भी जायजा लिया। उन्होंने बताया कि शुरुआती रिपोर्टों में 10 स्थानों से बांध टूटने की जानकारी मिली थी, लेकिन जैसे-जैसे पानी

का स्तर कम होने पर विभाग की पहुंच दरिया तक हुई, तो यह सामने आया कि रावी दरिया 20 से अधिक स्थानों से बांध तोड़कर इलाके में प्रवेश कर गया था। उन्होंने बताया कि अब पानी का स्तर घट जाने के कारण हमने वहां तक रास्ते बनाकर पाड़ भरने का काम शुरू किया है। इस कार्य में हमारा साथ कार सेवा वाले महापुरुष दे रहे हैं, जिनमें संत बाबा सुखा सिंह सरहाली कलां वाले, संत बाबा जगतार सिंह तरनतारन वाले, कार सेवा गुरु के बाग, फौज के जवान और कई अन्य संस्थाएं शामिल हैं। इसी दौरान जल संसाधन विभाग के एक्सियन श्री गुरबीर सिंह ने बताया कि माछीवाल के पास धुसी का एक पाड़, जिसे भरने का काम कार सेवा संत बाबा सुखा सिंह सरहाली कलां वालों का जत्था कर रहा था, ने रावी पर पहला पाड़ भर दिया है। लेकिन अन्य स्थानों पर अभी काम जारी है, जिसे समय लग सकता है।

इस मौके पर बाबा सुखा सिंह ने बताया कि हमने यह पाड़ भरने का काम चार दिन पहले शुरू किया था, जिसमें संगत से मिले सहयोग के कारण यह पाड़ भर लिया गया है और अब संगत द्वारा अगले पाड़ को भरने के लिए काम शुरू कर दिया गया है।

विधायक जसबीर सिंह संधू ने बारिश से क्षतिग्रस्त घरों के लिए सार, लैंटर जल्द डलवाने का किया वादा

अमृतसर 10 सितंबर (साहिल बेरी)

पिछले दिनों आई बाढ़ और भारी बारिश से पंजाब के कई हिस्सों को नुकसान पहुँचा है। अमृतसर की ग्वाल मंडी और राम नगर कॉलोनी में भी दो परिवारों के घरों की छतें गिर गईं, जिससे लोगों को भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ा।

आम आदमी पार्टी के अमृतसर पश्चिमी से विधायक डॉ. जसबीर सिंह संधू खुद प्रभावित परिवारों के घरों तक पहुँचे और उन्हें राशन सामग्री देकर हौसला बढ़ाया। इस मौके पर उन्होंने लोगों की समस्याओं को ध्यान से सुना और तुरंत कार्रवाई का भरोसा दिलाया।

डॉ. संधू ने डिप्टी कमिश्नर साक्षी साहनी से बातचीत कर सरकारी फंड से दोनों घरों में नए लैंटर डलवाने के लिए कहा। डिप्टी कमिश्नर ने भी सहमति जताते हुए आश्वासन दिया कि यह काम जल्द शुरू करवाया जाएगा।

विधायक संधू ने कहा कि आम आदमी पार्टी जनता की पार्टी है और मुश्किल वक्त में हर नागरिक के साथ खड़ी है। अंत में उन्होंने प्रभावित परिवारों को विश्वास दिलाया कि छतों का काम जल्द शुरू होगा और उन्हें फिर से सुरक्षित छत उपलब्ध करवाई जाएगी।

इस मौके पर डॉ. संधू ने इलाके के अन्य निवासियों को भी भरोसा दिलाया कि सरकार की ओर से बाढ़ और बारिश से हुए नुकसान की पूरी भरपाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों की मुश्किलों को समझती है और हर संभव मदद पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है। लोगों ने भी विधायक संधू का धन्यवाद किया और उनके प्रयासों की सराहना की।

चेयरमैन रिंटू और प्रियंका शर्मा द्वारा बाढ़ प्रभावित गांव में राहत सामग्री वितरित की गई

रिंटू ने कहा यह सेवा जारी रहेगी

अमृतसर, (साहिल बेरी) इंप्रूवमेंट ट्रस्ट अमृतसर के चेयरमैन करमजीत सिंह रिंटू और सीनियर डिप्टी मेयर प्रियंका शर्मा द्वारा रमदास के बाढ़ प्रभावित गाँवों का एक बार फिर दौरा किया और इस अवसर पर अपने साथियों और सेवा निभा रहे संत महापुरुषों के साथ मिलकर क्षतिग्रस्त घरों के परिवारों को ज़रूरी सामान उपलब्ध कराया। इस अवसर पर ज़रूरतमंदों को फोल्डिंग बेड, बिस्तर, राशन, चिकित्सा और अन्य राहत सामग्री वितरित किया गया। करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि कुछ दिन पहले अपनी टीम के साथ इन बाढ़ प्रभावित 9 गाँवों का दौरा किया था और लोगों की ज़रूरतों का एक सूची बनाई गई थी। उन्होंने कहा कि वही ज़रूरी सामान लोगों तक पहुँचाया है।

करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि यह सेवा इसी तरह जारी रहेगी और भविष्य में भी हर ज़रूरतमंद की मदद करेंगे। उन्होंने कहा कि जिन 9 गांवो का पहले निरीक्षण किया गया था, उन सभी गांवो में राहत सामग्री पहुंचाई जाएगी। उन्होंने कहा कि पंजाब इन दिनों बाढ़ की मार झेल रहा है। खेतों में खड़ी फसलें पानी में बह गई हैं, घरों की दीवारें ढह गईं। उन्होंने कहा कि इस मुश्किल की घड़ी में बाढ़ प्रभावित लोगों की मदद करना सबसे उचित कार्य है।

करमजीत सिंह रिंटू ने कहा कि पंजाब सरकार बाढ़ के कारण खेतों में हुई तबाही को भी गंभीरता से ले रही है और किसानों को जल्द ही मुआवज़ा दिया जाएगा। भगवंत मान सरकार ने बाढ़ से हुए नुकसान की भरपाई के लिए किसानों को राहत देने हेतु रकिसका खेत उसकी रेतह नीति लागू की है। यह नीति केवल बाढ़ प्रभावित खेतों पर ही लागू होगी। उन्होंने कहा कि किसी भी परिवार को अकेला नहीं छोड़ा जाएगा और पंजाब सरकार घर-घर जाकर ज़रूरी मदद पहुँचाएगी। उन्होंने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की और कहा कि पंजाब सरकार बाढ़ प्रभावित इलाकों को जल्द ही सामान्य स्थिति में लाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने विशेष गिरदावरी के आदेश जारी किए हैं ताकि बाढ़ से हुए नुकसान की तुरंत भरपाई की जा सके।

इस अवसर पर सीनियर डिप्टी मेयर अमृतसर प्रियंका शर्मा ने कहा कि बाढ़ प्रभावितों को लगातार राहत सामग्री पहुंचाई जाएगी। इस अवसर पर रितेश शर्मा, संत बाबा कुलवंत सिंह खुर्मानिआ वाले , भाई सुरिंदर सिंह अरोड़ा वीर जी, सुखबीर सिंह सोनी, राहिल खन्ना, गुरप्रीत सिंह कटारिया , अरविंद भट्टी, बॉबी काजल व अन्य लोग भी शामिल थे।

मुख्यमंत्री हेमन्त ने सपत्नीक बड़े भाई स्व० दुर्गा सोरेन को दी श्रद्धांजलि

के० के ०परिच्छा , स्टेट हेड- झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन एवं उनकी पत्नी गांडेय विधायक कल्पना सोरेन ने आज झारखंड आंदोलन के अग्रणी नेता एवं पूर्व विधायक सह अपनू बडे भाई स्व० दुर्गा सोरेन की जयंती पर नामकुम स्थित दुर्गा सोरेन स्मारक पहुंचे तथा स्व० दुर्गा सोरेन की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उन्हें शत-शत नमन किया।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने मीडिया के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए कहा कि स्व० दुर्गा सोरेन जयंती पर हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हम सभी लोग यहां एकत्रित होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूर्व विधायक स्व० दुर्गा सोरेन अलग झारखंड राज्य आंदोलन के मजबूत स्तंभ थे, उनकी भूमिका एवं योगदान को कभी भुलाया नही जा सकता है ।

विश्व सिख चैंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा बाढ़ प्रभावित इलाकों में अरदास उपरांत डॉक्टरी सहायता कैंपों की शुरुआत

अमृतसर, 10 सितंबर (साहिल बेरी)

विश्व सिख चैंबर ऑफ कॉमर्स पंजाब के मेडिकल डायरेक्टर डॉ. अमरजीत सिंह सचदेवा की अगुवाई में, ग्लोबल चेयरमैन श्री परमीत सिंह चड्ढा और उनकी दिल्ली टीम के सहयोग से, अमृतसर जिले के अजनाला क्षेत्र के बाढ़ प्रभावित इलाकों में विशेषज्ञ डॉक्टरों की देखरेख में मेडिकल कैंप कल से विभिन्न गाँवों में लगाए जाएंगे। कैंपों की शुरुआत बाढ़ प्रभावित गाँव सूफियां, चाड़पुर और छन्ना से की जाएगी।

विश्व सिख चैंबर ऑफ कॉमर्स के उद्देश्य रदवाई लंगरर के तहत जरूरतमंद मरीजों को मुफ्त दवाइयाँ दी जाएंगी। इस मुहिम को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने के लिए आज तहसील कार्यालय अजनाला में डिप्टी कमिश्नर अमृतसर श्रीमती साक्षी साहनी से मुलाकात कर प्रभावित गाँवों के बारे में दिशा-निर्देश लिए गए।

श्रीमती साक्षी साहनी ने डॉक्टरी दृष्टिकोण से सुझाई गई दवाइयों को देखकर विश्व सिख चैंबर ऑफ कॉमर्स के इस सार्थक प्रयास की सराहना की और सिविल सर्जन अजनाला की सेवाएँ लेने की सिफारिश की। इस अवसर पर विश्व सिख चैंबर ऑफ कॉमर्स के ग्लोबल चेयरमैन श्री परमीत सिंह चड्ढा, पंजाब चैप्टर के चेयरमैन श्री राजिंदर सिंह मरवाहा और अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने मानवता की सेवा में अपनी विनम्रता और सच्चे दिल से कार्य करने वाली शख्सियत श्रीमती साक्षी साहनी, डिप्टी कमिश्नर अमृतसर का हार्दिक सम्मान किया।

मेडिकल कैंपों की पूरी जानकारी डी.आई.जी. बॉर्डर रेंज श्री नानक सिंह (आई.पी.एस.) को भी दी गई। श्री नानक सिंह ने विश्व सिख चैंबर द्वारा की जा रही सेवाओं की भावपूर्ण सराहना की और पुलिस प्रशासन की ओर से पूर्ण सहयोग का भरोसा दिया।

इसके उपरांत सेवादारों की संगत ने आहलूवालिया एस्टेट्स कार्यालय में इस प्रयास की सफलता के लिए गुरुचरणों में अरदास की। यह अरदास गुरुद्वारा शहीदां साहिब के सिंह साहिबान ज्ञानी सुरजीत सिंह द्वारा की गई।

इसके बाद पूरी टीम के.आई. अस्पताल मजीठा रोड पहुँची, जहाँ अस्पताल के इंचार्ज डॉ. अमरजीत सिंह सचदेवा ने हर तरह के सहयोग का आश्वासन दिया। यहीं पर श्री परमीत सिंह चड्ढा, श्री राजिंदर सिंह मरवाहा और डॉ. अमरजीत सिंह सचदेवा की अगुवाई में पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई।

इस तैयारी में प्रिंसिपल कुलवंत सिंह अनखी, जसविंदर सिंह कोहली, डॉ. जसविंदर सिंह ढिल्लों, डॉ. संतोष सिंह, अवतार सिंह कनाडा, हरदेश दवेसर, हरप्रीत सिंह भाटिया, मनदीप सिंह, तजिंदर सिंह बॉबी बादशाह, रंजीत सिंह, डॉ. जसविंदर कौर सोहल, बीबा विपनप्रीत कौर, अमरजीत सिंह नारंग सी.ए., रुपिंदर सिंह कटारिया और अन्य गणमान्य उपस्थित रहे।

8 किलो ग्राम हेरोइन बरामदगी मामला: गुरसेवक के बयान पर पिता-पुत्र समेत चार व्यक्ति 12 किलो ग्राम हेरोइन समेत गिरफ्तार; कुल बरामदगी 20 किलो ग्राम तक पहुँची

– पाकिस्तान-आधारित स्मगलर हेरोइन और हथियारों की खेप भेजने के लिए ड्रोन का कर रहे थे उपयोग: सीपी गुरप्रीत भुल्लर

अमृतसर, 10 सितंबर (साहिल बेरी)

8.1 किलो ग्राम हेरोइन बरामदगी मामले के अगले-पिछले संबंधों पर तुरंत कार्रवाई करते हुए, कमिशनरेट पुलिस अमृतसर ने चार और नशा तस्करों को गिरफ्तार करके उनके कब्जे से 12 किलो ग्राम हेरोइन, .30 बोर पिस्तौल सहित एक मैगज़ीन बरामद की है, जिससे इस मामले में जब्त की गई कुल हेरोइन की मात्रा 20.1 किलो ग्राम तक पहुँच गई है। यह जानकारी आज यहाँ पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों की पहचान गुरभेज सिंह (50) और उसका पुत्र गुरदित्त सिंह (22), दोनों निवासी ग्राम नारला, तरनतारन; मलकीत सिंह (50) निवासी ग्राम डाल, तरनतारन और गुरजीत सिंह (29) निवासी ग्राम कोटली साका, अजनाला, अमृतसर के रूप में हुई है।

यह सफलता पंजाब पुलिस द्वारा कुख्यात नशा तस्कर सोनी सिंह उर्फ सोनी को उसके चार साथियों – गुरसेवक सिंह, विशालदीप सिंह उर्फ गोला, गुरप्रीत सिंह और अरशदीप सिंह – समेत गिरफ्तार करके हेरोइन तस्करी कार्टेल का पर्दाफाश करने के उपरांत हासिल हुई थी। पुलिस टीमों ने इनके कब्जे से पहले भी 8.1 किलो ग्राम हेरोइन बरामद की थी।

डीजीपी गौरव यादव ने कहा कि ताज़ा गिरफ्तारियों से तरनतारन और

अमृतसर के ग्रामीण क्षेत्रों में सीमा पार से चल रहे कार्टेल का एक और मजबूत गठजोड़ उजागर हुआ है। उन्होंने कहा कि सभी दोषी एक-दूसरे से और पाकिस्तान स्थित तस्करों से संपर्क करने के लिए वॉट्सएप का उपयोग कर रहे थे।

डीजीपी ने बताया कि इस मामले में आगे-पीछे संबंध स्थापित करने के लिए अन्य जांच जारी है। उन्होंने आगे कहा कि आने वाले दिनों में और गिरफ्तारियां व बरामदगियां होने की संभावना है।

इस संबंध में जानकारी देते हुए पुलिस कमिश्नर (सीपी) अमृतसर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि पूछताछ के दौरान, गिरफ्तार किए गए नशा तस्कर गुरसेवक सिंह ने खुलासा किया कि पिता-पुत्र गुरभेज सिंह और गुरदित्त सिंह, मलकीत सिंह के साथ मिलकर इस क्षेत्र में ड्रग सिंडीकेट चला रहे थे। उन्होंने बताया कि गुरभेज सिंह तरनतारन सेक्टर के सीमावर्ती क्षेत्र में तस्करी कारवाइयों को अंजाम दे रहा था और पाकिस्तान स्थित तस्करों से सीधे संपर्क बनाए रखता था।

सीपी ने कहा कि दोषी गुरभेज सिंह अंतरराष्ट्रीय सीमा के नजदीक स्थित अपने साथी मलकीत सिंह के खेतों में ड्रोन के जरिए खेपें प्राप्त कर रहा था।

उन्होंने बताया कि दोषी गुरभेज हेरोइन की खेपों को सुरक्षित रूप से छुपाने के लिए पशुओं के वाड़ों का उपयोग कर रहा था। उनके खुलासे के बाद, उनके घर में प्लास्टिक के डब्बों में बंद करके मिट्टी के टोए में रखी 10 किलो हेरोइन बरामद की गई।

सीपी गुरप्रीत भुल्लर ने कहा कि इस मामले में आगे की जांच के दौरान गुरजीत सिंह की पहचान की गई और उसे गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि उसके घर की तलाशी के दौरान 2.006 किलो हेरोइन, एक .30 बोर पिस्तौल और एक मैगजीन बरामद की गई। उन्होंने बताया कि पिस्तौल उसके बेड के गद्दे के अंदर छुपाया गया था।

इस संबंध में एफआईआर नंबर 177 दिनांक 06-09-2025 को एनडीपीएस एक्ट की धारा 21-बी, 27-ए, 21-सी और 29 के तहत अमृतसर के थाना छेहरटा में पहले ही दर्ज की जा चुकी है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023